मानवी

वर्ष 3 अंक 1

मानवी त्रैमासिक साहित्यिक ई पत्रिका

जन-मार्च 2023

कविता सिंह

नौबजवा

गजब ठण्ड है
खड़ी है नौबजवा प्लेटफार्म पर
साल की पहली सुबह
ले जाएगी इस तट से उस तट
मरघट से अमृतघट...
मैंने सोचा,
क्यों न मैं भी चल दूँ ईश्वर से मिलने

लग गयी है समय सारणी
जल्दी ही खुल जायेगी ट्रेन
लोकगीत की धुन में छुक् छुक् छुक् छुक् छुक्...

मेज पर पड़ा है आखिरी टिकट और
टिकट काउंटर पर बैठे—
कबीर गा रहे हैं
'राजा परजा जेहि रूचे, सीस देहि ले जाई'
दशकों से
मिलना चाह रहा हूँ ईश्वर से—
पर हर बार,
हर साल आड़े आ जाते हैं कबीर

खाली हाथ
लौटते हुए पटरी पर सुन रहा हूँ
दूरऽऽ...
कबीर गा रहे थे—
माया मुई न मन मुवा, मरि-मरि गया शरीर।
आसा त्रृष्णा ना मुई, यौं कहै दास कबीर॥

गणित

आसान थी गणित
आसानी से सिखा दिया गया
एक कटोरी चावल तो दो कटोरी पानी
पांच लोगों के लिए पांच मुट्ठी दाल
सिखा दिया गया
गोल गोल रोटी का डायमीटर
आसान थी गणित...

गिन कर दिये गये पैसे
कितने का दूध, कितने का बिस्कुट
लिया गया हिसाब
कितने में से कितना बचा, कितना खर्चा
अँगुलियों के पोरों पर गिना दिया
आसान थी गणित...
पर— छोटे दर्जे मे ही समझा दिया गया
'रटो जा कर इतिहास'
अकबर-बाबर, घर-टाबर...
कहा गया
गणित बड़ी कठिन चीज है
समझा दिया गया
गणित के 'बेलन' से भिन्न है बेलन का फार्मूला
दसवीं के बाद—
आँखों से ओझल हो गयी गणित
मिटा दिये गये ब्लैक बोर्ड से सारे इक्वेशन
मैथ्स का मटियामेट...
जरा सा मोटी-पतली, आड़ी-तिरछी होने पर
नापी जाती है—
रोटी की परिधि, डायमीटर और रेडियस
अब कौन बताये—
इतना गणित तो इतिहास का विषय कभी नही था...।

मानवी

प्रधान सम्पादक -कविता सिंह

सम्पादक -राजेश कुमार सिंह

****

परामर्शमण्डल -डॉ राधेश्याम तिवारी

****

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

****

manvipatrika@gmail.com

http://www.manvipatrika.co.in/

****

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

****

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेंस ,

निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद

-380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति णगर

कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार है ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा। रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है

पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक है।

पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं -9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रुप में अंतरित कर सकते हैं।

वर्ष– 3 ,अंक– 1 (जनवरी - मार्च 2023)

त्रैमासिक ई -पत्रिका

इस अंक में....

संपादक की कलम से -4

काव्य धरोहर -6

लेख /आलेख /संस्मरण

कृष्ण कुमार यादव— 7
बसन्त राघव -10
डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट -14
डॉ अरुण तिवारी गोपाल- 16
डॉ.अजय शुक्ला— 20
डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता- 25

हास्य व्यंग्य -

राजेन्द्र कुमार सिंह-28

कहानी

गोवर्धन यादव— 29
राजेन्द्र परदेसी— 32
अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह
लता हिराणी- 35(गुजराती से अनूदित)
रेखा जोशी -39 (गुजराती से अनूदित)

क़ाज़ी वाजिद सिद्दीक़ी- 41
शराफत आली खान— 43
अर्चना तिवारी -45
सतीश कुमार नारनौंद— 46
श्यामल बिहारी महतो 47-
बसन्त राघव– 50
अर्चना त्यागी- 52
नीलू चोपड़ा- 54

लघुकथा

रंजना फतेपुरकर- 49
डॉ० दलजीत कौर- 56
अर्चना तिवारी— 57

काव्य /हाइकु /ग़ज़ल

कविता सिंह -2
प्रियंका सौरभ -15
रेखा शाह आरबी-19
सुमन अग्रवाल" सागरिका-" 19
आकांक्षा यादव— 24
कंचन झा— 28
ओटेरी सेल्वा कुमार- 31
अरुण कुमार प्रसाद-42
डॉ. नलिन- 44
रामस्वरूप मूँदड़ा-51
उदय राज वर्मा उदय- 53
अनुपमा अनुश्री- 58
मीरा सिंह" मीरा-" 58
सुधा गोयल -58
डॉ.रश्मि तिवारी- 59
डॉ. लक्ष्मीकान्त शर्मा -60
केशव शरण- 60
अमित कुमार मल्ल- 61
टीकम चन्दर ढोडरिया 61-
डॉ अवधेश कुमार अवध-62
अमलेन्दु शुक्ल- 62
जितेन्द्र निर्मोही- 63
उदय किशोर साह 63
राजपाल सिंह गुलिया- 63
व्यग्र पाण्डे- 64
प्रेमचन्द ठाकुर 64
ऋषि तिवारी— 65
मलय कुमार मणि- 65
मनीष' मन-' 65
नागेन्द्र नाथ गुप्ता -65
डा. लता अग्रवाल' तुलजा- ' 66
मधु राठौर -66
डॉ. रत्ना मानिक- 67
चेतना प्रकाश' चितेरी' -67
अर्चना श्रीवास्तव' आहना'-68
सोनिया सूर्यप्रभा- 68
शर्मिला कुमारी— 69
दौलतराम प्रजापति -70
डॉ उमेश चंद्र शुक्ल- 71
आशा पांडेय ओझा- 72
विजय कुमार पुरी- 74

पुस्तक समीक्षा

डॉ.जियाउर रहमान जाफरी-73
विजय कुमार तिवारी-75
डॉ. प्रदीप उपाध्याय-79

बाल– कहानी/कविता

डॉ.सरला सिंह- 81
सीमा रंगा इंद्रा— 82
डॉ कुसुम रानी नैथानी-83
डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी— 80
भाऊराव' महंत'-84

कुछ मेरी भी....

हम सबके लिए यह गर्व का विषय है कि भारत इस बार G 20 की अध्यक्षता कर रहा है। G 20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में "भारत" लिखा है। G20 की अध्यक्षता का विषय ही भारत की उच्चतम चेतना, समग्र मानव जाति के कल्याण की सोच और अवधारणा – "वसुधैव कुटुम्बकम" या "एक पृथ्वी · एक कुटुंब · एक भविष्य" है – जो महा उपनिषद सहित अनेक ग्रंथों में लिपिबद्ध है। यह श्लोक निमन्वत है

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् ॥ **(महोपनिषद्, अध्याय ६, मंत्र ७१)**

अर्थ - यह मेरा अपना है और यह नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त (सञ्कुचित मन) वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है।

G -20 लोगों में कमाल के फूल को पृथ्वी का धरण करते हुए दिखाया गया है और हमारे राष्टीय ध्वज के तीनों रंग केसरिया, सफेद और हरे, एवं नीले रंगो का समावेश है । भारत आदि काल से ही दुनियाँ को प्रेम ,पर्यावरण सहृदयता और शांति का संदेश देता रहा है । आज कल जब मनुष्य प्रकृति का दोहन अपने फायदे के लिए ,भविष्य को ताक पर रख कर ,बिना सोचे समझे कर रहा है । ऐसे समय में G -20 थीम और लोगो की सार्थकता और भी बढ़ जाती है। वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता और अपने कर्तव्यों को जन जन में जगाने की आवश्यकता को महसूस कराता है यह थीम। यह एक स्वच्छ, हरे-भरे और उज्जवल भविष्य का निर्माण की संकल्पना पर आधरित है ,जिसका उद्देश्य समूचे मानव जाति का कल्याण एवं सही दिशा में विकास है ।

कोरोना के संक्रमण के पश्चात समूचे विश्व को पर्यावरण और हरी भरी प्रकृति की अनिवार्यता समझ में आ चुकी है , अतः पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा हम सबका कर्तव्य बन जाता है । तभी हम आने वाले पीढ़ी को स्वस्थ पीढ़ी के रूप में देख पाएंगें ।

रूस यूक्रेन के बीच युद्ध को एक वर्ष बीत चुके है। युद्ध लंबा खिचता जा रहा है, अभी भी कोई पीछे हटने को तैयार नहीं दिख रहा है। वैश्विक राजनीति एवं कूटिनीति की भेंट चढ रही है यूक्रेन की आम जनता, महिलायें और मासूम बच्चे ,लाखों की संख्या में लोग अन्य देशों में पलायन और शरण पाने को मजबूर है। आम जनता का जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका है । भविष्य अंधकारमय है । इस युद्ध के पीछे वजह कुछ भी हो, अमेरिका द्वारा नाटो की आड़ में रूस पर शिकंजा कसना हो या विश्व राजनीति पर अपनी एक छत्रता कायम करनी हो, जो भी है ,पर मेरा मानना है की युद्ध गलत है । युद्ध में पिसती तो आम जनता ही है । इससे पहले की तृतीय विश्व युद्ध की शुरुवात हो । रूस और यूक्रेन को भारत की मध्यस्थता से शांति का रास्ता निकाल लेना चाहिए । आज सम्पूर्ण विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जो ***वसुधैवकुटुम्बकम्*** की अवधारणा का न केवल प्रबल पक्षधर है बल्कि समय समय पर भारत ने अपनी इस अवधारणा का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है।

प्रत्येक देश को अपनी सीमाओं की सुरक्षा करने का पूरा अधिकार है ,और किसी भी देश के द्वारा किसी भी देश

की संप्रभुता और अखंडता पर वार करना षड्यन्त्र द्वारा उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना न केवल दुष्टता का परिचायक है बल्कि मानव सभ्यता पर लांछन है । ऐसे राष्ट्र को अन्य देशों द्वारा बॉयकाट कर देना चाहिए । सभी को यह समझना बेहद जरूरी है कि ,युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है , बल्कि यह स्वयं में एक समस्या है ।

आप सभी को 10 जनवरी 2023 की मनाए जाने वाले विश्व हिन्दी दिवस और 26 जनवरी को मनाए जाने वाली वसंत पंचमी की हार्दिक सुभामनाएं । अब इसमें कोई दो राय नहीं की हिन्दी की लोकप्रियता विश्व के अन्य देशों में फैल रही है । अब तो यूएनओ ने भी हिन्दी भाषा को आधिकारिक भाषा की स्वीकृति दे दी है। लेखकों कवियों साहित्यकारों की नई जमात तेजी से बढ़ती जा रही है । खासकर नए साहित्यिक युग में स्त्रियों की भागीदारी संख्यातमक रूप से काफी बढ़ चुकी है । जहां यह काफी सुखद है की नया साहित्य बहुतायत मात्रा में लिखा जा रहा है वहीं इस बात की चिंता भी है की ज्यादातर साहित्य लेखन में साहित्य तो है पर उसकी आत्मा गायब है , उसमें कोई नवीनता ,पठनीयता या फिर साहित्य का रस गायब है । बिना रस का साहित्य तो लुगदी साहित्य कहलाता है । ज्यादातर तो सूचनतामक साहित्य रचा जा रहा है , इसे साहित्य भी कहना उचित नहीं होगा ,बल्कि सूचना ही कहना उचित लगता है। यही वजह है लोगों की पढ़ने में रुचि कम हो रही है। साहित्य लिखना और पुस्तक छपवा कर अपने को साहित्यकार का दर्जा देना अब आम हो गया है ।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचनाओं के आदान प्रदान को गति प्रदान की है ,जहां आप अपनी बात लाखों करोड़ों लोगों तक पालक झपकते ही पहुँचा सकते है । इसका सदुपयोग और दुरपयोग दोनों ही बड़े पैमाने पर हो रहा है । अब इसका सदुपयोग हो रहा है या दुसपयोग यह मैं आप पर छोड़ता हूँ। लत किसी भी चहेज की बुरी है चाहे सोशल मीडिया ही क्यों न हो । दुख की घड़ी में एक कंधा सोशल मीडिया नहीं दे सकता बल्कि आपके अपने ही दे सकते है ,तो अपनों को न भूलिए , काम अपने ही आएंगें ।

इस बार वसंत सिर्फ तारीखों में ही आया , कब आया कब गया पता ही नहीं चला , जाड़े के बाद सीधे ही ग्रीष्म ऋतु आ गई । वसंत का पता ही नहीं चला। कोई इतना भी चुपके से आता है क्या, कि आने और जाने का पता ही न चलें। ऋतु परिवर्तन भी अब पर्वर्तित होने लगा है । कब जाड़े में गर्मी लगने लगती है तो कभी गर्मी में बरसात होने लगती है ।जैसा है जो भी है आप तो बस प्रकृति का आनंद लीजिए और होली में भेदभाव भूल कर एक दूसरे से गले मिलए रंग लगवाइए और लगाइए । ची चुपड़ करने वालों को बोलिए " बुरा न आमनो होली है"। फगुनाहट में बजते संगीत " रंग बरसे भीगे चुनर वाली" पर झूम कर नृत्य करिए। अहम को त्याग् सिर्फ और आदमी हो जाइए ।ऐसा मौका साल में सिर्फ एक ही बार आता है ।

शुभ कामनाओं सहित

बाबा नागार्जुन

तन गई रीढ़

झुकी पीठ को मिला
किसी हथेली का स्पर्श
तन गई रीढ़

महसूस हुई कन्धों को
पीछे से,
किसी नाक की सहज उष्ण निराकुल साँसें
तन गई रीढ़

कौंधी कहीं चितवन
रंग गए कहीं किसी के होठ
निगाहों के ज़रिये जादू घुसा अन्दर
तन गई रीढ़

गूँजी कहीं खिलखिलाहट
टूक-टूक होकर छितराया सन्नाटा
भर गए कर्णकुहर
तन गई रीढ़

आगे से आया
अलकों के तैलाक्त परिमल का झोंका
रग-रग में दौड़ गई बिजली
तन गई रीढ़

हरिवंशराय बच्चन

कुछ बात नई

सूरज ढल कर पच्छिम पंहुचा,
डूबा, संध्या आई, छाई,
सौ संध्या सी वह संध्या थी,
क्यों उठते-उठते सोचा था
दिन में होगी कुछ बात नई
लो दिन बीता, लो रात गई

धीमे-धीमे तारे निकले,
धीरे-धीरे नभ में फ़ैले,
सौ रजनी सी वह रजनी थी,
क्यों संध्या को यह सोचा था,
निशि में होगी कुछ बात नई,
लो दिन बीता, लो रात गई

चिडियाँ चहकी, कलियाँ महकी,
पूरब से फ़िर सूरज निकला,
जैसे होती थी, सुबह हुई,
क्यों सोते-सोते सोचा था,
होगी प्रात: कुछ बात नई,
लो दिन बीता, लो रात गई

"समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं युवा"

युवा वर्ग मानव शक्ति का सबसे प्राणवान और ऊर्जस्वी वर्ग है, जो सदैव प्रगति और विकास का अगुआ रहा है। युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं, वे उसके भावी निर्माता हैं। चाहे वह नेता या शासक के रूप में हों, चाहे डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार व कलाकार के रूप में हों। इन सभी रूपों में उनके ऊपर अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला एवम् ज्ञान की परम्पराओं को मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे ले जाने का गहरा दायित्व होता है। भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने में युवा शक्ति का सबसे बड़ा योगदान है। आज पूरी दुनिया की निगाहें युवा वर्ग पर टिकी हुई हैं। वे राष्ट्र के सबसे ऊर्जावान भाग में से एक हैं और इसलिए उनसे बहुत उम्मीदें हैं। सही मानसिकता और क्षमता के साथ युवा राष्ट्र के विकास में योगदान कर सकते हैं और इसे आगे बढ़ा सकते हैं। भारत विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों में से एक है और हमारी जनसंख्या का लगभग 65 फीसदी हिस्सा युवा हैं। हमारी जनसंख्या का 50 प्रतिशत हिस्सा 18-35 वर्ष की आयु का है। भारत में 27.5 प्रतिशत जनसंख्या 15 से 29 साल के आयुवर्ग के लोगों की है वही 41.3 प्रतिशत लोग 13 से 35 साल की उम्र के हैं। ऐसे में युवाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। अगर इन युवाओं को सही ढंग से तराशा और संवारा जाए तो वे राष्ट्रीय गौरव का एक नया इतिहास रच सकते हैं। युवा वर्ग अपनी मेघा, परिश्रम और लगन से सबको चमत्कृत कर सकते हैं और युवा शक्ति भारत को विश्व का मुकुटमणि बना सकती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि युवाओं के व्यक्तित्व का निर्माण हमारी प्राथमिकता में शामिल हो।

भारत में स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती, अर्थात 12 जनवरी को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1984 ई. को 'अन्तरराष्ट्रीय युवा वर्ष' घोषित किया था और तदनुसार भारत सरकार ने सन 1984 से ही स्वामी विवेकानन्द जयंती का दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में देशभर में मनाने का निर्णय लिया। स्वामी विवेकानंद का यह कथन युवाओं के लिए सदा से प्रेरणास्रोत रहा है -"'उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ। अपने नर-जन्म को सफल करो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।" निश्चतत: स्वामी विवेकानन्द आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। उनका जीवन दर्शन और आदर्श भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत है। उन्होंने हमें कुछ ऐसी वस्तु दी है जो हममें अपनी उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त परम्परा के प्रति एक प्रकार का अभिमान जगा देती है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया, " चिंतन करो, चिंता नहीं, नए विचारों को जन्म दो।" तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो, अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और उसे सार्वभौमिक पहचान दिलवायी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था- "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को

कृष्ण कुमार यादव

पोस्टमास्टर जनरल,

वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002

भारत सरकार में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। प्रशासन के साथ -साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी चर्चित नाम। विभिन्न विधाओं में अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, 2005), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह, 2006 व 2007), 'India Post : 150 Glorious Years' (2006), 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा', 'जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह, 2012) व '16 आने 16 लोग' (निबंध-संग्रह, 2014)।

पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

युवा शब्द अपने आप में ही उर्जा और आन्दोलन का प्रतीक है। एक राष्ट्र जो ऊर्जावान, जिज्ञासु और मेहनती युवकों से भरा है और उन्हें काम के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने में सक्षम हो वह अपने विकास के लिए मजबूत आधार बनाता है। युवा वह दीवार है जिस पर राष्ट्र की भावी छतों को सम्हालने का दायित्व है। भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी करीब 65% प्रतिशत है जो कि विश्व के अन्य देशों के मुकाबले काफी है। इस युवा शक्ति का सम्पूर्ण दोहन सुनिश्चित करने की चुनौती इस समय सबसे बड़ी है। हमारे देश में कई प्रतिभाशाली और मेहनतकश युवा हैं जिन्होंने देश को गर्व की अनुभूति कराई है। भारत में युवा पीढ़ी उत्साहित और नई चीजें सीखने के लिए उत्सुक हैं। चाहे वह विज्ञान, प्रौद्योगिकी या खेल का क्षेत्र हो - हमारे देश के युवा हर क्षेत्र में श्रेष्ठ हैं।

अगर देश में युवाओं की मानसिकता सही है और उनके नवोदित प्रतिभाओं को प्रेरित किया गया तो वे निश्चित रूप से समाज के लिए अच्छा काम करेंगे। उचित ज्ञान और सही दृष्टिकोण के साथ वे प्रौद्योगिकी, विज्ञान, चिकित्सा, खेल और अन्य सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। यह न केवल उन्हें व्यक्तिगत रूप से और पेशेवर रूप में विकसित करेगा बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास और प्रगति के लिए भी योगदान देगा। दूसरी ओर यदि देश के युवा शिक्षित नहीं हैं या बेरोजगार हैं तो यह अपराध को जन्म देगा।

वस्तुतः इसके पीछे जहाँ एक ओर अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों से दूर हटना है, वहीं दूसरी तरफ हमारी शिक्षा व्यवस्था का भी दोष है। इन सब के बीच आज का युवा अपने को असुरक्षित महसूस करता है, फलस्वरूप वह शार्टकट तरीकों से लम्बी दूरी की दौड़ लगाना चाहता है। जीवन के सारे मूल्यों के उपर उसे 'अर्थ' भारी नजर आता है। इसके अलावा समाज में नायकों के बदलते प्रतिमान ने भी युवाओं के भटकाव में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिल्मी परदे और अपराध की दुनिया के नायकों की भांति वह रातों -रात उस शोहरत और मंजिल को पा लेना चाहता है, जो सिर्फ एक मृगण्तृष्णा है। ऐसे में एक तो उम्र का दोष, उस पर व्यवस्था की विसंगतियाँ, सार्वजनिक जीवन में आदर्श नेतृत्व का अभाव एवम् नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन ये सारी बातें मिलकर युवाओं को कुण्ठाग्रस्त एवम् भटकाव की ओर ले जाती हैं, नतीजन-अपराध, शोषण, आतंकवाद, अशिक्षा, बेरोजगारी एवम् भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं।

भारतीय संस्कृति ने समग्र विश्व को धर्म, कर्म, त्याग, ज्ञान, सदाचार और मानवता की भावना सिखाई है। सामाजिक मूल्यों के रक्षार्थ वर्णाश्रम व्यवस्था, संयुक्त परिवार, पुरूषार्थ एवम् गुरूकुल प्रणाली की नींव रखी। भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता समन्वय व सौहार्द्र रहा है, जबकि अन्य संस्कृतियाँ आत्म केन्द्रित रही हैं। इसी कारण भारतीय दर्शन आत्मदर्शन के साथ-साथ परमात्मा दर्शन की भी मीमांसा करते हैं। अंग्रेजी शासन व्यवस्था एवम् उसके पश्चात हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण और अन्ततः पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने भारतीय संस्कृति पर काफी प्रभाव डाला। निश्चिततः इन सबका असर युवा वर्ग पर भी पड़ा है। आर्थिक उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के बाद तो युवा वर्ग के विचार-व्यवहार में काफी तेजी से परिवर्तन आया है। पूँजीवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाजारी लाभ की अन्धी दौड़ और उपभोक्तावादी विचारधारा के अन्धानुकरण ने उसे ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा और शार्टकट के गर्त में धकेल दिया। कभी विद्या, श्रम, चरित्रबल और व्यवहारिकता को सफलता के मानदण्ड माना जाता था पर आज सफलता की परिभाषा ही बदल गयी है। आज का युवा अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से परे सिर्फ आर्थिक उत्तरदायित्वों की ही चिन्ता करता है।

युवाओं को प्रभावित करने में फिल्मी दुनिया और विज्ञापनों का काफी बड़ा हाथ रहा है पर इनके सकारात्मक तत्वों की बजाय नकारात्मक तत्वों ने ही युवाओं को ज्यादा प्रभावित किया है। फिल्मी परदे पर हिंसा, बलात्कार, प्रणय दृश्य, यौन-उच्छश्रृंखलता एवम् रातों-रात अमीर बनने के दृश्यों को देखकर आज का युवा उसी जिन्दगी को वास्तविक रूप में जीना चाहता है। वास्तव में परदे का नायक आज के युवा की कुण्ठाओं का विस्फोट है। पर युवा वर्ग यह नहीं सोचता कि परदे की दुनिया वास्तविक नहीं हो सकती, परदे पर अच्छा काम करने वाला नायक वास्तविक जिन्दगी में खलनायक भी हो सकता है।

शिक्षा व्यक्ति के भौतिक और नैतिक दोनों प्रकार के विकास का आधार तैयार करती है। यह हमारी संवेदनाओं और अवधारणाओं को परिष्कृत बनाती है, जिससे मन-मस्तिष्क को स्वतंत्रता और उनके बीच तालमेल स्थापित करती है और वैज्ञानिक दृष्टि के विकास में सहायता मिलती है। शिक्षा ज्ञान, बुद्धि और कौशल को समृद्ध बनाती है। शिक्षा व्यवसाय नहीं संस्कार है, पर जब हम आज की शिक्षा व्यवस्था देखते हैं, तो यह व्यवसाय ही ज्यादा ही नजर आती है। शिक्षण संस्थाएं, युवाओं के मस्तिष्क के लिए नए क्षितिजों के द्वार खोलने और उन्हें आज के जीवन संदर्भों की चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने के लिए तैयार करती हैं। युवा वर्ग स्कूल व कॉलेजों के माध्यम से ही दुनिया को देखने की नजर पाता है, पर शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का अभाव होने के कारण वह न तो उपयोगी प्रतीत होती है व न ही युवा वर्ग इसमें कोई खास रूचि लेता है। अतः शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने का गोरखधंधा बन कर रह गयी है। पहले शिक्षा के प्रसार को सरस्वती की पूजा समझा जाता था, फिर जीवन मूल्य, फिर किताबी और अन्ततः इसका सीधा सरोकार मात्र रोजगार से जुड़ गया है। ऐसे में शिक्षा की व्यवहारिक उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगने लगा है। शिक्षा संस्थानों में प्रवेश का उद्देश्य डिग्री लेकर अहम् सन्तुष्टि, मनोरंजन, नये सम्बन्ध बनाना और चुनाव लड़ना रह गया है। छात्र संघों की राजनीति ने कॉलेजों में स्वस्थ वातावरण बनाने के बजाय महौल को दूषित ही किया है, जिससे अपराधों में बढ़ोत्तरी हुई है। ऐसे में युवा वर्ग की सक्रियता हिंसात्मक कार्यों, उपद्रवों, हड़तालों, अपराधों और अनुशासनहीनता के रूप में ही दिखाई देती है। शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अभाव ने युवाओं को नैतिक मूल्यों के सरेआम उल्लंघन की ओर अग्रसर किया है, मसलन-मादक द्रव्यों व धूम्रपान की आदतें, यौन-शुचिता का अभाव, कॉलेज को विद्या स्थल की बजाय फैशन ग्राउण्ड की शरणस्थली बना दिया है। दुर्भाग्य कई बार शिक्षक भी प्रभावी रूप में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में असफल रहे हैं।

आज के युवा को सबसे ज्यादा राजनीति ने प्रभावित किया है पर राजनीति भी आज पदों की दौड़ तक ही सीमित रह गयी है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने

जब मताधिकर की उम्र अट्ठारह वर्ष की थी तो उन्होंने 'इक्कीसवीं सदी युवाओं की' आह्वान के साथ की थी पर राजनीति के शीर्ष पर बैठे नेताओं ने युवाओं का उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में किया। विचारधारा के अनुयायियों की बजाय वैयक्तिक प्रतिबद्धता को महत्ता दी गयी। स्वतन्त्रता से पूर्व जहाँ राजनीति देश प्रेम और कर्त्तव्य बोध से प्रेरित थी, वहीं स्वतन्त्रता बाद चुनाव लड़ने, अपराधियों और भ्रष्टाचारियों को सरंक्षण देने और महत्वपूर्ण पद हथियाने का जरिया बन गयी। राजनीतिज्ञों ने भी युवा कुण्ठा को उभारकर उनका अपने पक्ष में इस्तेमाल किया और भविष्य के अच्छे सब्जबाग दिखाकर उनका शोषण किया। विभिन्न राजनैतिक दलों के युवा संगठन भी शोशेबाजी तक ही सीमित रह गये हैं। ऐसे में अवसरवाद की राजनीति ने युवाओं को हिंसा भड़काने, हड़ताल व प्रदर्शनों में आगे करके उनकी भावनाओं को भड़काने और स्वंय सत्ता पर काबिज होकर युवा पीढ़ी को गुमराह किया है।

आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है। किसी दौर में युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, नेता जी सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, डॉ. अम्बेडकर जैसे लोग या उनके आसपास के सफल व्यक्ति, वैज्ञानिक और शिक्षक रहे। पर आज के युवाओं के आदर्श वही हैं, जो शार्टकट के माध्यम से ऊँचाइयों पर पहुँच जाते हैं। फिल्मी अभिनेता, अभिनेत्रियाँ, विश्व-सुन्दरियाँ, भ्रष्ट अधिकारी, अपराध जगत के डॉन, उद्योगपति और राजनीतिज्ञ लोग उनके आदर्श बन गये हैं। नतीजन, अपनी संस्कृति के प्रतिमानों और उद्यमशीलता को भूलकर रातों-रात ग्लैमर की चकाचौंध में वे शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार बिना उद्यम के कोई ठोस कार्य भी नहीं हो सकता। कभी देश की आजादी में युवाओं ने अहम् भूमिका निभाई और जरूरत पड़ने पर नेतृत्व भी किया। कभी स्वामी विवेकानन्द जैसे व्यक्तित्व ने युवा कर्मठता का ज्ञान दिया तो सन् 1977 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर देश के युवा एक होकर सड़कों पर निकल आये पर आज वही युवा अपनी आन्तरिक शक्ति को भूलकर चन्द लोगों के हाथों का खिलौना बन गये हैं।

आज का युवा संक्रमण काल से गुजर रहा है। वह अपने बलबूते आगे तो बढ़ना चाहता है, पर परिस्थितियाँ और समाज उसका साथ नहीं देते। चाहे वह राजनीति हो, फिल्म व मीडिया जगत हो, शिक्षा हो, उच्च नेतृत्व हो- हर किसी ने उसे सुखद जीवन के सब्ज-बाग दिखाये और फिर उसको भँवर में छोड़ दिया। ऐसे में पीढ़ियों के बीच जनरेशन गैप भी बढ़ा है। समाज की कथनी-करनी में भी जमीन आसमान का अन्तर है। एक तरफ वह सभी को डिग्रीधारी देखना चाहता है, पर उन सभी हेतु रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाता, नतीजन- निर्धनता, मँहगाई, भ्रष्टाचार इन सभी की मार सबसे पहले युवाओं पर पड़ती है। इसी प्रकार व्यावहारिक जगत में आरक्षण, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद और कुर्सी लालसा जैसी चीजों ने युवा हृदय को झकझोर दिया है। जब वह देखता है कि योग्यता और ईमानदारी से कार्य सम्भव नहीं, तो कुण्ठाग्रस्त होकर गलत रास्तों पर चल पड़ता है। निश्चितत: ऐसे में ही समाज के दुश्मन उनकी भावनाओं को भड़काकर व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह के लिए प्रेरित करते हैं, फलत: अपराध और आतंकवाद का जन्म होता है। युवाओं को मताधिकार तो दे दिया गया है पर उच्च पदों पर पहुँचने और निर्णय लेने के उनके स्वप्न को दमित करके उनका इस्तेमाल नेताओं द्वारा सिर्फ अपने स्वार्थ में किया जा रहा है।

इंटरनेट और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव एवं विभिन्न गैजेट्स ने भी युवाओं की जीवन शैली और जीवन के प्रति समग्र रवैया में परिवर्तन किया है। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने भले ही एक क्लिक पर दुनिया तक पहुँच आसान कर दी हो, पर युवा इसमें इतने तल्लीन रहते हैं कि वे यह भूल गए हैं कि इसके बाहर भी एक जीवन है। एक ही घर में बैठे पारिवारिक सदस्य एक दूसरे से रियल टाइम में नहीं बल्कि व्हाट्सएप के माध्यम से संवाद कर रहे हैं। फेक न्यूज और फॉरवर्डेड मैसेज के मकड़जाल में युवा इस बात का निर्णय ही नहीं कर पाते कि क्या सही या गलत है ? किताबों और पत्र-पत्रिकाओं की बजाय गूगल पर हर कुछ ढूंढने को तत्पर युवा वर्ग अपनी मौलिकता और शोधपरक सोच को कुंद करता नज़र आ रहा है। निश्चितत: इन सबका उसके भौतिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर भी गहरा असर पड़ रहा है।

भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। आज हम व्यापक भूमंडलीकरण तथा गहन प्रतिस्पर्धा के कठिन दौर से गुजर रहे हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी का तेज गति से विस्तार हो रहा है। यह क्षेत्र लगातार अंतर आयामी, बहुआयामी और बहुद्देशीय होता जा रहा है। भारत के पास उन बड़ी शक्तियों में शामिल होने की पूरी क्षमता है, जिनकी 21वीं सदी में प्रमुख भूमिका होगी। ऐसे में सारी दुनिया भारत की युवा शक्ति पर टकटकी लगाए हुए हैं। युवाओं ने आरम्भ से ही इस देश के आन्दोलनों में रचनात्मक भूमिका निभाई है- चाहे वह समाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक हो। युवा व्यवहार मूलत: एक शैक्षणिक, सामाजिक, संरचनात्मक और मूल्यपरक समस्या है जिसके लिए राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक सभी कारक जिम्मेदार हैं। ऐसे में समाज के अन्य वर्गों को भी जिम्मेदारियों का अहसास होना चाहिए, सिर्फ युवाओं को दोष देने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि सवाल सिर्फ युवा शक्ति के भविष्य का नहीं है, वरन् अपनी संस्कृति, सभ्यता, मूल्यों, कला एवम् ज्ञान की परम्पराओं को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का भी है।

"व्यंग्य और उसके पर्याय हरिशंकर परसाई"

सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार राधाकृष्ण व्यंग्य को ताना साहित्य कहते हैं। सामान्य अर्थ में व्यंग्य का अर्थ ताना मारना या फिर आलोचना करना ही समझ में आता है। व्यंग्य की व्युत्पत्ति 'वि' उपसर्ग पूर्वक अञ्ज् धातु में ण्यत् प्रत्यय लगने से हुई है। व्यंग्य प्रत्यक्ष, निंदा ,भर्त्सना या गालीगलौज के स्तर से इतर उदात्त संवेदनाओं से भरा होता है। व्यंग्य अर्थगत भंगिमाओं की व्यंजक अभिव्यक्ति है, जो अपने चुटीले ,रोचक और हास्य-विनोद के व्दारा सामाजिक,राजनीतिक, धार्मिक विकृतियों पर प्रहार करके जीवन को सही दिशा प्रदान करती है।

व्यंग्य को जन्म देने वाली मानसिकता को समझें तो लगता है समाज और जीवन की विसंगतियों के आत्मबोध से व्यंग्य का जन्म होता है,अर्थात व्यंग्य विसंगतियों की उपज होता है। वह विसंगतियों का प्रतिकार या प्रतिशोध करता है। उसके प्रतिशोध में नश्तर की तरह चुभन होती है । व्यंग्य का स्वरूप कठोर होता है। किसी भी प्रकार की विसंगति या विकृति कष्ट कारक और विनाशकारी तो होती ही है। अतः व्यंग्यकार इसी से उबरने-उबारने के लिए प्रतिशोध का सहारा लेकर व्यंग्य करता है। वह साहसी और निर्भीक होता है, क्योंकि कायर और डरपोक कभी व्यंग्य रचना कर ही नहीं सकते। हरिशंकर परसाई ने स्वयं के लिए लिखा भी है " मैंने तय किया - परसाई, डरो किसी से मत। डरे कि मरे। सीने को ऊपर कड़ा कर लो, भीतर तुम जो भी हो। ज़िम्मेदारी को गैर ज़िम्मेदारी के साथ निभाओ।" इसके बावजूद वह भावुक कल्पनाशील और बौध्दिक स्तर पर अनुशासित होता है,सत्ता, धर्म या व्यक्ति पर प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी कहना जोखिम भरा होता है इसलिए व्यंग्यकार अपरोक्ष या आत्मालोचना का सहारा लेता है। वह उनके बीच रहकर विसंगतियों पर प्रहार करता है। उसकी संवेदनाएं, अन्तर्मुखी , तलस्पर्शी दिव्य दृष्टि सांकेतिक गूढ़ार्थ या व्यंजक रुप में उन विसंगतियों पर गहरी चोट करती है, जिससे वह असंतुष्ट होता है, या फिर घृणा करता है। व्यंग्य घृणा की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

व्यंग्य को परिभाषित करते हुए अंग्रेज कवि "पोप "लिखते हैं " व्यंग्य हथियार होता है ,जिससे सब डरते हैं। व्यंग्य सुधार के काम आता है ,सीख के काम आ सकता है ,ध्वंस के काम आ सकता है और हृदय परिवर्तन एवं बोध के बदलाव के भी काम आ सकता है। "पाश्चात्य विव्दान मेरीडिथ लिखते हैं " व्यंग्यकार एक सामाजिक ठेकेदार है। बहुधा वह एक समाजिक सफाई करने वाला है। जिसका जी की मान्यता है कि " जितना व्यापक परिवेश होगा , जितनी गहरी विसंगति होगी और जितनी तिलमिला देने वाली अभिव्यक्ति होगी, व्यंग्य रचना उतनी ही सार्थक होगी।" उनका यह भी मानना था कि व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।" दरअसल व्यंग्य आलोच्य विषय का समीक्ष्य,बौध्दिक स्तर है। वह उन विद्रूपताओं पर इस तरह से कुठाराघात करता है कि पाठक में गहरी प्रतिक्रिया हो, जिससे वह उन सामाजिक विसंगतियों से जूझने और उनसे

बसन्त राघव
पंचवटी नगर,मकान नं. 30
कृषि फार्म रोड,बोईरदादर, रायगढ़,
छत्तीसगढ़,basantsao52@gmail.com मो.नं.8319939396

मुक्ति पाने के लिए विचार करे और प्रतिकार के लिए प्रेरित हो। व्यंग्य व्यक्ति और समाज का मार्गदर्शक है और व्यंग्यकार शाश्वत मूल्यों का रक्षक। समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता आदि कुप्रवृत्तियों का वह पर्दाफाश करता है।

व्यंग्य के लिए जरूरी तत्व है विषय सामग्री, बौध्दिक वैदग्ध्य, प्रहार का ढंग याने कि शिल्प और सामाजिक मूल्यबोध। भाव भंगिमा और भाषिक भंगिमा व्यंग्य के दो गुण हैं। जिनका समन्वय ही उसकी शिल्पगत वैशिष्ट्य है। व्यंग्यकार की प्रतिभा उसकी मौलिक सूक्ष्म व्यंजना या अर्थ झंकृति की प्रस्तुति पर निर्भर करती है, यही उसकी बौद्धिक वैदग्ध्य भी है। अपनी नवीनतम उद्भावनाओं और व्यंजनाओं के व्दारा वह सामान्य से सामान्य विषयों को भी जानदार, रोचक बना देता है। उसके हास्य - विनोद, उसकी आत्मपरक शैली के कारण वह पाठकों को आत्मीय आनंद देता है। एक व्यंग्यकार की यही सफलता है। उसकी दृष्टि यह भी तय करे

कि व्यंग्य का प्रभाव क्षेत्र एवं मारक दूरी कितनी विस्तृत है। व्यंग्यकार यर्थाथवादी समाजशास्त्री के रूप में जीवन दर्शन को परिभाषित करता है। उसकी प्रतिबद्धता सामाजिक, मानवीय मूल्यों के लिए होती है।

भारतीय साहित्य में व्यंग्य की शुरुआत कबीर की रचनाओं से होती है,लेकिन उसका स्वरूप पद्य था ,गद्य के रूप में व्यंग्य की शुरुआत भारतेन्दु युग में हुई। उस जमाने में ज्यादातर व्यंग्य प्रहसन ,और स्त्रोत शैली में ही लिखे गये। उस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र के अलावा प्रतापनारायण मिश्र ,बालकृष्ण भट्ट ,राधाचरण गोस्वामी गणनीय थे।" अंधेरे नगरी चौपट राजा "उस समय की एक कालजयी श्रेष्ठ व्यंग्य नाटिका है। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में भी सामाजिक कुरीतियों के लिए व्यंग्य किया गया है। उस युग में प्रेमचंद सहित अमृतलाल नागर , यशपाल और भगवतीचरण वर्मा की रचनाओं में उच्चकोटि के व्यंग्य मिलते हैं। द्विवेदी युग में भी व्यंग्यकार हुए ,जिनमें महावीर प्रसाद द्विवेदी , और बालमुकुंद गुप्त आदि ने व्यंग्य विधा पर सृजन किया है। वैसे तो हास्य और व्यंग्य दोनों ही भिन्न विधाएँ है ,हास्य बहिर्मुखी है तो व्यंग्य अन्तमुर्खी । लेकिन भारतेंदु हरिश्चंद्र और आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की रचनाओं में हास्य और व्यंग्य दोनों का समन्वय उत्कर्ष पर है , दोनों में हास्य और व्यंग्य के संयुक्त बिम्ब के दर्शन होते हैं। व्यंग्य के लिए भावना ,कल्पना , चिंतन की अतिशयता के साथ जटिल मानिसक अवस्था जरूरी है। यही कारण है कि निराला व्यंग्य कर सके।निराला ,"कुकुरमुत्ता"द्वारा लिखित बिल्लेसुर बकरिहा ,नये पत्ते इस युग की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि व्यंग्य कोई स्वतंत्र विधा नहीं है वह तो सहज प्रवृत्ति है ,जो अभिव्यक्ति की विविध विधाओं में मसलन उपन्यास ,नाटक ,लेख,कविता, निबंध आदि के रूप में लिखा जाता रहा है। लेकिन कुछ विद्वान इसे विशिष्ट विधा के रूप में स्वीकृति देते हैं। यह भी देखा गया है कि अस्सी प्रतिशत व्यंग्य निबंधात्मक हैं ,और निबंध विधा में ही व्यंग्यकारों को पहचान मिली। इसका प्रमुख कारण व्यंग्य लेखन जितना निबंधों में सफल रहा है ,उतना अन्य विधाओं में नहीं। निबंध मेंव्यंग्यकारों कोआत्माभिव्यक्ति की जितनी आजादी मिलती है,अन्य विधाओं में नहीं ,व्यंग्यकार स्वतंत्रतापूर्वक अनेक संदर्भों का समायोजन कर आलोच्य विषय पर सम्यक प्रहार करता है। निबंध सृजनधर्मिता की ललित अभिव्यक्ति है।

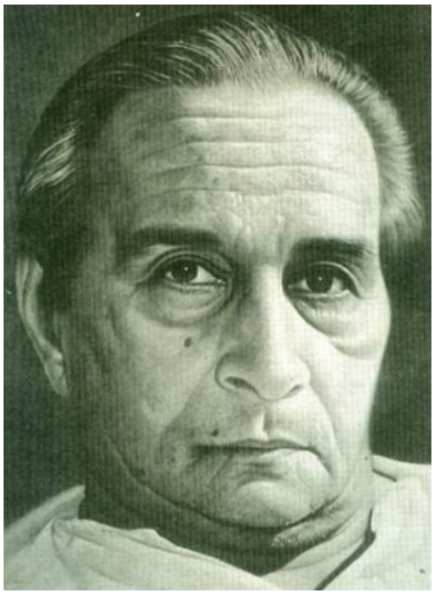

इस दृष्टि से देखें तो व्यंग्य साहित्य का सम्पूर्ण विकास आधुनिक युग में ही हुआ है जिसमें सर्वप्रथम , हरिशंकर परसाईश्रीलाल शुक्ल ,शरद जोशी ,रवींद्र त्यागी,लतीफ घोंघी ,बरसाने लाल चतुर्वेदी ,,डॉ सुर्दशन मजीठिया प्रभृति व्यंग्यकार प्रमुख हैं । श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी और हरिशंकर परसाई ने गद्य के व्यंग्य को शिखर पर पहुंचाया। दूसरी पीढ़ी में स्व. लक्ष्मीकांत वैष्णव, कृष्ण चराटे, ,रमेश बक्षी, गोपाल चतुर्वेदी,डॉ सूर्यबाला, डॉ रमाशंकर श्रीवास्तव, पूर्णसिंह डबास,डॉ. सरोजिनी प्रीतम ,डॉ. प्रेम जनमेजय,डॉ. मधुसूदन पाटिल, डॉ. रामनारायण सिंह, बलवीर त्यागी, भवानी शंकर व्यास, हरिकृष्ण दासगुप्त, धनश्याम अग्रवाल, एवं सतीश कुमार शेखड़ी प्रमुख हैं। नई पीढ़ी के व्यंग्यकारों में सूर्यकांत नागर, डा.महेंद्रकुमार ठाकुर , गिरीश पंकज और विनोद साव, विनोद शंकर शुक्ल, डॉ.संतोष दीक्षित, महावीर अग्रवाल, शेरजंग जांगली दीपक प्रभृति का व्यंग्य के क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान रहा है। 21वीं सदी में डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी का नाम भी प्रमुख व्यंग्यकारों में समादृत है। वर्तमान समय में उपन्यास विधा में व्यंग्य नहीं लिखा जा रहा है। व्यंग्य नाटक लिखने वालों में डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी, और श्याम मोहन अस्थाना हैं। शरद जोशी एवं श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं में जहां गंभीरता है तो वहीं दूसरी ओर हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में व्यापकता, और आक्रमकता की तेज धार है । लतीफ घोंघी की व्यंग्य रचनाएं कहीं गुदगुदाती है तो कहीं नश्तर सी चुभोती हैं। व्यंग्य को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए हास्य और व्यंग्य का उत्तम समायोजन जरूरी है। जिससे श्रेष्ठ लोकप्रिय व्यंग्य की सृजन हो सके, एवं मध्यमार्ग ग्राह्य हो। व्यंग्य को ज्यादा उग्र ,आक्रामक और हिंसक नहीं होना चाहिए,व्यंग्यकार को व्यंग्य में सरसता, सोद्देश्यता,सजीवता, रुचिता की दृष्टि से भावबोध पैदा करना चाहिए। जो कि हरिशंकर परसाई के ज्यादातर लघुकाय, आत्मपरक, विश्लेषणात्मक व्यंग्य निबंधों में देखने को मिलता है। हरिशंकर परसाई जी ने जन साधारण से लेकर बड़े बड़े राजनेता, बुध्दिजीवी, भगवान, महात्मा,पण्डे, पुजारी, मठाधीश, साहूकार, पूँजीपति, प्रशासक, अध्यापक, डॉक्टर, वकील, थानेदार, प्रेमी-प्रेमिका, युध्दशास्त्री, अवसरवादी विविध चरित्रों को व्यंग्य के माध्यम से पाठकों के समक्ष अनावृत किया। हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य उद्देश्य प्रधान होते हैं। उनकी रचनाएं पाठकों को सोचने- विचारने को बाध्य करती हैं। हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता आदि कुप्रवृत्तियों पर कुठाराघात करते हैं उनकी रचनाएं हमें अपने समय के यथार्थ से रूबरू करातीं हैं। उनके व्यंग्य पाठकों को आदर्श जीवन दृष्टि बोध से समृद्ध करते हैं।

उनकी सृजन धर्मिता कबीर की परम्परा को आगे बढाती है । एक प्रकार से कहें तो कबीर की परम्परा

को ही हरिशंकर परसाई ने अपनी गद्य विधा में विकसित किया है,उसे आगे बढ़ाया है। निसंदेह हरिशंकर परसाई हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं।

उन्होंने देश के आम लोगों की आकांक्षाओं ,असफलताओं एवं जीवन संघर्षों को बहुत करीब से देखा और जिया था। विद्रूप स्थितियों से उनकी नाराजगी तब अधिक उग्र और आक्रामक हो जाती है जब आदमी आदमी न होकर चालाकी और धूर्तता का पर्याय हो जाए। नेता , अवसरवादिता एवं मध्यवर्गीय लोग चरित्रहीनता के शिकार होने लगे । उस समय उनकी बौद्धिक संपदा संवेदनशील व्यक्तित्व , ज्ञान और अनुभव से सम्पृक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीवन के प्रत्येक अन्तर्विरोध का प्रतिकार करने लगता है। सामाजिक विद्रूपताओं और इनके भीतरी कारणों को हरिशंकर परसाई जी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं से पाठकों को समझाने की कोशिश की है। हरिशंकर परसाई जी का व्यंग्य समाज से उपजी विसंगतियों की गहरी पडताल करता है। उन्होंने ही व्यंग्य को एक स्वत्रंत विधा के रुप में स्थापित करने में अपनी कालजयी भूमिका निभाई। उनके व्यंग्य निबंधों में चिंतन की गहनता देखी जा सकती है। एक निबंधकार के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुत विशाल और महान था। यह अलग बात है कि शरद जोशी एवं हरिशंकर परसाई दोनों ही अपने कई व्यंग्यों में उस समय के इतिहास को तो रेखांकित करते हैं परन्तु व्यंग्यात्मक प्रभाव नहीं छोड पाते । जाहिर है कि व्यंग्य इतिहास नहीं होता ।

उनका व्यंग्य हमें अपना सा इसलिए भी लगता है, क्योंकि वे स्वयं पर व्यंग्य करने से भी नहीं चूकते। वे स्वयं में एक साधारण आदमी की जिंदगी को अनुभव करते हैं। वे व्यंग्य को इतने शिद्दत और आत्मीय ढंग से लिखते हैं कि पाठक को अपनेपन का अहसास होने लगता है। उन्हें पढ़ते हुए महसूस होता है जैसे वे सामने ही खड़े हो, सभी प्रश्नों के जवाबों से लैस। उनकी भाषा शैली में एक खास किस्म का अपनापन है। ऐसे व्यंग्यकार विरले ही मिलते हैं। उनकी भाषा शैली व्यंग्य के लिए सर्वथा अनुकूल थी। सरल शब्दों में लिखना उन्हें पसंद था। उनकी रचनाओं में मुहावरों, कहावतों के साथ साथ बोलचाल से लेकर, तत्सम, अंग्रेजी शब्दों को भी स्थान दिया गया है। उनके व्यंग्य में लक्षणा और व्यंजना का कुशल प्रयोग देखते ही बनता है। उनके वाक्य लघुकाय हुआ करते हैं। संस्कृत व उर्दू शब्दों का भी उन्होंने प्रचुरता के साथ प्रयोग किया है।

हरिशंकर परसाई जी के मार्मिक एवं तर्कसंगत व्यंग्य अपने अन्य समकालीन व्यंग्यकारों से ज्यादा वैज्ञानिक और ज्यादा व्यावहारिक जान पड़ते हैं। परसाई जी का व्यंग्य इतने विशद और वृहद हैं कि उसे दो चार लेखों में ,मूल्यांकित कर पाना संभव ही नहींउसके लिए तो दर्जनों शोध भी कम है। वे हिंदी व्यंग्य के पर्याय बन गए हैं। उनकी कालजयी रचनाएं युगों - युगों तक प्रासंगिक बनी रहेंगीं। उन्होंने निबंध ,कहानी ,संस्मरण उपन्यास जैसे विविध विधाओं पर खूब लिखा। लेकिन सर्वाधिक सफलता उन्हें निबंध विधा में ही मिली है। उनके व्यंग्यों में अपार संभावनाएं निहित हैं । शरद जोशी ने अपने विरोधियों के लिए व्यंग्य लिखना शुरू किया था और हरिशंकर परसाई ने जन हित के लिए। वे कबीर की तरह " कबिरा खड़ा बाज़ार में लिए लुकाटी हाथ। जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ।" के हिमायती थे। उन्होंने समकालीन सत्ता और नेताओं से लेकर धर्म के मठाधीशों एवं मौजूदा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है जिसके परिणामों से वे भलिभांति परिचित होने के बावजूद वे जोखिम उठाने से नहीं चूकते । वे व्यंग्य को हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं। जिससे उनके विरोधी चारों खाने चित हो जाएं। हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्र में फैली हुई विकृतियों और कारगुजारियों पर बहुत ही सरलता और सहजता के साथ छिद्रान्वेषण और उस पर कटाक्ष किया गया है। धर्म, जातीयता, रूढ़ परम्पराओं से उन्हें चिढ़ है। देश में व्याप्त भुखमरी, अपराध, शोषण, अनाचार, अकाल, बाढ़, युवा आक्रोश, जन-आंदोलन, साम्प्रदायिक दंगों धार्मिक उन्माद जैसी घटनाओं , कलाकारो , बुध्दिजीवियों के दोहरे चरित्रों संघीय-पंथी सोच की सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से व्याख्या या विवेचना ही नहीं करते बल्कि धर्म, समाज, राजनीति में विद्यमान विसंगतियों को जन्म देने वाले कारकों की तह तक जाते हैं और उन तमाम विसंगतियों से मुक्ति के मार्ग तलाशते हैं।

सुनो "दैनिक अमर उजाला में प्रकाशित व्यंग्य पर सिक्खों का प्रदर्शन "भाई साधोहुआ था ।अकाली आन्दोलन की विसंगतिपूर्ण भूमिका पर टिप्पणी के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित दो युवाओं ने 21 जून 1973के दिन उनके निवास स्थान में उन पर आक्रमण कर दिया था। इस आक्रमण के बाद हरिशंकर परसाई जी के 24 25-जून को स्थानीय समाचार-पत्रों में" मेरा लिखना सार्थक हो गया "वक्तव्य प्रकाशित हुआ था। इन घटनाओं से यह मालूम होता है कि एक व्यंग्यकार के रूप में उनका लेखन कितना सार्थक और प्रभावशाली हुआ करता था। वे साहसी भी कम न थे। लिखते समय परिणामों की उन्हें चिंता नहीं रहती थी। सन् 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल के समय में उन्होंने सत्ता पक्ष के विरुद्ध लिखा था। उनकी निर्भीकता और व्यंग्य की धार से प्रभावित होकर विश्वनाथ उपाध्याय ने लिखा था:-

'मुझे हरिशंकर परसाई की लंबी पतली काया बंदूक की नली सी लगती है जिसमें से व्यंग्य भन्नाता हुआ निकलता है और जनशत्रु को छार-छार कर देता है.'।

" उनकी व्यंग्य रचनाओ मेंपगडंडियों का जमाना " दो दर्जन से भी अधिक चुटीले व्यंग्य निबंधों का संग्रह है। संगृहीत निबंध पूर्व में' ज्ञानोदय' ,'धर्मयुग 'एवं' नई कहानियाँ 'जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। , "सदाचार का " तावीजवैष्णव की फिसलन" ,"विकलांग श्रद्धा का दौर 'जिसके लिए 1982 में उन्हें साहित्य

अकादमी पुरस्कार दिया गया था। "प्रेमचंद के फटे जूते", " ऐसा भी सोचा जाता है", "तुलसीदास चंदन घिसैं ",'हँसते हैं रोते हैं " , "हम इक उम्र से ँवाकिफ हैं", "जैसे उनके दिन फिरे ", "भोलाराम का जीव", हिंदी की श्रेष्ठ व्यंग्य कहानी संग्रह है। जिसमें सरकारी कार्यालयों और लालफीताशाही , ब्यूरोक्रेसी पर जमकर प्रहार किया गया है. उपन्यास "रानी नागफनी की कहानी ", "तट की खोज", "ज्वाला और जल", संस्मरण 'तिरछी रेखाएँ ", व्यंग्य निबंध संग्रहों में "तब की बात और थी" ,सदाचार की ताबीज", "भूत के पाँव पीछे " , "बेईमानी की परत ", "अपनी अपनी बीमारी ", "माटी कहे कुम्हार से ", तिरछी निगाहें", "काग भगोड़ा", "आवारा भीड़ के खतरे ", 'शिकायत मुझे भी है" , "उखड़े खंभे" , 'बस की यात्रा" , "परछाई रचनावली" इत्यादि प्रमुख हैं । हिंदी के सभी ख्यात पत्र पत्रिकाओं में उनके स्तंभ काफी चर्चित रहे। जिनमें से कुछ प्रमुख स्तंभ इस प्रकार हैः- 'नई दुनिया' में 'सुनो भई साधो'; 'नई कहानियाँ' में 'पाँचवाँ कालम', और 'उलझी - उलझी'; 'कल्पना' में 'और अंत में' , "माजरा क्या है" " मेरे समकालीन" प्रमुख हैं। उनकी व्यंग्य रचनाएं धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान जैसी श्रेष्ठ पत्रिकाओं में भी निरन्तर छपतीं थीं। कुछ वर्षों तक उन्होंने "वसुधा" पत्रिका का भी संपादन कार्य किया। बाद में वित्तीय संकट के कारण वसुधा पत्रिका बंद हो गई थी।

प्रश्नात्मक शैली में लिखी गई व्यंग्य रचनाओं में हरिशंकर परसाई जी पहले तो प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। उनके प्रश्न पाठक के मस्तिष्क को भीतर से झकझोर देते हैं । प्रश्नात्मक शैली में लिखा गया" पूछिए परछाई से "देशबंधु में उनका एक कालम निकलता था ,जिसमें वे पाठकों के प्रश्नों का जवाब दिया करते थे। वह कालम भी काफी लोकप्रिय हुआ करता था। हरिशंकर परसाई जी ने अपनी कुछेक व्यंग्यों में विवेचनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है । जहां भाषा गंभीर और संस्कृतनिष्ठ है। उदाहरण के लिए "निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है । मनुष्य अपनी हीनता से दबता है । वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है । उसके अहं की इससे तुष्टि होती है"। हरिशंकर परसाई जी ने अपने समय के वर्ग चरित्र को नये प्रतीकों में गढ़ा।" एक मध्यवर्गीय कुत्ता "प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया व्यंग्य है। मध्यवर्ग से आया हुआ बुध्दिजीवी वास्तव में सुविधा भोगी , अंहकारी और पाखंडी होता है। वह अपने अतीत के वर्ग को पहचानने से इंकार करता है , उल्टे उन पर रौब झाड़ने से बाज़ नहीं आता। प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया यह व्यंग्य अत्यधिक पैनी और प्रभावशाली है। मध्यवर्गीय कुत्ता उन तमाम मध्यवर्गीय बुध्दिजीवियों के दोगलेपन का प्रतिनिधित्व करता है। तिलस्म शैली के व्यंग्य के कथांशों में रहस्य ,कल्पना एवं विचित्र घटनाओं की अतिशयता होती है। हरिशंकर परसाई ने अतियथार्थ को रोमांचक और प्रभावशाली बनाने के लिए तिलस्म शैली का प्रयोग किया है।" सदाचार का ',का ताबीजभेड़ और भेड़िये' ,बैताल की छब्बीसवीं कथा , 'सत्ताईसवीं कथा ,अठ्ठाईसवी कथा , हरिशंकर परसाई जी की तिलस्म शैली में लिखी गई श्रेष्ठ रचनाएं हैं। सम्वाद या नाटकीय कथा शैली में एकांकी की हल्की झलक होती है। हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्यों में सम्वादों की भरमार है। इसके वर्णात्मक स्थल को रंगमंचीय स्वरूप दे दे,तो इसे रंगमंच में खेला जा सकता है। इप्टा के व्दारा हरिशंकर परसाई के नाटकीय कथा शैली में लिखी गई" अकाल उत्सव" ,"रामसिंह की ट्रेनिंग" ,"इन्सपेक्टर मातादीन चांद ,"जैसी व्यंग्य रचनाओं को नुक्कड़ नाटकों में सफलतापूर्वक खेला भी गया है। समानांतर कथा शैली का सर्वप्रथम प्रयोग हरिशंकर परसाई ने अपनी लघु व्यंग्य उपन्यास" रानी केतकी की कहानी "में किया था। इस शैली में व्यंग्यकार किसी पूर्व गंभीर रचना के आधार पर उसकी ध्वनि ,अर्थवत्ता के प्रभाव को ग्रहण कर समसामयिक मूल्यों ,घटनाओं के अनुरूप उसे पुनः सृजित करता है। सूत्रात्मक शैली में वाक्य छोटे किंतु अपने आप में सारगर्भित होते हैं। कहें तो गागर में सागर भरना कहावत इस शैली की विशेषता है।

परसाई जी के निबन्ध "निन्दा रस" में प्रयुक्त सूत्र वाक्य का कुछ उदाहरण देखिए:-1 "हाय री किस्मत !यह मालगुजार तो बैल के अलावा कुछ सोच ही नहीं सकता"। 2 • कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं । ईष्या - द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है।, 3. पण्डित जी मन्त्रियों को गमले में लगाते हैं।, 4. विप्रों के पल्ले दो गुण बचे है- भोज और धूर्तता-सो भाई हम तो इन्हीं गुणों की रक्षा करते हैं। भावानात्मक शैली में चिन्तन गौण और भावना प्रबल होती है। हरिशंकर परसाई जीवन की कटु अतियथार्थ की अभिव्यक्ति में इसी शैली का प्रयोग करते हैं। इस तरह के व्यंग्यों में उनकी भाषा सरल, व्यावहारिक, प्रवहमान होती है और वाक्य छोटे होते हैं । "पहला सफेद बाल" से एक उदाहरण:- " अपना कोई पुत्र नहीं। होता तो मुश्किल में पड़ जाते। क्या देते?...."।

(परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के जमानी ग्राम में हुआ था, और मृत्यु 10 अगस्त 1995, जबलपुर, मध्य प्रदेश में हुई थी। उस समय उनकी आयु 72 वर्ष की थी। हरिशंकर परसाई जी के साहित्यिक योगदानों के लिये उन्हें रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ने डी.लिट् की मानद उपाधि से नवाजा था। मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के व्दारा सन् 1978 में उन्हें "भवभूति सम्मान" दिया गया था। सन् 1986 में उन्हें"साहित्य अकादमी" पुरस्कार दिया गया था एवं सन् 1984 में उन्हें मध्य प्रदेश शासन द्वारा "शिखर सम्मान" से सम्मानित किया गया। निश्चय ही हिंदी व्यंग्य साहित्य में उनका युगांतरकारी अग्रणी स्थान अक्षुण्य बना रहेगा।)

****

"ऋतुओं में मैं ऋतुराज वसंत हूँ"

हर मौसम पहले अपने पदचाप से आहट देता है फिर पास आकर दरवाजे को खटखटाता है। इसके बाद ही हमारी तंद्रा टूटती है कि शिशिर की कड़ी ठंडक मुस्कुराते हुए गुलाबी हो जाती है। इस तरह शरमाते हुए वसंत आता है। गुनगुनाता हुआ वसंत। खेत-खलियान, मेढें, पगडंडियाँ सब पिताम्बर धारण कर लेते हैं। हरे खेत पीला दुपट्टा ओढ़ लेते हैं और पुरवा की हवा और उड़ता पीला आंचल धरा का श्रृंगार देख नभ भी नव नवेले नीले अवतार में आ जाता है। नभ और धरा इस सृष्टि के सबसे पुरातन प्रेमी हैं। उनका प्रेम निष्छल, निष्कपट और इतना अपनापन लिए होता है कि वे जहाँ दृष्टि घुमाओ वहीं वे एक दूसरे को आलिंगन करते, मिलते दिखाई देते हैं लेकिन वास्तव में उनका मिलन कभी भी नहीं हुआ और होगा भी नहीं। दोनों को यह पता है फिर भी वह प्रेम सनातन बरकरार है। प्रेम ऐसा ही होना चाहिये, इतना सघन और साथ में इतना विरल भी। एक नग्मा अनायास होठों पर होता है, जब प्यार करे कोई तो देखे केवल मन। वसंत और बाकी सब रितुएँ इस प्रेम की गवाह ही नहीं हैं बल्कि इस धरा की सहेलियाँ हैं। धरा, ग्रीष्म में जब रजस्वला होती है तो नभ सावन बनकर बारिश कर उसे रिझाता है और शरदोत्सव की चाँदनी में अमृत बरसाता है, हेमंत में बीज बोता है, शिशिर में अलाव के सामने कसमे खाता है और वसंत में जाकर धरा की कोख लहलहा जाती है। मातृत्व चारों ओर उमड़ पड़ता है। वसंत धरती का वात्सल्य ही है और नभ पिता की छत्र-छाया में यह पल्लवित होकर होली के सप्तरंग में सराबोर होते हुए यह नवजात किलकारी मारते हुए अक्षय तृतीया पर अभय होकर जनमानस में बिखर जाता है।

कहते हैं आम वसंत में ही बौराते हैं। यह वसंत ही है जो आम को भी खास में बदलता है। इतना बदलता है कि वे बौराने लगते हैं। जब भी कोई बौराए, खुशियों से पागल हो जाए तो समझ लेना चाहिये कि उसे वह सब प्राप्त हो गया जो उसकी आकांक्षा थी। निर्धन को धन, दृष्टिहीन को नयनसुख, प्रेमी को प्रेम, हलचल को सुकून, जीवन को अर्थ, प्यासे को पानी जैसे न जाने कितने अनगिनत युख है जिसकी सर्वत्र दरकार है। इनके मिलन को ही बौराना कहते हैं। वसंत इसी मिलन का नाम है। कहते हैं इसी मिलन को सार्थक करने के लिए देवी सरस्वती ने जन्म लिया और वसंत को चुना। 'तमसो मां ज्यातिर्गमय' उस अज्ञान के तमस से ज्ञान की ज्योति को सिर्फ देवी ही दूर कर सकती है। यह स्त्रीतत्व का सर्वश्रेष्ठ लक्षण है कि वे ही तमस को हराने के लिए ज्योति को अपने गर्भ में स्थान देती है और समय आने पर ज्ञान की ज्योति का जन्म होता है। वसंत इस जन्म को सहलाता है। दाई बनकर सेवा में लग जाता है। जब मां सरस्वती का ज्ञान किलकारी मारता है तो उत्तरायण में आए सूर्य को भी नतमस्तक होकर विनम्र हो जाना पड़ता है। पतझड़ में गिर रहे पत्ते अपने पालक पेड़ों के समीप ही गिर कर आगामी बरखा के साथ मिलकर उर्वरक बन कर अपने पालकों का ऋण उतार रहे होते हैं और साथ में किसलयों को संदेश भी दे रहे होते हैं कि इस ऋण से कभी उऋण नहीं होना है। वसंत ऐसा माहौल बना देता है कि खुशी, ज्ञान, मान, सम्मान और प्रकृति का गान सब एक साथ पल्लवित होते हैं। मां सरस्वती के लाड़ का पीला आंचल इसलिए भी जरूरी है क्योंकि वसंत का संकल्प कामदेव ने लिया था। ज्ञान के अभाव में काम भी वासना में बदल जाता है। कामातुर व्यक्ति ही इस सृष्टि के कण-कण में व्याप्त शिव तत्व को भी अपने रंग में रंगने का प्रयास करता है लेकिन शिव तो शिव ठहरे। कामदेव को अपनी कारस्तानी के लिए शिव के कोप का भाजन तो बनना ही पड़ेगा। यहाँ भी स्त्री शक्ति ही कामदेव को बचाती है, उनकी भार्या रति। रति का ही प्रताप था कि कामदेव को श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने जैसा पुण्य प्राप्त होता है। यह सब वसंत के सानिध्य में ही होता है। इसलिए श्यामवर्ण कृष्ण को भी

डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट

उज्जैन, मध्यप्रदेश

संप्रति- शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, रतलाम में अध्यापन। उपकार प्रकाशन से पंचायती राज पर पुरस्तक, विश्व बुक्स से युवाओं पर पुस्तक, छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम में कक्षा 12 वीं की अर्थशास्त्र पर पुस्तक।

वासंती पीताम्बर प्रिय है। इसलिए उन्होंने गीता में भी कहा है, "ऋतुनां कुसुमाकरः" रितुओं में मैं वसंत हूँ। इसके अलावा भी जब स्वयं शिव को आभास हुआ कि कामदेव का कृत्य सेवा का पर्याय था तभी उन्होंने अपना हिस्सा बना लिया। उन्होंने भाव रूप में कामदेव को प्रकृति, जीवों में बसने का वरदान प्रदान किया। इसी संदर्भ में कहा गया है-

योवनं स्त्री च पुष्पाणि सुवासानि महामतेः।
गानं मधुरश्चैव मृदुलाण्डजशब्दकः।।
उद्यानानि वसन्तश्च सुवासाश्चन्दनादयः।
संगों विषयसक्तानां नराणां गुह्यदर्शनम् ।।
वायुमर्दः सुवाश्च वस्त्राण्यपि नवानि वै।
भूषणादिकमेवं ते देहा नाना कृता मया।।

इसका अर्थ है कि कामदेव स्त्री के यौवन, आँखों में, सुदर फूल, फूलों के रस में, खुबसूरत बाग-बगीचों में, पक्षियों की मीठी आवाज, छुपे अंगों, मनोहर स्थानों, नए कपड़ों, गहनों आदि में बसते हैं। उनके संपर्क से कामनाएँ जन्म लेती हैं।
ऋग्वेद में वसंत की देवी भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है- प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु। सरस्वती को वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। पुरातन युग में, इस दिन राजा सामंतों के साथ हाथी पर बैठकर नगर का भ्रमण करते हुए देवालय पहुँचते थे। वहाँ विधिपूर्वक कामदेव की पूजा की जाती थी और देवताओं पर अन्न की बालियाँ चढ़ाई जाती थीं। इतिहास की विभिन्न घटनाओं से भी जुड़ा है। वसंत पंचमी का दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है। उन्होंने विदेशी हमलावर मोहम्मद गौरी को सोलह बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए, तो मोहम्मद ग़ोरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया और उनकी आंखें फोड़ दीं। सिखों के लिए में बसंत पंचमी के दिन का बहुत महत्वपूर्ण है। मान्यता है कि बसंत पंचमी के दिन सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी का विवाह हुआ था। राजा भोज का जन्मदिवस वसंत पंचमी को ही आता हैं। राजा भोज इस दिन एक बड़ा उत्सव करवाते थे जिसमें पूरी प्रजा के लिए एक बड़ा प्रीतिभोज रखा जाता था जो चालीस दिन तक चलता था।

वसंत ने सभी के मन को मोहा है यहाँ तक कि कवि के मन को भी। मृत्छकटिकम में निर्धन नायक चारूदत्त और गणिका वसंतसेना के प्रेम का आविर्भाव है तो नाटककार छुद्रक ने वसंतोत्सव का अकल्पनीय वर्णन मिलता है। महाकवि कालीदास ने अपने काव्य ग्रंथ ऋतुसंहार में वसंत का कालजयी वर्णन किया है। यहाँ तक कि संस्कृत में एक चौदह वर्ण वाले छंद का नाम भी वसंततिलका है। रीतिकालीन कवि लिखते है कि फागणमास बसंत रित, सुण भोगी भरतार। परदेसां री चाकरी, जावै कवण गमार।। नायिका कहती है कि एक तो फागुन का महीना और वसंत ऋतु चल रही है और ऐसे मौसम में कौन गंवार चाकरी करने जाएगा। भारत के शास्त्रीय संगीत के छः रागों में एक राग है "वसंत राग"। अमृतसर के हरमंदिर साहिब में वसंत पंचमी के दिन से वसंत राग क़ा गायन शुरू होता है जो वैसाखी के दिन तक चलता है| वैसाखी के दिन ही सिखों के दशम गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। हर ऋतु अपने आप में परिपूर्ण होती है और उल्लास के लिए होती है। वसंत की अपनी ठसक है जो सभी को प्रेम से सराबोर करती है। ईषावास्य उपनिषद में कहा गया है कि पूर्णता में से कुछ ले लिया जाय तो भी वह पूर्ण ही रहती है वैसे ही वसंत में भी अनंत प्रेम, उल्लास है जितना हम लेते जाएँगे और बाँटते जाएंगे उतना सत्व विकसित होता जाएगा। वसंत भी संत का वरिष्ठ है। सच्चे संत उल्लास के साथ ज्ञान का प्रचार, वितरण करते हैं, करूणा रखते है, जग का कल्याण करते हैं, यह सब वसंत का भी गुण है।

****

काव्य

प्रियंका सौरभ
हिसार (हरियाणा)

नए साल के पँख पर

बीत गया ये साल तो, देकर सुख-दुःख मीत !
क्या पता? क्या है बुना ? नई भोर ने गीत !!

माफ़ करे सब गलतियां, होकर मन के मीत !
मिटे सभी की वेदना, जुड़े प्यार की रीत !!

जो खोया वो सोचकर, होना नहीं उदास !
जब तक साँसे हैं मिली, रख खुशियों की आस !!

खिली-खिली हो जिंदगी, महक उठे अरमान !
आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान !!

छँटे कुहासा मौन का, निखरे मन का रूप !
सब रिश्तों में खिल उठे, अपनेपन की धूप !!

दर्द दुखों का अंत हो, विपदाएं हो दूर !
कोई भी न हो कहीं, रोने को मजबूर !!

छेड़ रही है प्यार की, मीठी-मीठी तान !
नए साल के पँख पर, खुशबू भरे उड़ान !!

लेख

“रागात्मक चेतना के सौन्दर्य बोध के विरल काव्यशास्त्री- हमारे अवध बिहारी श्रीवास्तव”

गीत का जन्म ही परि- पुर जन की जिस रागात्मक चेतना की लयात्मक बिम्ब धर्मा अभिव्यक्ति है, उसकी मर्यादा भी वास्तव में सदा सर्वथा किसी अवध बिहारी से ही निभी है। बनारस जनपद के अनेई गाँव में भरे भादों 1 अगस्त 1935 को बंशीधर लाल और सुखदेई देवी के कला संस्कृति जीवी आंगन में ,चौथी संतति के रूप में ,आधुनिक अवध संस्कृति के 'औध्' का जन्म उत्तर छायावादी गीत काव्यधारा के उस भाव योगी के जन्म का पर्याय बनता है, जिस पर अब तक युग समीक्षक ,आलोचक की अपर्याप्त व आंशिक दृष्टि ही पड़ सकी है ।अज्ञेय की शब्द चेतना ,अनुभूतियों के संदर्भ में भुक्त संवेदना के वैशिष्ट्य,हृदय के परिष्कृत लोक व्यवहार की जो विश्वस्त मूल पीठिका मानती है, इसके गहरे और मौलिक हस्ताक्षर अवध बिहारी जी की कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा की प्रामाणिक उपजीव्यता बनती है ।वैष्णव धर्मी सहनशीला मातृत्व, अलौकिक लोक कला प्रेमी पिताजी व चाचा जी का आशीष प्रदा प्रोत्साहन धर्मा-संरक्षण, एक संयुक्त परिवार की अभिरुचियों की विविधा के सभी भाई, बहनों, भावजों,भतीजों,सन्ततियों के व्यवहारिक और जीवन साथी के आत्मिक संबंधों के एक साथ निर्वहन ने भुक्त अभावों को वैदिकीय-घर-संस्कृति का अपार्थिव उत्सव धर्मी ऋषिवत दार्शनिक, वह शब्द चितेरा बना दिया, जिसकी नींव में इंटरमीडिएट करते हुए ,कालेज के प्रधानाचार्य और गीत सृजन में 'नव' के लिए समर्पित -'वंशी और मादल' के सृष्टा के आशीष और प्रेरणायें निबद्ध थीं।

यह 2013 की कोई एक अक्टूबरी, गुलाबी ठंड भरी शाम थी,जिसमें अपने कानपुर के 'मैं महायुद्ध'-फेम स्मृति शेष श्याम नारायण वर्मा जी के पनकी आवास विकास स्थित कालोनी की छत पर हुई एक गोष्ठी में पहली बार हमें अवध बिहारी दद्दू जी को पहली बार सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उन दिनों मुझ पर कैलाश गौतम जी की 'कविता लौट पड़ी' का सम्मोहन- जो उसी सप्ताह खरीदी उस पुस्तक के पढ़ने पर मढ़ा था, उन्हें सुनकर भंग हुआ ।गोष्ठी के समापन पर मुझे मिला पुरस्कार- 'मंडी चले कबीर' की प्रति के रूप में, जिसे उसी रात लौट कर आने पर पढ़ना शुरू किया तो रात दो ढाई बजे तक पत्नी के लाख अनुखयाने पर भी खत्म करके ही सो पाया। तुलना तो मैं क्या कर पाता, पर, पता नहीं क्यों अगले दिन 'कविता लौट पड़ी' के कैलाश गौतम जी व 'मंडी चले कबीर' के अवध बिहारी जी मेरी पठनीयता की चुनौतियों के ओर- छोर बनाते-बिगारते रहे ।पहली बार मुझे साहित्य की असाहित्यिक नीतियों के अतिव्यापन की बानगी से लगा,कि उत्तरछायावादी काव्यधारा में नई कविता/ समकालीन कविता की पक्षधर एकेडमी ने ईमानदार सच्चे गीत कारों पर वाजिब और जरूरी ध्यान जानबूझकर नहीं दिया है और बाद के छांदस/ नवगीत की समर्थ पैरोकारों ने भी प्रायः स्वयं को छोड़कर सभी को अपनी दृष्टिगत सीमा में ही बांधकर देखना-दिखाना चाहा है ।अवध बिहारी जी जैसी अखिल विश्व और समस्त सृष्टि व्यापी संवेद्य प्रातिभ-अभिव्यक्ति चेतना को जब भाव पक्ष धरता

डॉ अरुण तिवारी गोपाल

117/69N तुलसीनगर
काकादेव कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश 208025
8299455530
aruntiwarigopal@gmail.com

में इंद्र जी 'सूरदास के जहाज के पंछी' कह देते हैं या उनके माटी से जुड़े भुक्त रचन को प्रेमचंदीय अभिव्यक्ति के सृष्टा 'जैसा परिसीमन दिया जाता है -तो स्पष्ट कहने का मन करता है कि विवेच्य कवि प्रेमचंद से आशिखा जुदा हैं। प्रेमचंद जी - कथित प्रगतिशीलता और वामपंथ के अघोषित लंबरदार और शिकार भी हैं, पर अवध जी के यहां गँवई संस्कार दयनीय नहीं उत्सव धर्मी अधिक रहे हैं ।उनका गीतकार नवता के चक्कर में विसंगतियों में आक्रोश जीवी तो हुआ है, पर गतियों में मूल उत्सव धर्मी होना उनसे नहीं छूटा।प्रेमचंद और प्रेमचंदोत्तर प्रभाव की समीक्षाधारा ने विश्व प्रगतिवाद की दृष्टि में भारत की जो दयनीय तस्वीर बनाई है- वहाँ विश्व भौतिकवादी यह भूल गए हैं कि भौतिक अभाव हमारी भावपूर्ण संस्कृति पर प्रभावी कभी नहीं रही। भाषा,भुक्त संवेदना ,संप्रेषणीयता के सहज अभिव्यक्ति कर्ता अवध बिहारी जी का काव्य शिल्प भी अद्भुत समन्वयवादी है ।उनका सृजन (भले ही देर से प्रकाशन में आया-हल्दी के छापे 1993,मंडी चले

कबीर 2012,बस्ती के भीतर 2017) नयी कविता और नवगीत के संक्रान्ति काल से लेकर नवगीत के वर्तमान तक आया है,इसलिए दोनों ही यहां हैं ।गीत- नवगीत के अंतर और साम्य के मध्य, आवश्यक लोक-संवेद्य का प्रातिभ-अभिव्यंजन का राग, उनके काव्य का प्राणधर्म है।आज गीत-नवगीत के अंतर पूरने और नई कविता और नवगीत के मध्य के सभी यक्ष प्रश्नों के उत्तर देता उनका सृजन जो इंगित करता है उसमें विरोध के शमन की ही तो चेष्टा है। काश! इस शिवत्व को नई कविता के समकालीन नामवर समालोचकों को यह सब देखने का अवसर निकालना आता तो काव्य साहित्य और उसकी समीक्षा-समालोचना और उसके विकास में ऐसी आत्महंता टाँग-घसीटी को कुछ तो शर्म आती। अवध बिहारी जी का कथ्य-विन्यस्त,बिम्बों का रचाव, अलक्ष्य पूर्ण लक्ष्य ध्वनन,और अभिव्यंजना में अटूट लयात्मकता है और उनके सृजन के औचित्य यथार्थवादी-समकालीन वैदिक भावभूमि के अथ से इति तक संकल्प जीवी हैं ।नवगीत के अथ के ठाकुर भाइयों के अतिशय प्रिय, समकालीन रचनाकारों के परम आत्मीय और बाद की पीढ़ी के लिए आशीषदायी स्नेहिल औदार्य-औदात्त के सगे दद्दू- अवध बिहारी जी की अजातशत्रु रागात्मक चेतना का संश्लिष्ट जादू उनके सृजन में ओर-छोर है- तभी तो देर से आए पहले संग्रह 'हल्दी के छापे' की भूमिका में लोक और माटी को समर्पित 'वंशी और मादल' के सृष्टा और उनके सृजन-प्रेरक ,ठाकुर प्रसाद सिंह जी लिखते हैं-' हिंदी के नए गीतों की सबसे बड़ी पहचान उनकी अतिशय अंतरंगता ही तो है और अंतरंगता भी कैसी कि कहीं भी आरोपित न लगे। छायावादी कवियों की अशरीरी वायवीयता सारी कोशिशों के बाद भी स्पष्ट नहीं होती और उन्हें पूरी तरह जानना शेष रह जाता है। यही दूरी नए गीतों ने मिटाई। अत्यंत साधारण होकर कविता लिखी जा सके वही नए गीत कविता की सबसे बड़ी कसौटी है ।कवि अवध बिहारी श्रीवास्तव के काव्य संग्रह 'हल्दी के छापे' की कविताओं की अंतरंगता ने मुझे इन्हीं संदर्भों की गहराई से छुआ है ।'

अवध बिहारी जी का तो वैशिष्ट्य ही अंतरंग-रागात्मक चेतना की सहज अभिव्यक्ति है ,और वह अनन्य है और वही उनकी सिद्धि प्रसिद्ध की मूल कारक। पर यहां जब कुछ विद्वान, उसे नॉस्टैल्जिया में परिसीमित करने लगते हैं तो उनकी उस मतिभ्रम पर तरस आता है ।उनके यहां जिया हुआ गांव-घर का छूटा हुआ वैभव नहीं है,वरन वह उस युग की पिछड़ी हुई तस्वीर है ,और प्रसाद जी की तरह जिये भोगों के छूट जाने की कसक नहीं है, बल्कि तत्कालीन जी गई संघर्षशीलता की जो चित्रावलियाँ हैं वह न तो नानॉस्टेल्जिया हैं ,न भुक्त त्रासदी की प्रेमचंदीय-छद्म प्रगतिशीलता में दिखाई गयी दयनीयता,वरन वहां उस अभावों में संघर्ष जीवी भावों की वैदिकीय-उत्सवधर्मिता है, देखें-' बदल गया है सब कुछ लेकिन चेतन में अवचेतन में/ डंक चुभोते ही रहते हैं पाई पाई वाले दिन/ संगमरमरी फर्श अचानक होती हाथ लिपी अँगनाई /उजले पाँवों में दिखती है मां बापू की फटी बिवाई/ जाड़े के दिन कच्चे रास्ते पाँवों में कंकड़ चुभ जाना/ दिन बीते पर उन रास्तों तक बंद नहीं मन का हो आना/ जाने कब रोशनदानों से कैसे दबे पांव आकर /सिल्क लिहाफों में घुस जाते फटी रजाई वाले दिन/-'मंडी चले कबीर' से।

इसी तरह से--' वैसे तो माटी माटी है मेरे बाबा वाला वह घर ।' 'हल्दी के छापे'से की स्मृति के साथ ही जब उन्हें स्वयं भान है कि --'कितने मोहक थे माटी के सम्मोहन मुझको याद अभी/ पत्थर की नगरी आए हैं हमको भी पत्थर होना है/' तभी तो उनकी संवेद्य प्रातिभ- सजगता, गांव कस्बे के बदले चरित्र को --'मैं बरगद के पास गया था छाया लेने /पर बरगद ने मुझसे मेरी छाया ले ली /" को भी जानते हैं और धुआँ होते सपनों की नगरीय-बीहड़ता के विद्रूप चित्र भी पहचानते हैं---'देखें निकल रही हैं फटी कमीज़ें , बड़ी दाढ़ियाँ/ फिर कल जैसी शाम हुई है/ बंदर के बच्चे सी बैठी /हर कांधे पर एक उदासी/ कितनीपीड़ा बो जाती है/ होठों पर की हंसी जरा सी /"

छद्म प्रगतिशीलता की पूंजीवादी हड़प के बाजारवाद और नगरीय त्रासदी की भी नब्ज टटोलने वाले, वैश्विक संदर्भ तक आते हुए भी वो विवश कबीर की पात्रता में ही व्यंग चित्र उकेरते हैं ,विदेशी बहुपठ-बिम्बों में नकल नहीं उकेरते, देखें - 'कपड़ा बुनकर थैला लेकर मंडी चले कबीर/ मांस देखकर यहां कबीरों पर मंडराती चील/ तैर नहीं सकते आगे है शैवालों की झील/ कोई नहीं तिजोरी खोले होती जाती शाम /उन्हें पता है कब बेचेंगे औने पौने दाम/ ' मंडी चले कबीर'

बदलते समय की त्रासदी ,स्वार्थवत्ता, संकीर्णता,नैराश्य, ठगन आदि की अभिव्यक्ति जिस तरह से घर आंगन के लोक बिम्बों में अवध जी के यहां उतरी हैं वैसी अन्यत्र प्रायः दुर्लभ है। देखें एक मोह भंग की अभिव्यक्ति--' घर परिवार बेटियां बेटे/ इनमें अपनी उम्र खपा दी/ अब तो मन उदास होता है/ कोई काम नहीं आता है /मेरे खून पसीने पर हैं/ कब्जे सबके अपने-अपने/ मुझे पुराने सोफे जैसा /आंगन तक सरकाया सब ने /पत्थर पत्थर पानी खोजा/ प्यासे रहकर जिन्हें पिलाया/ दो बूंदों की खातिर उसने /मुझ को सबसे अधिक रुलाया/"

प्रेम और नारी काव्य संसार की सर्वाधिक प्रिय विषय व वस्तुविधान रही है। गीत सृष्टि का तो एक बड़ा हिस्सा इन्हीं के नाम है। विश्व में प्रेम का जो दाम्पत्य भारत में है उसे सभी ने आदि-सभ्यताओं से अद्यतन श्रेष्ठतम जाना - माना है ।गीत के 'नव' ने, उत्तर छायावादी मांसलता और मंचीय कविता में उपस्थित प्रेम की वायवीयता को यथार्थवादी लौकिकता और व्यवहारिक संघर्षशीलताका

आधुनिक-वैदिकीय जमीनी अभिव्यंजन दिया। स्वकीया की जो संघर्षरत निष्ठाजीवी लौकिक यथार्थ भावाभिव्यक्ति अवध जी ने दी वह न तो जोगियों- सूफियों जैसे पारलौकिक होते प्रेम ,के विरल गीतकार किशन सरोज जी में है, न ही सिर्फ जिम्मेदारियों की वैशाखियों पर और कुछ ही गिने हुए दांपत्य प्रेम के विशिष्ट गीतकार माने जाने वाले माहेश्वर तिवारी जी आदि के शब्द चित्रों में है। देखें ,संघर्षशील दांपत्य पर उनका एक गीत----' दरवाजे खिड़कियां खोल लूँ/ आने से पहले बिस्तर पर /दूध उबालने को रखा है/ उबल जाए रख दूं तो आऊँ/अम्मा जी का पैर दुख रहा /जाकर थोड़ी देर दबाऊँ/जूठे बर्तन पड़े हुए हैं /आती हूं चौके को धोकर /'

या एक अन्य गीत पति की मानसिकता से देखें---' कभी-कभी तो मन होता है /पत्नी से बोलें बतियाएं/बाहर चलें खुले में बैठें/चार दशक पीछे ले जाएं/'

इस गीत के कुछ दृश्य रीतिकालीन अभिव्यक्ति जैसे लगते देखते हैं पर उनकी जमीन नून तेल लकड़ी की उलझन सुलझाने का अधुनातन संदर्भ ही जीती दिखेगी ।उनके प्रेम गीतों में आदिम राग,जिस लोकलय में उतरता है ,वहाँ भी हालावादी या नई कविता के लयहीन उन्मुक्त चित्र या गीत के 'नव' की-' वंशी और मादल ' की धुन ,पहुंचते हुए भी पहुंचती नहीं दिखती। देखें, लोगराग ध्वनन के सौंदर्य का यह सजीव शब्दचित्र ------

'प्रिय तुमने जुड़े में टाँक दिए फूल /प्रिय तुमने/ मेरी यादों में थी सखियों की सप्तपदी /भीतर भीतर लेकिन बहती थी रेत नदी/ मुझे सहने की प्यास/ मुझे बहने की प्यास/ प्रिय तुमने / डुबो दिए पानी से कूल /प्रिय तुमने /'

और इस इसे पढ़कर 'बेला फूले आधी रात' का पूरा लोक चित्रावलियों का संग्रह आंखों में न उतरे तो कोई असंवेद्य शिला ही तो कहेगा हृदय को। बनारस के लोक मांगलिक यथार्थवादी सृष्टा हिंदी के आदि कवि कबीर और पूरे राष्ट्र के आमजन की त्रासदी के दार्पणिक कथाकार प्रेमचंद की अभिव्यक्ति की प्यास को जीती अवध जी की संकोची लेखनी का संग्रह विधिवत प्रकाशन में भले 93 में आया हो पर उनकी सिद्धि प्रसिद्ध तो प्रायः 45 वर्ष की अल्पायु में ही 1974-75 से ही वागर्थ, नया ज्ञानोदय ,नवनीत, समकालीन कविता, मनोरमा, सुमति, पहल, पृथ्वी और पर्यावरण ,लोग गंगा ,ज्योत्सना, उत्तरार्ध ,समांतर, नए पुराने, गीतकार, अछूते संदर्भ, मधुमति ,संकल्प रथ ,अभिनव कदम, साहित्य भारती, काव्या ,पुनर्नवा ,दैनिक जागरण, अमर उजाला ,अक्षर भारत ,आशय, हिंदी जगत ,राष्ट्रीय सहारा, संडे मेल ,साहित्य अमृत और गौड़ सन्स टाइम प्रभृति पत्र-पत्रिकाओं में उनकी उपस्थिति से अपनी व्याप्ति की स्वीकृति पा चुकी थी ।गीत के 'नव' की जिम्मेदारी को सहज यथार्थ अभिव्यक्ति देती बिम्बधर्मा अभिव्यंजन की अंकुरित लालिमा को लोकजीवी पल्लवन-पुष्पन देकर मनहर-हरीतिमा सौपने में अवध जी की बहुआयामी सृजन चेतना का दस्तावेजी योगदान है ।

किसान संघर्ष ,नारी विमर्श ,मजदूर कामगारों के हक की चिंता की नारेबाजी से अधिक उनकी मनोदशा का परिवेश जीवी भुक्तबिम्ब धर्मा चित्रण--पहिलौटी,पियरी,नौरातर,टुन्न,खुन्नस जैसी शब्दावली ,संवाद शैली में किस्सागोई की शब्द यात्रा, मुहावरे दारी, उर्दू ,अंग्रेजी, फारसी, अरबी के प्रचलित पदयुग्म,छन्द निर्वहन की निर्दोष प्रवहमानता (जो प्रायः उनके समकालीन और विशेषता पूरब के नवगीतकारों ने नव होने की जिद में संज्ञान नहीं लिया), आद्यंत शब्दार्थ लय, सभी उनसे अभूतपूर्व ढंग से निभे हैं। देखें-पितृसत्तात्मक जकड़न में नारी विमर्श का एक आंगन के बाड़े में घुटती बहू के बयान का चित्र---

' जितना खिड़की से दिखता है/ उतना ही आंगन मेरा है/ निर्वसना नीम खड़ी बाहर/ जब धारोंधार नहाती है /यह देह न जाने कब कैसे/पत्ती पत्ती बिछ जाती है/ मन से जितना छू लेती हूं बस उतना ही घन मेरा है /डगमग पैरों से बूटों को/हर रात खोलना मजबूरी /बिन बोले देह सौंप देना/ मन से हो कितनी भी दूरी /हैं जहाँ नहीं नीले निशान/ बस उतना ही तन मेरा है /' 'बस्ती के भीतर' से ।

अवध जी के यहां तृतीय विश्व की अर्थनीति एवं नारी विमर्श के संदर्भ बहुआयामी हैं, पर वे नीग्रो-अफ्रीका के वर्ण विद्वेष झेलती महिलाओं, सदर्न-अफ्रीका के लिंग भेद जनित आर्थिक शोषण ,अरब अफ्रीका के बहुलांश में मुस्लिम कठमुल्ले पन के -'पैदाइश की मशीनों' और कैजुअली ग्रांटेड अघोषित बंधुआ मजदूरों की खरीद से ज्यादा, नए कवियों की विश्वव्यापी बौद्धिक रीच के प्रदर्शन से इतर ,अपनी जमीन के विमर्शों में ही जूझती दिखती है, चाहे वह भूख की त्रासदी में संतान बेचने को विवश उड़ीसा की सुमित्रा बोहरा के बयान की कविता हो ---- देखें, ' मैं उड़ीसा की सुमित्रा बोहरा हूं मां नहीं/रोटियों के लिए मैंने /बेच दी हैं लड़कियां /खोल दी हैं खिड़कियां/'

या शराब नशे की वजह से नशेड़ी पति स्वयं पत्नी द्वारा --'भोंक दिया खंजर से ' और कुदृष्टियों को ---'पहले मन में / फिर हाथों में /उगने लगे हजारों खंजर /' के संकल्पों के कवच ओढ़कर आज की जुझारू लड़कियों के घर से निकलने के तेवर हों।' मंडी चले कबीर' से।

सभी जगह नारी अस्मिता बोध का पारदर्शी जीवट दृश्य मान है। उनका नारी विमर्श-- सिमोन, केट मिलेट ,जर्मन ग्रेयर,या प्रभा खेतान, मैत्रेई पुष्पा ,नासिरा जी जैसा अपने मालिक की मर्दानगी के उपनिवेश बनाम पितृसत्ता की ईंट से ईंट बजाने का नहीं है ,न ही उनका नारी संघर्ष प्रच्छन्न 'चिड़िया' या 'जेब में चाकू रखना' जैसे हजारों हजार घिसे-पिटे प्रतीकों-बिम्बों की संकीर्ण-अभिव्यक्ति-उपादानों का नकलची है ।उनके यहां 'परिवार संस्था' और दांपत्य के शिवत्व का कोई विकल्प नहीं है। साहित्य में परंपरागत प्रायोजित मूल्यांकन और उपभोग की राजनीति के इस जटिल दौर में उनकी संघर्षशील नारी ,नई कविता, नई कहानी के लिए आइना और नवगीत के लिए हमारी जमीन का सर्वश्रेष्ठ अभिव्यंजन पाथती है।

स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के परिसीमन अवध जी के यहां पुरुष व स्त्री दोनों की चेतना को दर्पण दिखाते हैं। वस्तुतः अवध जी की धार्मिकता की मौलिकता और उनकी रागात्मक चेतना के सौंदर्य का अछूतापन ,अपनी निर्दोष लयात्मक अभिव्यक्ति में जो मानक स्थापित करती है ,वह अनन्य है।

हल्दी के छापे के 51 गीत और कविताओं (1993) , 'मंडी चले कबीर ' (2012)की 70 रचनाओं और 'बस्ती के भीतर' (2016) के लगभग 60 गीतों और कुछ दोहों में सरस लयात्मकता व संप्रेष्य- चित्रात्मकता का अथ से इति तक सम्मोहनकारी निर्वहन , बिना कथ्य-वस्तु या विधान के दोहराव के जिस टटके अनूठेपन में अभिव्यक्त हुआ है -नवगीत संसार में अन्यत्र दुर्लभ है। किसी छांदस सृष्टा की भुक्त-दृष्ट- विविधा अपनी अनावर्तित मौलिकता के छंद ,शिल्प,कथ्य,वस्तु के जितने प्रस्तुत आयाम अवध जी के सृजन में उपस्थित हैं, उसकी संश्लिष्ट कहन का प्रमाण उनका प्रस्तुत विधान है ।प्रायः दो शतक पूरती उनकी रचनाओं में घर संस्कृति के गौरव बोध, लोकराग जीते बारहमासे, ऋतु-वृत्ति वीथियों के शब्द चित्र ,घर आंगन की रागात्मक बिंब सृष्टि,विसंगतियों-विद्रूपताओं को उकेरती सहज संप्रेष्य सांकेतिक गतिमय उपादानों का विन्यास, नारी ,किसान ,दलित, कूड़ा बीनने वाले फुटपाथियों की पीड़ा के साझीदार और पैरोकार अपने सभी अभिव्यक्ति रूपों में अवध जी का कोई सानी नहीं है ।हम कनपुरियों के सृजन गौरव, हमारे वर्तमान हैं यह सौभाग्य बनाये रखने के लिए ईश्वर से उनके स्वस्थ सृजनरत आगत हेतु प्रार्थी है ।साहित्य की असाहित्यिक गतिविधियों के चलते ,अभी उनको उनका वाजिब प्रदेय मिलना शेष है,इसमें उनके संत निश्चल मन की बानगी से हम यही कह सकते हैं--' नैवस्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति ' देर वैसे ही हो चुकी है!

काव्य

रेखा शाह आरबी

बलिया

“धरती का धानी चुनर”

धरती अठखेलियां करती
उडा-उड़ा कर धानी चुनर,
ओस के हीरे आभा देते
लगती है कितनी सुंदर,

धूप थोड़ी सकुचाई सी है
पूर्वा मस्त हो रही पागल,
हृदय प्रेम उन्माद उठाता
ऋतु करता देता घायल,

हर तरफ उल्लास फैला
सरसों ने खूब रंग घोले,
जहां-तहां बिखेरा धरती पर
कोयल कुकू कुकू कर बोले,

आमों की मंजरिया गाये
अधिक उत्सव के गीत,
आना मिट्ठू मियां आना
तुम भी चखने मेरा प्रीत,

नेह निमंत्रण दे आया है
दिनकर घर घर जाकर,
आओ सब मिलकर गाए
राग बसंती नाच नाच कर,

सुमन अग्रवाल "सागरिका"

आगरा

“सरहद”

सरहद के उस पार जवान
शहीद हुए देश का नौजवान
कफ़न लिपटा शव आया द्वार
लहू से लथपथ बेजान जिन्दगी
नयी नवेली दुल्हन थी वो
हाथों से अभी न उतरी मेंहदी
हो गई आज सूनी कलाई
कैसे कटेगी नादान जिन्दगी
चहूं ओर फैली है उदासी
तार-तार हो गई जिन्दगी
आंखों से आंसू बह रहे
हो गई गुमनाम जिन्दगी
ख्वाब अधूरा, शौक अधूरा
बताये दिल-ए-हाल जिन्दगी
इतनी भीड़-भाड़ में भी वो
तन्हाई से परेशान जिन्दगी
कोरे कागज पे लिखे अरमान
मिटे अश्क से दास्तां-जिन्दगी
मन भी सूना,मांग भी सूनी
मुकद्दर का फ़रमान जिन्दगी
तन्हाई में कैद,वो खालीपन
अकेलेपन का अहसास
भीड़-भरी दुनियां में आज
सिसक रही वीरान जिन्दगी।

लेख

" वैश्विक परिदृश्य में भारतीय सभ्यता , संस्कृति एवं राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना "

" राष्ट्र धर्म के निर्वहन में - ' जय हिंद ... जय हिंदी ... जय भारत ... 'की व्यावहारिक अनुमोदना का शंखनाद - उत्तिष्ठ भारत: मां भारती पुकारती , के आह्वान में - ' सात्विक चेतना के दायित्वबोध द्वारा जिम्मेदारी और जवाबदेही के क्रियान्वयन...' से सुनिश्चित किया जाना अनिवार्य है जिसमें राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना को सुनिश्चित करते हुए - ' स्वतंत्र मानसिकता में आजादी का मर्यादित जश्न...' अवश्य ही मनाया जा सकता है।

भारत माता के प्रति जीवंत नैतिक चैतन्यता का व्यापक परिदृश्य सदा ही - ' राष्ट्र गौरव हिंदी भाषा की प्राण प्रतिष्ठा...' हेतु तत्पर रहता है जिसमें परंपरागत गुणात्मक विकास में नवीनतम व्यावहारिक प्रयोग विशिष्ट भूमिका निभाते हुए - ' भारतीय जनमानस में रची - बसी , राष्ट्रभाषा हिंदी को संपूर्ण त्याग , तपस्या एवं बलिदान...' की दीर्घकालीन प्रक्रिया के पश्चात अंततः आदर एवं सम्मान के ' पवित्रतम प्रतिष्ठित स्वरूप में अधिकार एवं कर्तव्य के श्रेष्ठतम सामंजस्य...' द्वारा प्राप्त करने की उच्चतम अभिलाषा रखते हैं।

जागृत राजनीतिक इच्छाशक्ति का अदम्य साहस ही - ' राजपथ पर विराजित राष्ट्रभाषा हिंदी को कर्तव्यपथ के स्वतंत्र स्वरूप...' में स्थापित कर सकता है जिसमें राष्ट्रभाषा हिंदी की उद्घोषणा के मौलिक आयाम ' विकसित भारत के निर्माण में राष्ट्रभाषा के जयघोष को भारतीय आत्मा की विहंगम संकल्पना...' के स्वरूप में स्वीकार करते हैं।

विश्व में राष्ट्रभाषा हिंदी द्वारा गौरवान्वित भारतीयता.... ' सर्वे भवंतु सुखिनः ...' की विशालता को आत्मिक जगत में सुसज्जित करके जब राष्ट्रभाषा हिंदी से निर्मित सृजनात्मक दृष्टिगत - नवदृष्टि द्वारा जगत गुरु के रूप में - ' वसुधैव कुटुंबकम...' का मंगलकारी स्वरूप अभिव्यक्त करता है तब भारतीय आत्मगत संचेतना की सहभागिता - ' वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रभाषा हिंदी : मातृभाषा के ममत्व , राजभाषा के एकत्व और राष्ट्रभाषा के समत्व द्वारा भारतीय सभ्यता , संस्कृति एवं राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना ' का प्रतिपादन महत्वपूर्ण हो जाता है।

राष्ट्रभाषा हिंदी द्वारा राष्ट्रीयता की स्थाई पुनर्स्थापना :

वैश्विक जगत के मध्य भारत राष्ट्र की समृद्धशाली - अतीत , आगत एवं अनंत के संदर्भ एवं प्रसंग में जीवित जिजीविषा की जीवंत कर्तव्योन्मुखीमानवीय प्रवृत्ति जिसमें - मनुष्य , मनुष्य , मनुष्यता और संवेदनशीलता की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का विराट शंखनाद - भारत की स्वतंत्रता के 75 वीं वर्षगांठ अर्थात भारत की आजादी का अमृत महोत्सव के श्रेष्ठतम एवं महानतम अवसर पर - राष्ट्रभाषा हिंदी की उद्घोषणा के शुभ ,पवित्र और न्याय संगत स्वरूप के द्वारा ही सुनिश्चित किया जा सकता है जिसमें मातृभाषा , राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के ममत्व , एकत्व और समत्व द्वारा भारतीय सभ्यता , संस्कृति तथा राष्ट्रीयता की स्थाई रूप में पुनर्स्थापना ' से

डॉ.अजय शुक्ला

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - अखिल भारतीय हिंदी महासभा , नई दिल्ली - अंतरराष्ट्रीय ध्यान एवं मानवतावादी चिंतक – विश्व हिंदी महासभा ,राष्ट्रीय मनोविज्ञान सलाहकार प्रमुख – अखिल भारतीय हिंदी महासभा , नई दिल्ली ,
प्रबंध निदेशक - आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन एवं शैक्षणिक प्रशिक्षण केंद्र ,देवास - 455221 मध्य प्रदेश .
दूरभाष : 91 31 09 90 97 / 98 26 44 93 85
Mail : drajaybehaviourscientist@gmail.com

भारत को - " विश्व गुरु " बनाने की संकल्पना का वास्तविक यथार्थ पूर्णतया समाहित रहता है।

स्वतंत्र मानसिकता में आजादी का मर्यादित जश्न :

' सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा...' का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष संपूर्ण भारतीय जनमानस के भावनात्मक परिदृश्य और विचारगत परिवेश से संबद्ध हो जाने के कारण - ' भारतीय आत्मा द्वारा स्वतंत्र मानसिकता में आजादी का मर्यादित जश्न...' मनाने की दीर्घकालीन आशा से भरपूर विश्वसनीय आवश्यकता की अपेक्षित अभिलाषा से युक्त - ' राष्ट्रवाद की मूलभूत संकल्पना...' के सानिध्य में पुष्पित और पल्लवित - सृजनात्मक ,संवेदनशील अभिव्यक्ति के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण का रहस्यवादी, सकारात्मक

तथा सार्थकता की दृष्टि से संपूर्ण रुप से समृद्ध दृष्टिकोण के व्यावहारिक क्रियान्वयन का उज्जवल स्वरूप - ' राष्ट्रभाषा हिंदी की प्राण प्रतिष्ठा...' को व्यवस्थागत निर्णयात्मक गतिविधि के माध्यम से स्थापित करने की आत्मगत चेतना , आज भी प्रतीक्षारत है ।

भारत माता के प्रति जीवंत नैतिक चैतन्यता :

विश्व मानवता के समग्र उत्थान एवं निरंतर उन्नयन में भारतीयता की अवधारणा सदा ही - ' आत्मगत चेतना द्वारा आंतरिक अभिप्रेरणा...' से सर्व मानव आत्माओं के अंतरसंबंधों में नैसर्गिक जुड़ाव को भाषाई सुचिता की महत्वपूर्ण भूमिका से संबंध करके - ' भारत माता के प्रति जीवंत नैतिक चैतन्यता...' को शुद्ध एवं सुदृढ़ स्वरूप में निर्मित करते हुए संपूर्ण जगत को धर्म एवं कर्म का पाठ पढ़ाकर जीवात्मा को अध्यात्म और पुरुषार्थ का संबल प्रदान करके , राजयोग तथा मौन की नि:शब्दता को भी अंतत: आत्मिक पवित्रता के स्वरूप में ' अध्यात्म - विश्व के मनुष्यों का धर्म...' बन जाने के लिए समदृष्टि से परिपूर्ण आत्मीय संबोधन की चेतना युक्त सृष्टि , जिसके अंतर्गत सम्मिलित - ' विश्व शांति एवं सामाजिक समरसता...' को स्थाई रूप से स्थापित करने के अग्रदूत बनकर , भारतीय आत्मा ने मानवता के मानस को संस्कारित चेतना सेसंपन्न तथा दिव्य गुणों एवं शक्तियों द्वारा सुरुचिपूर्ण ढंग से सुसज्जित कर दिया है।

राष्ट्र गौरव हिंदी भाषा की प्राण प्रतिष्ठा :

भारत राष्ट्र में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के स्वरूप में लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत कानूनी रूप से लागू करने के लिए – ' समस्त भगीरथ प्रयास की श्रम साध्य गौरवमई स्वर्णिम इबारत एक शताब्दी से भी अधिक ऐतिहासिक एवं पौराणिक धर्म ग्रंथों से सृजित विकास...' यात्रा के संदर्भ और प्रसंग के जीवंत रूप से उपलब्धि की पूर्णता के साथ स्वयं सिद्धा की प्रतिमूर्ति बनकर – ' राष्ट्र गौरव के रूप में हिंदी भाषा की प्राण प्रतिष्ठा...' की बाट जोहने में संलग्न है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा की बोधगम्यता के साथ – ' राजभाषा अर्थात राजपथ से कर्तव्यपथ का अनुकरण तथा अनुसरण...' करके यथाशीघ्र राष्ट्रभाषा हिंदी के आरंभ से अंततः तक की – ' विकास से विकसित स्वरूप की यात्रा...' में भाषाई गुलामी की अंतरकथा में उलझी हिंदी भाषा की व्यथा , स्वयं की ही स्वतंत्रता हेतु नित – नूतन , अनेकानेक विधि – विधान के अनुप्रयोग से मुक्ति की मन्नत में अस्तित्व की स्थापना का वास्तविक यथार्थ अनवरत रूप से यदा – कदा विभिन्न स्थितियों एवं परिस्थितियों के अंतर्गत ढूंढ रही है ।

परंपरागत गुणात्मक विकास में नवीनतम व्यावहारिक प्रयोग :

राष्ट्रभाषा हिंदी के संपूर्ण विकास के अनुक्रम में सभी विधाओं के अंतर्गत – ' अंत:करण की शक्ति का पूर्ण विनियोजन , संपूर्ण मनोयोग...' द्वारा पुरातन काल से वर्तमान आधुनिक काल की व्यवस्थागत प्रणाली में परंपरागत गुणात्मक सहभागिता के द्वारा – ' शासकीय , अशासकीय संस्थाओं के साथ - साथ गैर सरकारी एवं स्वैच्छिक संगठनों...' के माध्यम से भारत के विभिन्न प्रांतों में राष्ट्र भाषा की उन्नति हेतु नवीनतम व्यावहारिक प्रयोग के प्रमाणिक दस्तावेज का निर्माण एवं प्रचार – प्रसार किया गया और बहुआयामी स्थितियों में सुदृढ़ और सशक्त तरीके से प्रभावशाली तथा प्रेरणादाई हिंदी के प्रकाशन को – दैनिक , साप्ताहिक , पाक्षिक , मासिक , द्विमासिक , त्रैमासिक , चौमासा , छमाही ,
वार्षिकी , विशिष्ट सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंधित विभिन्न लोक कल्याणकारी अवसर एवं राष्ट्रीय – अंतरराष्ट्रीय महत्वपूर्ण उपयोगी मुद्दों पर विभिन्न – विशेषांक , संस्थागत गतिविधियों के ब्योरे हेतु प्रस्तुत की जाने वाली – स्मारिका , साहित्यिक गतिविधियों के सामूहिक प्रस्तुतीकरण हेतु – साझा संकलन , के गद्य एवं पद्य विशेषांक तथा पुस्तकाकार स्वरूप में संदर्भ ग्रंथों को विश्व स्तरीय विराट एवं विशाल स्वरूप तक आदर और सम्मानपूर्ण विधि – विधान से पहुंचाया गया है जिसमें – ' मर्यादित संप्रेषण और व्यापक सामाजिक स्वीकारोक्ति की उच्चतम अवस्था से संबंधित व्यवस्था...' भी गतिशीलता की प्रासंगिकता में निरंतर प्राप्त होती रही है जिससे राष्ट्रभाषा हिंदी में सृजनात्मक गतिविधियों का कुशलता से संपादन एवं दैनिक जीवन में उपयोग करने के अतिरिक्त नित्य – नूतन विधियों के व्यावहारिक क्रियाकलापों का क्रियान्वयन भी अति महत्वपूर्ण सिद्ध होता रहा है जिन्हें आत्मसात करने से राष्ट्रभाषा हिंदी को स्थापित होने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अर्थात सतत रूप से नवाचारी प्रासंगिकता में मदद प्राप्त होती रही है ।

भारतीय जनमानस में रची बसी राष्ट्रभाषा हिंदी :

भारतीयता की मौलिक चिंतनशीलता सदैव चेतना के द्वारा राष्ट्रभाषा की आरंभिक स्थितियों में हिंदी की आवश्यकता से लेकर उपयोगिता को चुनौतीपूर्ण रूप से स्वीकार करते हुए – ' जहां सुमति तहां संपत्ति नाना..' के माध्यम से सात्विक गुणात्मकता के अनुक्रम में अभिव्यक्ति की – ' स्वतंत्रता को मानस पटल द्वारा अंगीकार करके...' संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की अवधारणा को व्यवहारिकता की कसौटी पर जीने के लिए सहज ही तत्पर हो जाना , इस बात का प्रमाण है कि – ' राष्ट्रभाषा हिंदी को रोजगार से जोड़ने...' की प्रक्रिया का अनुगमन करके – ' हिंदी बोलें एक होलें...' की प्रासंगिकता से आपसी संवाद द्वारा एक दूसरे से जुड़ जाने की विभिन्न स्थितियां भारत राष्ट्र में – ' अनेकता में एकता अर्थात एक भारत श्रेष्ठ भारत...' के उच्चतम स्वरूप के अंतर्गत निर्मित हुई है जो भारतीय जनमानस द्वारा शासकीय , अशासकीय , व्यावसायिक , स्वैच्छिक एवं गैर सरकारी संगठनों में भी राष्ट्रभाषा से संबंधित कार्यों की विधिवत रूप से की जाने वाली पूर्ण संपन्नता , उपलब्धिपूर्ण सफलता के रूप में प्राप्त हो सकी है

जागृत राजनीतिक इच्छा शक्ति का अदम्य साहस :

भारत राष्ट्र की – ' राष्ट्रवाद से संबंध एवं प्रतिबद्ध राष्ट्रीयता का अभिमुखित प्रखरता से युक्त स्वरूप ही राष्ट्रभाषा हिंदी...' के द्वारा समस्त भारतीय भाषाओं के मध्य – ' समन्वय , एकता और विकास की उपयुक्त एवं सही दशा एवं दिशा में सर्वश्रेष्ठ क्रिया – कलाप से संबंधित विभिन्न गतिविधियों...' का कुशलता पूर्ण संचालन कर सकता है जिसमें भाषाई संबंधों की प्रगाढ़ता से अपनत्व स्थापित करके , सामाजिक समरसता की व्यापक संभावनाओं को सुनिश्चित करना अनिवार्य होता है जिससे – ' एक ही अध्यादेश के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी को राष्ट्रीयता की पक्षधरता का गहन...' रूप से संज्ञान प्राप्त करके – ' जागृत राजनीतिक इच्छाशक्ति के अदम्य साहस... ' से अमृत काल के स्वर्णिम अवसर में ही – ' कानूनी रूप से भारत राष्ट्र में राष्ट्रभाषा को विधिवत तरीके से लागू...' किया जा सकता है।

राष्ट्रभाषा हिंदी की उद्घोषणा के मौलिक आयाम :

भारत की आजादी के अमृत महोत्सव अर्थात भारत की स्वतंत्रता के 75 वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रभाषा हिंदी को स्थापित करने के महत्वपूर्ण कार्यों में – ' केंद्र सरकार , राज्य सरकार , गैर सरकारी संगठन के साथ – साथ शैक्षिक संस्थानों के विभिन्न सामूहिक एवं व्यक्तिगत प्रयास...' के संपूर्ण योगदान के पश्चात भी – ' राष्ट्रभाषा हिंदी भारत वर्ष में लागू क्यों नहीं हो पाई है...? अभी तक राष्ट्रभाषा के विकास हेतु समग्रता के सानिध्य में जो कुछ भी किया गया है...' उसका संपूर्ण विवरण से युक्त लेखा - जोखा अर्थात आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है जिससे समस्त प्रकार के – ' अवदान की समालोचनात्मक व्याख्या विधिवत रूप करना सहज हो जाएगा और वास्तविक निष्कर्ष...' पर पहुंचा जा सकेगा है इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में दीर्घकालीन समय से विशेष भूमिका निभाने के अंतर्गत – ' देशभर के प्रतिष्ठित , विभिन्न केंद्रीय हिंदी संस्थान , राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग , केंद्रीय व्यवस्था द्वारा संचालित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी विश्वविद्यालय , राष्ट्रभाषा हिंदी कार्यान्वयन समिति , राष्ट्रभाषा प्रचार समिति , संस्कृति भवन , हिंदी भवन , जनसंपर्क विभाग, रोजगार और निर्माण से संबंधित विभिन्न – माध्यम केंद्र , विद्यमान हैं।

संपूर्णता एवं सक्रियता के सानिध्य में गतिशीलता :

देश के सभी प्रांतों में संचालित हिंदी ग्रंथ अकादमी , केंद्रीय सूचना एवं पत्र कार्यालय , भारत सरकार का प्रकाशन विभाग , संपूर्ण राष्ट्र की समस्त शासकीय , अशासकीय एवं स्वैच्छिक संगठन के द्वारा प्रकाशित हिंदी की राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर की महत्वपूर्ण पत्र एवं पत्रिकाएं , प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया , बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया , देश और प्रदेश स्तर पर संचालित – राष्ट्रीय कला केंद्र , भारत भवन , मानव संग्रहालय , संगीत अकादमी , भारतीय आदिवासी सभ्यता को सुरक्षित रखने हेतु – प्रमुख कला केंद्र , नाट्य अकादमी , हथकरघा एवं हस्तशिल्प विभाग , गांधी भवन , मानस भवन , रामायण केंद्र , कालिदास अकादमी , लोक कला अकादमी , इत्यादि के अतिरिक्त साहित्यिक गतिविधियों के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न स्वैच्छिक संगठन , निश्चित रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिकाओं के साथ , आज भी संपूर्णता एवं सक्रियता के सानिध्य में गतिशील हैं तथा शेष 25 वर्ष के अमृतकाल में – ' भारत की हिंदी पोषित , पुष्पित एवं पल्लवित संस्थाओं द्वारा आखिर और अंततः की भूमिका में राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास हेतु परंपरागत गतिविधियों के अतिरिक्त नवीनतम स्वरूप से किन महत्वपूर्ण कार्यों को संपादित किया जाए ?

जिससे कि राष्ट्रभाषा हिंदी...' को भारत की आजादी के शताब्दी वर्ष अर्थात स्वतंत्रता के 100 वीं वर्षगांठ पूर्ण होने पर विधिवत , कानूनी रूप से लागू किया जा सकेगा।

विकसित भारत के निर्माण में राष्ट्रभाषा का जयघोष :

संपूर्ण जगत के अंतर्गत विश्व में शांति , अहिंसा एवं पवित्रता की स्थापना हेतु धर्म , अध्यात्म और राजयोग के अवदान को वैश्विक स्तर पर स्वीकारोक्ति प्राप्त होने के कारण ही भारत से धार्मिक कीर्तन और संकीर्तन का स्वरूप अपनी विशिष्टता के साथ आध्यात्मिक क्रांति के माध्यम से संक्रांति की उपयोगिता के बहुआयामी सिद्ध स्वरूप में परिणित होकर – ' परिष्कृत चेतना की चेतनता द्वारा ऊर्ध्वगामी आत्मिक परिवर्तन से जीवात्मा को चेतना के परिष्कार...' की महायात्रा में भारतीय आत्मा के जयघोष द्वारा सर्व आत्माओं के कल्याण का निहितार्थ बनकर - ' शुभभावना एवं शुभकामना के स्वरूप...' में सम्मिलित हो जाता है जिसमें – ' जय जवान – जय किसान , के साथ ही जय – विज्ञान , जय – अनुसंधान की अनुगूंज को अब , जय – मातृभाषा , जय – राजभाषा तथा जय – राष्ट्रभाषा , की वास्तविक स्थितियों के धरातल पर भारतीय आत्मा की अवधारणा में पोषित – जय राष्ट्रवाद , के शंखनाद से गतिशीलता को प्राप्त होते हुए भारतीयता की ज्ञान – विज्ञान एवं मनोविज्ञान की परंपरा के निष्ठापूर्ण निर्वहन में – ' भारत की आजादी के अमृत महोत्सव से... स्वर्णिम भारत की ओर...' वैश्विक शांति , अहिंसा एवं पवित्रता का अग्रदूत बनकर – भारत राष्ट्र ही अनवरत रूप से अग्रसर हो सकेगा।

भारतीय आत्मा की विहंगम संकल्पना का स्वरूप :

राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए कल्याणकारी मनोभाव के व्यावहारिक क्रियान्वयन द्वारा मंगलकारी पवित्र उद्घोष से भारतीय आत्मा की पहचान वैश्विक जगत में स्थापित हुई है तथा संपूर्ण जगत भारतीयता की अवधारणा में – ' सर्व धर्म समभाव...' के अंतर्गत आध्यात्मिक परिदृश्य के आत्मिक संबंधों में सर्वोत्कृष्ट आत्मीयता की – ' स्वान्तः सुखाय रघुनाथ

गाथा...' के दुर्लभ दार्शनिक स्वरूप के माध्यम से सृजित पृष्ठभूमि को निहारने का प्रयास करता है जिससे उन्हें – ' सर्वजन हिताय , सर्वजन सुखाय...' की व्यावहारिकता परिलक्षित हो जाती है जो आत्मिक जगत के व्यावहारिक परिदृश्य को – ' सर्वे भवंतु सुखिन ...' के सन्मार्ग पर सदा गतिशील रहकर आध्यात्मिक पुरुषार्थ के माध्यम से – वसुधैव कुटुंबकम...' अर्थात संपूर्ण विश्व एक परिवार है इस उच्चतम अवधारणा के समदृश्य विराट स्वरूप के माध्यम से स्वीकार करके – ' आत्मिक दायित्वबोध से स्वयं को पूर्णरूपेण सुसज्जित रखने की क्रियाशीलता...' को आत्मसात करके भारतीय आत्मा की - ' विहंगम संकल्पना को राष्ट्रभाषा हिंदी के नैसर्गिक...' स्वरूप में स्वयं को व्यक्तिगत रुप से , शिक्षित – प्रशिक्षित करके सकारात्मक – सार्थक दृष्टिकोण को धारणात्मक चरित्र का आधार बनाकर ' पठन –पाठन , मनन - चिंतन , वर्णन – विश्लेषण , लेखन – संप्रेषण , अवलोकन – मूल्यांकन के पश्चात उससे प्राप्त होने वाली , संतुष्टि - उपयोगिता , आलोचना – समालोचना , प्रतिक्रिया – प्रतिपुष्टि , संवाद – समाधान , निर्वचन एवं अंतिम निष्कर्ष ...' तक पहुंच कर ही व्यावहारिक स्तर पर परिष्कृत चिंतन के आयाम को – ' गागर में सागर भर देने के महानतम स्वरूप में साकार...' किया जा सकता है ।

विश्व में राष्ट्रभाषा हिंदी द्वारा गौरवान्वित भारतीयता :

' सत्यमेव जयते...' की समग्रता के विराट स्वरूप में भारत की स्वतंत्रता के 75 वीं वर्षगांठ अर्थात भारत की आजादी का अमृत महोत्सव के महान अवसर पर संपूर्ण विश्व में – ' भारतीयता का परचम लहराने हेतु सर्वश्रेष्ठ उपाय – राष्ट्र के साहित्य सर्जको द्वारा स्वयं को भारतीय ज्ञान परंपरा...' की समृद्धशाली धरोहर से शिक्षित – दीक्षित करते हुए चिंतनशील प्रक्रिया द्वारा अनुभवी बनकर भावनात्मक एवं वैचारिक प्रज्ञा में दक्षता रुपी सक्षमता से – ' सूक्ष्म कल्पनाशीलता का प्रयोग करके सृजनात्मक साहित्य का सृजन जो हिंदी का प्राण जगत...' है उसमें नवाचारी के प्रयोग से आधुनिक काल की विरासत को ईमानदारी से सुसज्जित करके – ' अतीत , आगत एवं अनंत की सृजनशील साहित्यिक विरासत के प्रति समादर भाव की पृष्ठभूमि में कल्याणकारी और मंगलकारी...' साहित्य सृजन अनवरत स्वरूप से गतिशील है इसलिए – ' उत्तिष्ठ भारत: मां भारती पुकारती : सात्विक चेतना के दायित्वबोध द्वारा जिम्मेदारी और जवाबदेही से क्रियान्वयन...' के आह्वान को – ' भारत राष्ट्र के नायकों द्वारा राजपथ के राजसिक स्वरूप से कर्तव्यपथ के सात्विक प्रांगण...' में पधारकर – ' राष्ट्रीय हिंदी दिवस , के महान अवसर पर – ' राष्ट्रभाषा हिंदी को संपूर्ण भारतवर्ष में भारतीय संविधान के अनुसार कानूनी रूप से लागू करने की उद्घोषणा...' किया जाना परम आवश्यक है जिसमें – ' भारत राष्ट्र को विकसित भारत बनाने का महान लक्ष्य समस्त भारत के जनमानस की दृढ संकल्पबद्धता...' की परिणिति है जो भारत की विराट दिव्य दृष्टि के रूप में भारत को विश्व गुरु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसलिए – ' भारतीय आत्मा द्वारा , सबका – साथ , सबका – विकास , सबका – विश्वास , की संपूर्णता के साथ - साथ , राजनीतिक इच्छाशक्ति से भरपूर साहस द्वारा – केवल एक अंतिम अधिसूचना के माध्यम से भारत माता के , सच्चे सपूत का सबूत – राष्ट्रभाषा हिंदी को लागू...' करके ही दिया जा सकता है ।

राष्ट्रभाषा हिंदी से निर्मित सृजनात्मक सृष्टिगत नवदृष्टि :

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु – ' संपूर्ण भारतवर्ष की हिंदी संस्थाओं और उनसे संबंधित विभिन्न – सामाजिक , मनोवैज्ञानिक , दार्शनिक , धार्मिक , आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ - साथ भारत की ज्ञान परंपरा से संबंधित – विज्ञान , तकनीकी , कला एवं वाणिज्य , अभियांत्रिकी , शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य , के स्वरूप में भी राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा विभिन्न क्षेत्र के साथ , लगभग सभी विधाओं के अंतर्गत साहित्य निर्माण की निरंतरता के 75 वर्षों के संघर्ष और विकास के माध्यम से विकसित हो जाने की प्रक्रिया में – ' योगदान की गौरव गाथा को संदर्भ एवं प्रसंग के विशाल स्वरूप में संज्ञान लेकर हिंदी दिवस के महान अवसर पर सूरज की प्रातः किरण के साथ भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा हिंदी कानूनी रूप से लागू हो गई है...' की सुखद अनुभूति का समाचार संप्रेषित होने से जब – ' भारतीयता की महत्वपूर्ण पहचान – निज भाषा उन्नति...' के संदर्भ और प्रसंग में स्थापित हो जाती है तब – ' संपूर्ण विश्व में व्याप्त भारतीय जन समूह – राष्ट्र गौरव गान से आनंदित हो उठेगा क्योंकि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी...' आज राष्ट्रीय हिंदी दिवस , से भारतीय संसदीय व्यवस्था से उद्घोषित एवं कानूनी रुप से निर्धारित होकर राष्ट्रभाषा हिंदी भारत में पूर्णत: निर्मित , स्थापित एवं विकसित होने के मार्ग पर गतिमान हो गई है जो – ' मातृभाषा , राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के ममत्व , एकत्व और समत्व द्वारा भारतीय सभ्यता , संस्कृति तथा राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना ' का संवाहक बनकर संपूर्ण शताब्दी की महायात्रा में अनवरत रूप से गतिशील – थी भी , है भी , और भविष्य में भी , विकास का यह गुणात्मक अनुक्रम बना रहेगा ।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की सहभागिता :

भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी को – राष्ट्रभाषा के रूप में लागू कराने के लिए अर्थात राष्ट्र ऋण के प्रति व्यक्तिगत एवं सामूहिक आहुति प्रदान करने हेतु स्वयं को संपूर्ण समर्पण करने की , प्राण – प्रण से न्योछावर होने की संकल्पना का यथार्थ बनकर भारतीय आत्मा के आम जनमानस से संबद्ध राष्ट्रीय चरित्र के प्रति महानतम दृष्टि और विराट दृष्टिकोण के साथ – ' अखिल भारतीय स्तर का सानिध्य और विश्व स्वरूप के अंतर्गत विगत 75 वर्षों से राष्ट्रभाषा की समृद्धिशाली अवधारणा के मूलभूत उद्देश – राष्ट्रभाषा हिंदी के साथ - साथ सभी भारतीय भाषाओं के मध्य – आपसी सामंजस्य , समन्वय , समरसता , एकता ,एवं गुणात्मक विकास...' के मूल मंत्र द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी

के विकास हेतु समर्पित मनोभाव से आत्मगत संलग्नता के साथ गतिशील है ... । संपूर्ण भारत वर्ष के अंतर्गत लगभग सभी प्रांतों में शासकीय शासकीय एवं गैर शासकीय व्यवस्थाओं की संपूर्णता के माध्यम से समस्त महत्वपूर्ण विषय और उनसे जुड़े विविध आयाम की – ' सबल , सक्रिय एवं समर्थ सहभागिता द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी को अपने ही राष्ट्र में कानूनी रुप से लागू कराने हेतु – ' संपूर्ण संपूर्ण भारतीय जनमानस की विशाल परिदृश्य से संबंधित – श्रेष्ठतम कल्पना , प्रयास और अनुभूति से संबंधित अकादमिक , व्यवसायिक , तकनीकी एवं अनुसंधानपरक सहभागिता और उसका विशिष्ट आयाम – राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जगत की महत्वपूर्ण भूमिका का संपूर्ण योगदान राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में दृढ़ संकल्पित मनोभाव से प्रतिबद्धता के साथ समर्पित एवं प्रेरणादाई स्वरूप में सदा ही विद्यमान रहते हुए गतिशील बना हुआ है ... । अतः राष्ट्र भाषा हिंदी की सम्मानित स्थिति और गौरवान्वित स्वरूप विश्व समुदाय के मध्य , वसुधैव कुटुंबकम से मुखरित – ममत्व , एवं भारत की आजादी के अमृत महोत्सव द्वारा उत्पन्न – एकत्व , और विश्व हिंदी दिवस में सन्निहित – समत्व , के माध्यम से भारतीय सभ्यता , संस्कृति एवं राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना ... " में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न – संपूर्ण भारतीय मानव आत्माओं के साथ - साथ समस्त देशवासियों और वैश्विक परिदृश्य में विराजमान राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा में समर्पित आत्मीयता से युक्त मनोभाव को – विश्व हिंदी दिवस के महान गौरवमई अवसर पर अनेकानेक शुभकामनाएं ... एवं... हार्दिक... आत्मिक... बधाई... , जय हिंद ... जय हिंदी ... जय भारत ...।

काव्य

आकांक्षा यादव
वाराणसी
akankshay1982@gmail.com

"नियति का प्रहार"

नारी बढ़ती जाती है
इक नदी की तरह
अपनी समस्त भावनाओं
और संवेदनाओं के प्रवाह के साथ।
जीवन का अद्भुत संगीत और
आगोश में किलकारियों की गूँज
करती है वह नव-सृजन
नित् प्रवाहमान होकर।
नदी की ही भांति
लोग रोकते हैं नारी का प्रवाह
सिमेट देना चाहते हैं
उसे घर की चहरदीवारी में
जैसे तालाब या बाँध।
पर इन सबसे बेपरवाह
बढ़ती जाती है नारी
अपनी ही धुन में
ताजगी को बिखेरते
मस्ती को समेटते।
जीवन भर झेलती है
झंझावतों व अत्याचारों को
पर चलती रहती अविरल
भावनाओं व संवेदनाओं के प्रवाह के साथ
और कहती जाती है
मत तोड़ो नियम प्रकृति का
बहने दो मुझे प्रबल आवेग से
अन्यथा सहना पड़ेगा नियति का प्रहार।

"मैं अजन्मी"

मैं अजन्मी
हूँ अंश तुम्हारा
फिर क्यों गैर बनाते हो
है मेरा क्या दोष
जो, ईश्वर की मर्जी झुठलाते हो
मै माँस-मज्जा का पिण्ड नहीं
दुर्गा, लक्ष्मी औ' भवानी हूँ
भावों के पुंज से रची
नित्य रचती सृजन कहानी हूँ
लड़की होना किसी पाप की
निशानी तो नहीं
फिर
मैं तो अभी अजन्मी हूँ
मत सहना मेरे लिए क्लेश
मत सहेजना मेरे लिए दहेज
मैं दिखा दूँगी
कि लड़कों से कमतर नहीं
माद्दा रखती हूँ
श्मशान घाट में भी अग्नि देने का
बस विनती मेरी है
मुझे दुनिया में आने तो दो।

लेख

"भारतीय संस्कृति और भाषा"

सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य अत्यधिक सम्पन्न है। जागरूक और समर्पित-चेता अनेक साहित्यकारों से समृद्ध है भारतीय भाषाएँ। वस्तुतः इन साहित्यवेत्ताओं से व्यष्टि और समष्टि का जीवन बड़ी मात्रा तक प्रभावित हुआ है। विभिन्न भाषा साहित्यों की रचनाओं में विशेषकर मिथक साहित्यों की कल्पनाओं का मूलाधार एक ही भारतीय पुराण साहित्य का हिमालय है। इन्हीं पौराणिक स्त्रोतों में अवगाहन करके अपनी चेतनता में नव्य दृष्टि भरने वाले मिथकीय साहित्यकार हमारे पूरे चिन्तन क्षेत्र को भी भव्य सांस्कृतिक प्राणोन्मेष से भर देते हैं। भारतीय भाषाओं के मिथक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विश्लेषण बड़े महत्व का काम है। उससे सुदूरवर्ती उत्तर, दक्षिण आदि भूभागों में रहने वाले लोगों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु भी निर्मित हो सकता है, जो समग्र भारत की सामासिक संस्कृति और एकाग्रता को परिपुष्ट करने में सहायक भी सिद्ध हो सकता है। आज जीवन-शैली में बदलाव आया है। बहुत-से मूल्यों के रूप बदल रहे हैं। ऐसे संक्रमण के दौर में हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत, भाषा और साहित्य के प्रति अधिक सजग रहना है। सारी मुसीबतों और आक्रोशों के उग्र रूपों को केवल भाषिक और साहित्यिक उदारता ही शान्त कर सकती है। हमारी राजभाषा हिन्दी पूरे देश की संस्कृति को कायम रखकर देश को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी।

भाषा और संस्कृति के बीच बिंब प्रतिबिंब सा सम्बन्ध है। भाषा संस्कृति की वाहिका है। दोनों के सम्बन्ध पर विचार करने का मतलब है भाषा से संस्कृति की अभिव्यक्ति का स्वरूप समझना और भाषा एवं साहित्य के स्वरूप से संस्कृति के विकास को समझना। अंग्रेजी में प्रयुक्त ' कल्चर' शब्द हिन्दी भाषा में ' संस्कृति' शब्द के रूप में परिभाषित किया जाता है। संस्कृति का अभिप्राय शुद्धिकरण है, अथवा संस्कृत करने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं। मनुष्य को जन्तुजगत् में अन्तर्भूत किया गया है। उसका अर्थ यह होता है, मनुष्य भी एक पशु है। इस कारण से उसका व्यक्तित्व पशु सामान्य वृत्तियों से परिचालित होता है। उसकी भी मूलभूत आवश्यकताएँ पशुओं से भिन्न नहीं है। अतः उसके मनोव्यापार या मनोवृत्तियाँ पशुओं के समान भी हैं। खाना-पीना, आश्रय पाना, यौन भावनाएँ मनुष्य के अन्दर पशुओं के समान चला ही करती हैं। इन्हीं मूलभूत आवश्यकताओं के साथ सम्बन्ध, नाना भाव व्यापार क्रोध, भय, स्पर्धा, मोह और लोभ, आसक्ति, अपने लिए सुरक्षित रखने की आकांक्षा, स्वार्थ ऐसी बहुत-सी बातें मनुष्य के अन्तरंग में चला करती हैं। इनमें से कतिपय भावनाएँ मौका ताककर मनुष्य में उत्कृष्ट रूप से जागृत होती हैं। इसके लिए भाषा सहायक बनती है। इन भावनाओं का असामयिक अथवा अनियन्त्रित जागरण बहुधा मनुष्य के लिए हानिकारक भी होता है। हानिकारक इसलिए कि उससे परस्पर संघर्ष हो जाने की गुंजाइश है। मनुष्य को समाज में जीना होता है इसलिए प्रत्येक मनुष्य का जीवन समाज से संबद्ध और नियंत्रित होता है। आज की दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य एक वैश्विक समाज में जी रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाव व्यापारों को, आवश्यकताओं को संयत और नियंत्रित करके जीना है। यह नियंत्रण सामाजिक नियमों के आधार पर चलाना भी है, क्योंकि

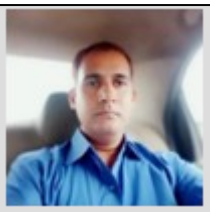

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, जिला-सवाई माधोपुर (राजस्थान)
322201 दूरभाष-9462607259
Mail: dineshg.gupta397@gmail.com

सामाजिकता से व्यक्ति-जीवन संबद्ध ही होता है। व्यक्ति मानस को सामाजिक जीवन के लिए सर्वथा अनुकूल बनाने के लिए, स्वाभाविक रूप से सामाजिक अनुशासन के लिए तैयार करने की प्रक्रिया को मानुषीकरण कहते हैं। यह मानुषीकरण ही सच्चे अर्थ में संस्कृतीकरण है, पशुसामान्य वृत्तियों से मनुष्य का विशुद्धीकरण अथवा उदात्तीकरण ही संक्षेपतः संस्कृति का तात्पर्य है। दुनिया में अनेक राष्ट्र बने हैं। इन राष्ट्रों के लोग अपनी-अपनी संस्कृतियों से संचालित भी होते हैं। उन संस्कृतियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ भी होती हैं। प्रत्येक संस्कृति यद्यपि मानव-मन के उदात्तीकरण के ध्येय पर चलती है तो भी इनमें प्रादेशिक रंगों के चढ़ने के कारण वे परस्पर अनुकूल भी नहीं होतीं। यही नहीं कभी-कभी इन संस्कृतियों के बीच संघर्ष भी हुआ करता है अतः आज के वैश्विक जीवन के लिए सर्वथा उपयोगी या उपादेय भी नहीं होती हैं। इसी वैश्विक परिदृश्य को आधार बनाकर दृष्टिपात करने पर विश्व के निखिल राष्ट्रों के लिए सहायक और अनुकूलता की दृष्टि से संग्रहणीय संस्कृति के तत्व भारतीय संस्कृति में सर्वाधिक हैं और उसे उजागर करने की शक्ति भारतीय भाषाओं में है। भारत की संस्कृति का आरंभ अत्यन्त प्राचीन काल में

घटित हुआ, यह अनेक साक्ष्यों से प्रमाणित भी होता है। संस्कृति के वाहक मुख्य रूप से दो साधन हैं। एक : परंपरा, दो : भाषा। भाषा, संस्कृति तथा परंपरा का पोषक होती है, राष्ट्रीयता के विकास में सहायक होती है। भाषा का प्रचलन और व्यापन साहित्य के द्वारा होता है। सबसे अधिक प्रचलित भाषा सार्वत्रिक भाषा होती है लेकिन सार्वत्रिक भाषा ऐसी कोई वस्तु नहीं है। तब भारत की सर्वाधिक व्याप्त भाषा ही सबसे प्रचलित भाषा मानी जा सकती है। भारत की भाषाएँ अनेक हैं लेकिन अन्तःसलिला के रूप में उन सारी भाषाओं में प्रवाहित संस्कृत भाषा है। विशेषकर संस्कृति की दृष्टि से सबसे धन्य भाषा भी संस्कृत है। संस्कृत से संपुष्ट ही सारी भाषाओं के कलेवर हैं। विशेषकर हिन्दी भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी भाषा कहलाती है, उसके द्वारा ही संस्कृति विकास को प्राप्त भी करती है। संस्कृत के प्राचीन साहित्य से ही भारत की पीढ़ियों से गृहीत भारतीय संस्कृति निहित है। इस कारण इधर वैदिक साहित्य से लेकर प्रसारित संस्कृति के कुछ ज्योतिर्मय बिंदुओं पर प्रकाश डालने की चेष्टा हुई है। संस्कृत साहित्य अत्यन्त पुरातन काल से हमारे साथ है। कम-से-कम छः हजार वर्षों से भारत के जीवन को विभिन्न दिशाओं से संस्कृत और उदात्त करते रहने वाला साहित्य भारत में है। साहित्य के अन्तर्गत संगीत और कलाएँ भी गिनायी जाती हैं। यही नहीं साहित्य के भीतर भी दो विभाग हैं वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य। इन उभय पक्षों पर दृष्टि डालते हुए प्रस्तुत लेख में यह दिखाया गया है कि साहित्य की संकल्पनाएँ पीढ़ियों से अंगीकृत की जाकर कैसे भारतीय जन-चेतना में जीवन्त रहकर संस्कृति की धाराएँ हो गई है और उनका विकास करके अखिल विश्व के लिए शान्ति का सन्देश कैसे पहुँचाया जा सकता है। ऋग्वेदीय साहित्य कम-से-कम छः हजार वर्षों से पहले हमारे साथ है। यहाँ के जीवन को परिष्कृत, सभ्य और संस्कृत करते हुए यह साहित्य हमारा पथप्रदर्शन कर रहा है। सर्वात्मवाद और अद्वैत भावना ऋग्वेदीय साहित्य से ही प्रवाहित होकर गंगा की अमृतधारा के समान भारत के मानस में परिव्याप्त है। इसके आधार पर एक भारतीय व्यक्ति, जगत के समस्त चेतन पदार्थों में आत्मा के दर्शन करता है। इस धारणा के चलते भारत में यह माना जाता है कि एक पौधे की डाल को काटना भी अनुचित है। समस्त प्राणियों में चैतन्य है। सभी में एक आत्मा ही स्पंदित होती है। तब यह कहना नहीं है कि मनुष्य-मनुष्य में मूलतः अभिन्नता है। इस सत्य को सर्वात्मवाद कहते हैं। सूक्ष्म चिन्तन से यह तथ्य दार्शनिक धरातल पर ही नहीं व्यावहारिक जीवन में भी आभासित होता है। इसको अद्वैत भी कहते हैं। " सर्वमेवेदं पुरुषः तदविश्वं उपजीवति " (ऋग्वेदीय पुरुष सूक्त)।

भावना नाना प्रकार से प्रकट की गई है। वेदान्त के महावाक्य कहलाने वाले ' तत्वमसी' (तत् त्वं असी-वही तुम्हीं हो) ' सर्वम् खल्विदं ब्रह्म' (यह सारा का सारा ब्रह्म या आत्मा ही है)। जैसी उक्तियों में इस सर्वात्मवाद का अनुकरण है। इस सत्य को स्वीकृत करने पर मनुष्य यह मानने को बाध्य हो जाता है कि अन्य व्यक्तियों में या अन्य प्राणियों में भी जो दुःख या वेदना घटित होती है वह अपनी वेदना के समान है या अपनी ही वेदना है। इस बात को आत्मसात करने पर व्यक्ति, अहिंसा का पालन करने के लिए उद्यत हो जाता है। 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसी संकल्पनाएं इसी सर्वात्मवादी चिंतन से बह निकली हैं। भारतीय जनता इसी वाद की प्रेरणा से हमेशा हिंसा से दूर रहने के इच्छुक है। दुनिया में अन्य देशों के लोग बहुधा साम्राज्य स्थापित करने के लिए इतिहास के किसी भी मोड़ पर उत्सुक जब दिखायी देते हैं तो भारत की जनता में ऐसी उत्सुकता कभी दिखायी नहीं दी। उसने हिंसालुता से हमेशा दूर रहना चाहा है। स्वतंत्रता संग्राम में भी अहिंसा के रूप में यह भावना साकार दिखायी देती है। वस्तुतः महात्मा गाँधी के हथियारों मे यह अहिंसा एक अमोघ शस्त्र रही है। यदि यह सर्वात्मवादी चिंतन विश्व में सर्वव्याप्त किया जाये तो जगत् में बम वगैरह घातक पदार्थों का निर्माण हमेशा के लिए बंद हो जाएँगे, युद्ध और अन्य प्रकार के झगड़े भी बहुत कम हो जाएँगे। दुनिया में गाँधी जैसे महामानव उत्पन्न हो जाएँगे।

भारतीय जन जीवन में जीवन मूल्यों के प्रसारण में भी भाषा साहित्य का महत्त्वपूर्ण हाथ है। ' सत्यं वद (सत्य ही बोलो) धर्मं चर' (धर्म का आचरण करो) ' मातृदेवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव' इत्यादि कई व्यक्ति- गुणों को उत्पन्न करने की चेष्टा की जाती है। ये वाक्य वैदिक साहित्य से ही उद्धृत हैं। गुरुकुल की शिक्षा समाप्त करके अपने घर जाने के लिए तैयार होने वाले शिष्य को दिए जाने वाले उपदेश ये हैं। दीक्षान्त उपदेश भी उसे कह सकते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद्, प्रसिद्ध उपनिषदों में एक है। इस उपनिषद् में जीवनोपयोगी और भी बहुत सारे उपदेश हैं। आचार्य अपने शिष्य को यह भी उपदेश देते हैं कि हमारे भी (आचार्यों के भी) अच्छे कर्मों का ही तुम्हें अनुकरण करना चाहिए। (यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नोइतराणि) ऐसे उपदेश हमेशा श्रेष्ठ व्यक्तियों को बनाने वाले होते हैं। गीता के आचार्य अन्त में अर्जुन को यह उपदेश भी देते हैं कि मेरे उपदेशों पर सोचकर, विमर्शनात्मक ढंग से निरीक्षण करके जो तुम्हें उचित लगे उन्हें ही पालन करना- " विमृश्यैतदशेषेण पथेच्छसि तथा कुरू" (गीता अध्याय 18 श्लोक 63) व्यक्तित्व विकास के लिए तथा शिष्य में आत्मविश्वास भरने के लिए ये उपदेश बड़े सहायक हैं। गुरु-शिष्यों की परंपरा भी भारतीय संस्कृति का चेतनापूर्ण अध्याय है। इन सबसे जगत् में संघर्ष का होना रोका जाता है। भारतीय संस्कृति का और एक महत्त्वपूर्ण संदेश जिसका प्रचार विश्व में करना उपादेय होगा। वह कर्मफल सिद्धान्त है। मनुष्य जो अच्छे और बुरे कर्म करता है उसका फल अवश्य ही उसे अपने जीवन में भोगना होगा। अच्छे कर्मों से, शुभ कर्मों से शुभ परिणाम ही होते हैं और पाप-कर्मों से प्रत्येक को बुरा फल ही अवश्य भोगना पड़ता है, उसके लिए कितने ही जन्म क्यों न ग्रहण करने पड़े। ये जन्म

मनुष्य के रूप में ही होना अनिवार्य नहीं है। अन्य प्राणियों में से किसी भी रूप में पैदा होना भी पर्याप्त है। महाभारत के ' स्त्री पर्व' में बताया गया है- " शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा कृतं लभति सर्वत्रा नाकृतं भुजयते क्वचित " (महा. स्त्रीपर्व. 4-36) इसका तात्पर्य यह है कि जीवन में सुख या दुःख भोगने का कारण पहले किये हुए शुभ या अशुभ कर्म ही हैं। शुभ कर्मों का आचरण करने वाले को शुभ परिणाम और बुरे कर्म करने वाले को दुःख फल ही प्राप्त होंगे। उसी पर्व में अन्यत्र यह भी कहा गया है कि पूर्वकृत कर्मों के फल सोते समय भी, जागृत होने पर भी, खड़े होते समय भी और दौड़ते समय भी मनुष्य का पीछा करते हैं। उसमें से अलग रहना किसी भी व्यक्ति के वश में नहीं है। (धृतराष्ट्र को विदुर द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों में प्रस्तुत भाग है।) "शयानं चानुशेते हि तिष्ठन्तं चानुतिष्ठति अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृतं नरम्" (महा. भा. स्त्री पर्वम् 4-32) यह कर्मफल सिद्धान्त वैदिक संस्कृति द्वारा प्रसारित अमोघ सिद्धान्त है जो जगत् में संघर्ष और युद्ध को निस्सन्देह कम कर देगा। वैदिक साहित्य से प्रवाहित सन्देशों के विषय में ही ऊपर थोड़े से उद्धरण देकर विश्व शान्ति के उपादेय तत्व उदाहृत किये गए हैं। भारत के प्राचीन लौकिक साहित्य में भी इन उपर्युक्त सांस्कृतिक सन्देश भरे पड़े हैं। भारत में हमेशा ही पेड़, पौधे के प्रति जैसा अपनापन दिखाया गया है उसी का उदाहरण ' अभिज्ञान शाकुन्तलम' शीर्षक महाकवि कालिदास के नाटक में है। उस नाट्य कृति के चतुर्थ अंक में पति के घर जाने के लिए तैयार होने वाली शकुन्तला का दृश्य प्राप्त होता है। पिता कण्व के द्वारा उस आश्रम में पालित पेड़-पौधे का संबोधन करते हुए यह कहा जाता है- " हे वनदेवताओं, तुम्हारी प्रिय सखी अपने पति के घर आज जा रही है। तुम लोग इसकी अनुज्ञा या अनुमति दे दो। मुझे मालूम है तुम्हारे मन में शकुन्तला का चला जाना अत्यन्त दुःखकारक है, क्योंकि तुम्हारे प्रति यह ऐसा ही स्नेह किया करती रही है। तुम को जल दिए बगैर जो खुद पानी नहीं पीती और जो अपने अलंकार के लिए भी तुम्हारे किसलयों को नहीं तोड़ा करती और तुम लोगों के प्रथम पुष्पित होने का दिन जिसके लिए बहुत उत्साह और उत्सव का दिन है, तो भी अब तुम्हें शकुन्तला को जाने की अनुमति प्रदान करनी ही चाहिए। " विश्व की संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति का यह उत्कृष्ट स्वभाव अत्यन्त प्राचीन काल से सजीव है। दुनिया के विकास में अवरोध डालने वाली कई शक्तियाँ हैं जिनसे जगत् में संघर्ष और घात प्रतिघातमय वातावरण उत्पन्न होने की आशंका बनी रहती है। इसके स्थान पर शान्ति और सामंजस्य उत्पन्न करने के लिए संस्कृतियों का विश्व व्याप्त स्वरूप सहायक होगा। उनमें भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक उपयोगिता है। भारतीय संस्कृति के समान चिरपुरातनकाल से जीवन्त, संजीवनी शक्ति से पूर्ण संस्कृति अन्य किसी भी स्त्रोत से संभव नहीं है। इस कारण मेरी यही हिदायत है कि विश्व शान्ति कायम रखने के लिए भारत की इस समृद्ध संस्कृति के तत्वों का व्यापन ही एक मात्र मार्ग दिखायी देता मत है, यही सत्यदर्शी ऋषि कवियों का भी आदेश लगता है। लौकिक साहित्य में सांस्कृतिक जीवन के और भी भव्य गिरिशिखर दिखायी देते हैं जिनसे मानव मन की सदानीरा सांस्कृतिक जलधाराएँ चल निकली हैं। रामायण भारतीयों का ऐतिहासिक काव्य है जिसमें आत्मत्यागी, सत्यान्वेषी एवं लोकहितकारी एक महामानव का चरित्र वर्णित हुआ है। वास्तव में भारतीय संस्कृति के त्याग, सत्य आदि के आदर्श प्रतिमान उस काव्य के द्वारा खड़े किए गए हैं।

रामचन्द्र अपने समस्त राजाधिकारों से वंचित करके वन को चौदह वर्षों के लिए भेजे गए। लेकिन पिता के निर्देश को प्रसन्नतापूर्वक राम ने शिरोधार्य किया और वन को चले गए। वे ऐसे त्यागी थे कि उनके चेहरे की प्रसन्नता इस बात से जरा भी कम नहीं हुई। चौदह वर्ष मुनिवृत्ति में जंगल में बिताने के बाद जब लौट आए तब लोकहित को मानकर उन्हें राज्यशासन अपने कंधे पर लेना पड़ा। तब लोकहित का पालन भी मुख्य रूप से राम के मन में था। यहाँ पर उन्होंने अपने सत्यपालन का अर्थ लोकहित साधना मान ली है क्योंकि सबसे ज्यादा लोगों का हित जिसके द्वारा होता है वही राम की दृष्टि में बसे बड़ा सत्यपालन है। यही रामराज्य का आदर्श है यह रामराज्य हमारी सांस्कृतिक संकल्पना में आज भी प्रमुख होकर चल रही है।

सन्दर्भ सूची-

1. बिहारीलाल, विश्वनाथ तथा त्रिपाठी, नरेश चन्द्र (2012) "शिक्षा के नूतन आयाम", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा,पृ.- 154-170
2. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2011) "मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.- 162-165
3. पाण्डेय, डॉ. रामशकल व मिश्र, डॉ. करूणाशंकर (2011) "मूल्य शिक्षण", श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ.- 125-137
4. रूहेला, सत्यपाल (2014) ' ' मूल्य शिक्षा : क्या, क्यों, कैसे?" अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.- 220-240
5. शर्मा, डॉ. आर.ए. (2011) "मानव मूल्य एवं शिक्षा", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.- 396-397
6. सिंह, आर. पी. (2013) ' ' उभरते भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका" अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.157-166
7. शर्मा, आर. ए. (2005) ' ' अध्यापक शिक्षा", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ.- 427-440
8. शर्मा, सरोज (2007) ' ' उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा", श्याम प्रकाशन, जयपुर, पृ.- 26-27

व्यंग्य

राजेन्द्र कुमार सिंह
लिलीआर्केड,फ्लैट नं-101
मेट्रो जोन बस स्टैंड,महाजन हास्पिटल समोर नाशिक-422009,(महाराष्ट्र)
ईमेल rajendrakumarsingh4@gmail.com

"हमारे पड़ोस के इंटरनेशनल बाबा"

जब से भारत जोड़ो यात्रा शुरू हुआ है हमारे पड़ोसी इंटरनेशनल बाबा इस यात्रा को देखकर काफी बिदके हुए हैं। कटु फब्तियां कसते हुए उसके रूख पर रोष व्यक्त करते रहते हैं। अब आप कहिएगा कि ये इंटरनेशनल बाबा कौन है?क्या बिगड़ी बनाने वाले, तकदीर को सवारने वाले,उसे लाइन पर लाने वाले पहुंचे हुए फकीर हैं।तो ऐसा कुछ भी नहीं है बाबा। एक कहावत है-एक लंबे अंतराल के पश्चात हाल-चाल जानने हेतु किसी बुजुर्ग के होने ना होने के बारे में आजू-बाजू वालों से तो उसमे से एक ने बताया पूछा उनके बारे में तो वह सज्जन बोले-तो आप उनके बारे में पूछ रहे हैं वह तो कब का ऊपर चले गए।मैं चौंका,ऊपर चले गए!मतलब उनका देहावसान हो गया।इस तरह की बहुत सारी बातें बिखरी पड़ी हैं।जैसे-उड़ान भर दिए,कोरम पूरा हो गया था,टर्म तो पूरा हो ही गया था।

इसी तरह इंटरनेशनल बाबा है।पृथ्वी अपना देश जो,लोक है। इंटरनेशनल यानि उपर परलोक।परलोक गमन।यह इंटरनेशनल बाबा यानि सफर के आखिरी ढलान पर हैं।इसलिए नेशनल से इंटरनेशनल उड़ान भरने के कगार पर हैं।

हमारे इंटरनेशनल बाबा का नाम तो नहीं मालूम।लेकिन बाबा जिंदा दिल इंसान हैं।बाबा सरकारी नौकरी में थे।सरकार के साथ साठ साल करके फायर,अब बीस साल से रिटायर का सुख भोगते हुए रिसोलिंग टायर हो गए हैं।क्योंकि रिसोल टायर का कोई भरोसा नहीं वहअपनेअवधि को पार कर बोनस पर चल रहे हैं।कब ऊपर कूच कर जाएं,कोई ठीक नहीं।कब फट जाएं, टपक जाएं या लुढक जाएं। भारत जोड़ो यात्रा में एक भाई ने अपनी बहन को किया किस्,तो इंटरनेशनल बाबा को उभरी ऐसी टीस कि कुछ अनाप-सनाप बकना शुरू कर दिए।अल्फाज तो वही था लेकिन धुन में घुन लगकर पैंतीस साल वाला जुनून पैदा कर गया इनकेअंदर।उम्रदराज होकर भीअपने सोच को इतना घटिया व गंदा करके रख दिए हैं कि दूसरे को ऐसे जहमतिए को देख-देखकर मन विदीर्ण हो जाता है।एक दूसरा महाशय तो यहां तक कह दिए थे कि हम लोग पचास साल तक रक्षाबंधन वाला दृश्य देखने के लिए व्याकुल थे।इसका मतलब ये हुआ कि इन्होंने जीवन को दूसरे को देखने परखने में ही गुजार दिया। जबकि अगले को इनके बारे में जानने सुनने में न तो कोई रूचि थी और न ही इनके साथ कोई लगाव रखा।अब ये महाशय धीरे-धीरे कूल होकर दूसरों के प्रति ऊल-जुलूल खुलकर बोलते हैं।उम्र केआखिरी पड़ाव पर ऐसे शब्दों पर शोध किया तो इनकाअभी यौवन काल चल रहा है ऐसा मुझे बोध हुआ। क्योंकि सिरा कमजोर पड़ते उबाल मार ही देता है।बवाल मचा देता है।ऐसे लोगों का समाजिक दिशा निर्देश सख्त नहीं होता।ऐसे लोग समाज के गिरे हुए कमबख्त होते हैं।कब्र में पांव लटका है। लेकिनआज भी इनका दिमाग सटका है।धन्य हैं हमारे इर्द-गिर्द के इंटरनेशनल बाबा।

"युद्ध"

सर्द रात्रि में
काठ हुआ
जाता है मानव।
अंतरियां
भीतर को
भींच रखी हैं।
बजते दांत।
कठुआई
पलकों पर
जमता नीर।
जरा सी
ताप देख
उम्मीद जगाता।
नहीं उठा पाता
अपनी ही
काया।
क्या है माया।
दाना जाए
भीतर
पोषित हो
अंतः की
अग्नि।
ठंढ़ी हथेली
अपनी ही
पेट में दबाकर
चलनें लायक
बनाता है
कि वह
ठंड से
लड़ता जाता है।
पेट में ही जमाकर
पेट की भूख।
जमाकर
धमनियों का
रक्त भी
वहीं कहीं
और अब
छोड़ देनें को
प्राण का
दामन
दम भर
चीख भी
कहां पाता है।
वह ठंढ से
लड़ नहीं पाता है।

कंचन झा
अलवर ,राजस्थान

कहानी

"एक मुलाकात"

अंतिम सप्ताह दिसंबर का चल रहा है । चार दिन की केजुअल बाकी है। यदि जेब में मनीराम होते तो मजा आ जाता । दोस्तों की ओर से भी तरह-तरह के प्रस्ताव मिल रहे थे। परंतु सभी को कोई न कोई बहाना बनाकर टाल देता हूं, बिना पैसों के किया भी क्या जा सकता था। अत: आफिस से चिपके रहकर समय पास करना ही श्रेयस्कर लगा।

31 दिसम्बर का दिन, पहाड़ जैसा कट तो गया पर शाम एवं रात्री कैसे कटेगी यह सोचकर दिल घबराने-सा लगा। उडऩे को घायल पंछी जैसी मेरी हालत हो रही थी। अनमना जानकर पत्नी ने कुछ पूछने की हिम्मत की, पर ठीक नहीं लग रहा है, कहकर मैं उसे टाल गया।

खाना खाने बैठा तो खाया नहीं गया। थाली सरका कर हाथ धोया। मुंह में सुपारी का कतरा डाला। थोड़ा घूम कर आता हूं, कहकर घर के बाहर निकल गया।

ठंड अपने शबाब पर थी। दोनों हाथ पतलून की जेब में कुनकुना कर रहे थे। तभी उंगलियों के पोर से कुछ सिक्के टकराए। अंदर ही अंदर उन्हें गिनने का प्रयास करता हूं एक सिक्का और दो चवन्नियां भर जेब में पड़ी थीं। सोचा एक पान और एक सिगरेट का सेजा जम जायेगा। पान के ठेले पर चिर-परिचितों को पाकर आगे बढ़ जाता हूं। दूसरे पान के ठेले पर भी यही नजारा था। एक के बाद एक पान के ठेलों को पीछे छोड़ता हुआ काफी दूर चला आया था।

उद्विग्न मन लिये, मैं सड़क के किनारे-किनारे चला जा रहा था। तभी मैंने महसूस किया कि कोई व्हीकल मेरे पीछे आ रही है। तनिक पलट कर देखा। एक चमचमाती जेन ठीक मेरे पीछे रेंग रही थी। मैं और थोड़ा हटकर चलने लगता हूं कि वह आगे निकल जाए, पर अब वह मुझसे सटकर चलने लगी।

सहसा गाड़ी में से एक हाथ निकलता है और मेरी कलाई को मजबूती से थाम लेता है। इस अप्रत्याशित घटना से मैं हड़बड़ा जाता हूं। मेरी पेशानी पर पसीना चू उठता है। मैं कुछ समझूं इससे पूर्व ही वह दरवाजा खोलकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसका इस तरह ऐंठकर खड़ा हो जाना मुझे ड्रेकुला की तरह लगा। मैं अंदर ही अंदर बुरी तरह से कांप उठा। उसने बड़ी बेतकल्लुफी से मेरे कंधे पर अपने भारी भरकम हाथ की धौंस जमाते हुए कहा, " क्यों... क्या हालचाल हैं। " उसकी कड़कदार आवाज सुनकर मेरी तो जैसे घिग्गी ही बंध गई थी। कुछ कहना चाह भी रहा था, परंतु जीभ जैसे तालू से चिपक गई थी और शब्द आकर गले में फंस गए थे। मेरी आंखें बराबर देख रही थीं। वह मंद-मंद मुस्करा रहा था। उसकी यह मुस्कान मुझे बड़ी वीभत्स सी लग रही थी।

प्रत्युत्तर न पाकर, उसने फिर वही प्रश्न दागा। कड़ाके की ठंड में मैं पसीना-पसीना हुआ जा रहा था। आंखें पथरा-सी गई थीं और सोचने- समझने की शक्ति एकदम गायब हो गई थी। मैं बुत बना उसके सामने खड़ा था।

'अरे यार, तेरा तो नर्वस ब्रेक डाउन हो गया लगता है, मैं कोई भूत-वूत नहीं बल्कि तेरे बचपन का दोस्त हूं। बरसों-बरस बाद तू मुझे दिखाई दिया सो सोचा कि कुछ सरप्राईज दूंगा, गौर से मेरी तरफ देख तो सही।Ó

उसके शब्दों में अब आत्मीयता की खुश्बू आ रही थी, जिसने संजीवनी का काम किया। मैं अब होश में आने

गोवर्धन यादव

103, कावेरी नगर,छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 480001

goverdhanyadav44@gmail.com

लगा था, बल्कि अब नॉर्मल हो गया था। मैंने उसके चेहरे को पहचानने की कोशिश की पर असफलता ही हाथ लगी। पहचान लायक कोई भी अवशेष उसके चेहरे पर नजर नहीं आ रहे थे। एक हारे हुए जुआरी की तरह मेरी हालत हो गई थी।

' वेरी सॉरी यार , मैं तुझे सचमुच नहीं पहचान पाया। ' मैंने बिना किसी लाग-लपेट के अपनी असमर्थता उस पर प्रकट कर दी।

' हां यार मुझे बड़ी हैरानी हो रही है कि तू मुझे पहचान नहीं पाया। सुन, तेरे बारे में मैं सब कुछ बताता हूं। तेरा नाम गोवर्धन यादव है न? तू मुलनाई का रहने वाला है न? तुम डाक विभाग में कार्य करते हो न? तुमने छिन्दवाड़ा में अपना मकान बना लिया है न? "उसने और भी ढेरों बातें मेरे बारे में बतलाईं।

उसने सचमुच ही मेरा सारा कच्चा चिठ्ठा खोलकर रख दिया था। निश्चित ही वह मेरा पूर्व परिचित रहा होगा। तभी तो उसने इतनी सारी बातें मेरे बारे में बतलाईं। इतना सब कुछ घटित होने के बाद भी मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। मेरी नजरें झुक आईं और निराशा

का भाव मेरे चेहरे पर उतर आया था। उसने मुझे भरपूर नजरों से घूरा और जोरदार ठहाका लगाया। और मुझ से कहने लगा, 'अरे यार, इसमें इतना परेशान होने कि क्या बात है। अब तुम पूरे समय मेरे साथ रहोगे। तुम खुद-ब-खुद मुझे जान जाओगे। फिर भी यदि नहीं पहचान पाओगे तो मैं तुम्हें खुद ही अपने बारे में बता दूंगा। चल आ बैठ।Ó उसने शालीनता से कार का दरवाजा खोला। मैं यंत्रवत्ां गाड़ी में जा धंसा। गाड़ी का स्टेयरिंग सम्हालते हुए अपने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं एक सिगरेट ले लेता हूं। उसने भी एक सिगरेट अपने ओठों से दबाते हुए लाईटर जलाया। लाईटर के जलते ही एक जल-तरंग की आवाज थिरकने लगती है। सिगरेट जलाते हुए मैंने एक लंबा कश खींचा। तब तक वह गाड़ी स्टार्ट कर चुका था।

गाड़ी अब एक आलशीन बगीचे में से होते हुए गुजर रही थी। जगह-जगह फव्वारे रंग-बिरंगी रोशनी में थिरक रहे थे। बगीचे में लाईटिंग भी बड़े करीने से की गई थी। तभी कार एक आलीशान महल के सामने जाकर रुकती है। वह हार्न बजाता है। एक सूटेड-बूटेड वाचमैन आकर कार का दरवाजा खोलता है। वह कार के बाहर आ जाता है। उसके बाहर आते ही वाचमैन ने जोरदार सैल्यूट मारा। अब वह आगे बढने लगता है। वाचमैन ने आगे बढ़कर कांच का आदमकद दरवाजा खोला। अब वह अन्दर प्रवेश करने लगता है। मैं यंत्रवत्ां उसके पीछे हो लेता हूं।

अंदर पहुंचते ही मुझे ऐसा लगा कि मैं जन्नत में आ गया हूं, जगह-जगह कलात्मक पेंटिंग्स लगी हुई थीं। झाड़-फानूसों से रोशनी बिखर रही थी। दीवारों से सटकर आदमकद अप्सराओं की नग्न-अर्धनग्न मूर्तियां मादकता बिखेर रही थी पूरे फर्श पर बेशकीमती कालीन बिछा हुआ था। हॉल में हल्की गुलाबी-सी रोशनी छाई थी। हर एक टेबल पर प्रेमी-प्रेमिकाएं अस्त-व्यस्त मुद्राओं में बैठे चियर्स कर रहे थे। हल्की धीमी आवाज में कोई इंगलिश-टयूनिंग माहौल में उत्तेजना भर रही थी। कई जोड़े डांसिंग फ्लोर पर एक दूसरे की कमर में हाथ डाले थिरक रहे थे। एक जवान बाला थिरकती जाती थी और खाली होते पैमानों को भरती जा रही थी।

अब वह इठलाती, बलखाती मेरी ओर बढ़ी चली आ रही थी। आगे बढ़कर उसने गिलास मेरे ओठों से लगा दिया। उसके अपने चेहरे पर चिपकी मुस्कुराहट, अस्त-व्यस्त कपड़ों से झांकते गदराए यौवन ने मेरे अंदर एक सनसनी सी पैदा कर दी। मैंने उसके नाजुक हाथों से गिलास ले लिया और एक ही सांस में पूरा उतार लिया। वह एक के बाद एक गिलास मेरी ओर बढ़ाती चली गई। मुझे बिल्कुल ही नहीं मालूम कि मैं कितने गिलास चढ़ा चुका होऊंगा। अब उसने मेरा हाथ थाम लिया और अब वह डांसिंग फ्लोर की ओर बढने लग जाती है। डांसिंग फ्लोर पर मैं न जाने कब तक डांस करता रहा। मुझे याद नहीं और न ही वह कथित मित्र मुझे याद आया।

सहसा माईक पर एक स्वर उभरता है। " लेडीज एण्ड जेन्टलमैन, " थिरकते हुए जोड़े थम जाते हैं। प्राय: सभी की निगाहें डायस की ओर मुड़ जाती हैं। वह कोई और नहीं मेरा अपना कथित मित्र था। फ्लैश लाइट में वह हीरे का सा जगमगा रहा था। उसने मौन भंग करते हुए मेरा नाम लेकर पुकारा और कहा कि मैं डायस पर पहुंच जाऊं। बहके हुए कदमों से मैं वहां पहुंच जाता हूं।

बड़े मनोहारिक तरीके से उसने मेरा परिचय दिया। कहा, 'दोस्तों... आप इन्हें नहीं जानते। ये एक अच्छे गीतकार हैं, तथा गायक भी हैं। इनके अंदर एक से बढ़कर एक अनमोल खजाने छुपे हुए हैं और जब ये गाते हैं तो लगता है कि कोई झरना आकाश से उतर रहा हो और मीठी स्वर लहरी बिखेर रहा हो पर..... अचानक उसकी सूई "पर " पर अटक जाती है। लोग अपनी सांसों को रोककर आगे कुछ सुनना चाह रहे हैं। पर वह एक लंबी चुप्पी साध लेता है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने कहा, " हां तो दोस्तों, मैं तो इनके बारे में एक चीज बतलाना तो भूल ही गया। जानते हैं, इनकी जेब में अब भी एक सिक्का और दो चवन्नियां पड़ी हैं। वर्ष के अंतिम दिन, ये बेचारे जश्न नहीं मना पा रहे थे। रास्ते में इनसे अनायास ही मुलाकात हो गई और मैं इन्हें यहां उठा लाया। शायद मैंने ठीक किया वरना आज महफिल बिना गीत-संगीत के सूनी-सूनी सी लगती। "

उसके उद्ांबोधन को सुनकर मेरा सारा नशा जाता रहा। मुझे ऐसा लगा जैसे स्वर्ग से उठा कर धरती पर फेंक दिया गया होऊं। अपने आप को संयत करते हुए मैंने माईक सम्हाला और कहा, 'मित्रों, मैं अभी तक इस व्यक्ति को नहीं जान पाया जो मुझे उठाकर यहां लाया। इन्होंने अपनी ओर से दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। और मैंने इन्हें एक विश्वास के साथ गले लगाया था। यह घटना ज्यादा पुरानी नहीं है अपितु चंद घंटों पहले की है। इन्होंने दोस्ती को ऐसे झटक दिया जैसे धूल पडने पर आदमी अपने कपड़े झाडने लगता है। अब मैं इन्हें दोस्त कहूं या दुश्मन। खैर जो भी हो, इन्होंने एक विश्वास तोड़ा है, एक दिल तोड़ा है और जब दिल टूटता है तो एक दर्द भरा गीत मुखरित होता है—

तुम कहते हो गीत सुनाओ 'तो कैसे गाऊं और गवाऊं रे।
मेरे हिरदा पीर जगी है कैसे गाऊं और गवाऊं रे।
आशाओं की पी पीकर खाली प्याली,मैं बूंद-बूंद को तरसा हूं,
उम्मीदों का सेहरा बांधे, मैं द्वार-द्वार भटका हूं ,
तुम कहते हो राह बताऊँ तो कैसे राह दिखाऊं रे।
मन एक व्यथा जागी है। कैसे हमराही बन जाऊं रे।
रंग-रंगों में रंगी नियति नटी क्या-क्या दृश्य दिखाती है,
पांतो की हर थिरकन पर मदमाती-मस्ताती है,
तुम कहते हो नाच दिखाऊं तो कैसे नाचू और नचाऊं रे।
मनमयूर विरहा रंजित है, कैसे नांचू और नचाऊं रे।
दिन दूनी सांस बांटता सपन रात दे आया हूं,
तन में थोड़ी सांस बची है, मन में थोड़ी आस बची है,

तिस पर तुमने सुरभि मांगी तो कैसे-कैसे मैं बिखराऊं रे।
तुम कहते हो गीत सुनाओ तो कैसे गाऊं और गवाऊं रे।

गीत गाते-गाते मैं लगभग रुआंसा हो गया था। अब फफक कर रो पड़ता हूं, तमाम लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, मैं नहीं जानता और न ही जानना उपयुक्त समझा। जिस मजबूती के साथ उसने मेरी कलाई थामी थी, उससे कहीं दूनी ताकत से मैंने उसका हाथ पकड़ा और लगभग घसीटता हुआ उसे बाहर ले आया। बाहर आते ही मैं वाक्ंयुद्ध पर उतर आया था।

'मित्र, तुमने मुझे जिगरी यार कहा; दोस्त कहा, मेरे गले में हाथ डाला और चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर यहां ले आए। तुमने मेरा स्वागत बड़ी गर्मजोशी के साथ किया। तुमने सबकी नजरों में मेरा मान बढ़ाया तो दूसरी ओर, तुमने मेरे साथ बड़ा ही भद्दा मजाक भी कर डाला। तुमने मुझे जलील किया। आखिर क्यों?Ó मैं एक सांस में न जाने कितना कुछ बोल गया। परंतु वह न जाने किस मिट्टी का बना था कि उस पर कोई असर ही नहीं हो रहा था। बल्कि मेरे द्वारा अपमानित किए जाने के बावजूद उसके चेहरे पर पूर्व की तरह मंद-मंद मुस्कान खेल रही थी। उसने न तो अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की और न ही प्रयास किया। बल्कि मेरे आंखों में आंखें डालकर उसने कहा, 'अच्छा मित्र तो तुम मेरा नाम जानना चाहते हो! तो सुनो मेरा नाम वक्त है। लोग मुझे समय के नाम से भी जानते हैं। मैं सन् 2022-23 का मिला-जुला रूप तुम्हारे सामने खड़ा हूं। बस कुछ ही मिनटों के बाद मैं तुमसे विदाई ले लूंगा और फिर तुम्हारे सामने एक नूतन वर्ष के रूप में-एक नई सदी के रूप में प्रकट हो जाऊंगा। सारी दुनिया एक नई सदी का बेसब्री से इंतजार कर रही है। पर मित्र जाते-जाते मैं तुमसे एक पते की बात कहे जा रहा हूं। सच कहूं तुम मेरे अब भी मित्र हो। मैंने तुम्हें हकीकत के दर्शन कराए हैं। एक वास्तविकता से परिचित कराया है। और तुम हो कि बुरा मान गए। मेरी एक बात हमेशा ध्यान में रखना, जिस तरह तुम अपने गीतों में नये-नए रंग भरते हो-ठीक उसी की तरह अपने जीवन में ऐश्वर्य का भी रंग भरो। जी तोड़-ईमानदारी से मेहनत करो और उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ चलो। खूब धन कमाओ। बलशाली बनो, ताकि तुम कंचन और कामिनी का जी भरके उपभोग कर सको। धन एक ऐसी शक्ति है जिससे तुम अध्यात्म के शिखर पर भी जा सकते हो। सिद्धार्थ किसी भिखारी के घर नहीं जन्मे थे बल्कि वे राजा के बेटे थे, राजकुमार थे। धन बल से तृप्त होने के बाद ही वे बुद्ध कहला पाए। मैं भी उन्हीं का साथ देने को तत्पर रहता हूं जो सचमुच में कुछ बनना चाहते हैं। अच्छा दोस्त अब मैं विदा ले रहा हूं सारी दुनिया मेरी बाट जोह रही है। "

सारा शहर पटाखों की गूंज से थिरक उठा। एक आतिशबाजी रंग-बिरंगी फुलझड़ियां बिखेरती हुई आसमान की तरफ उठती है। सहसा मेरा ध्यान उस ओर बंध जाता है तभी एक जोरदार धमाका होता है। काली अंधेरी रात में, नीले आकाश के बोर्ड पर एक-एक शब्द क्रमश: उभरते चले जाते हैं—'

हेप्पी न्यू ईयर, 'वेलकम न्यू ईअर, 'स्वागतम नई शताब्दी।

नजरें झुका कर देखता हूं वह गायब हो चुका था।

काव्य

ओटेरी सेल्वा कुमार

अवधि

यहाँ कुछ नहीं
अपरिवर्तनीय नहीं...
सब कुछ
बदलाव के लिए
हालांकि यह उचित है...
वह परिवर्तन
हम निराश हैं
यह नहीं होना चाहिए...
यहाँ जो महत्वपूर्ण है वह यह है...
इसलिए...
कोई नहीं बदलता
वे पसंद करने से इनकार करते हैं
तो क्या हुआ अगर आप मना करते हैं?
परिवर्तन है
यह आता जाता रहता है
क्योंकि...
परिवर्तन है
न केवल हमारे हाथ में
बल्कि समय के हाथ में भी है
समय प्रकृति है
यह हाथ में है...
वे परिवर्तनों पर हंसते नहीं हैं
कोई रोना नहीं

वो तितलियाँ

तितलियों
प्यार करने के लिए
फूल ही नहीं
दिल खोलो और प्यार करो
यह प्राकृतिक संसार
रंगों का
सुंदरता में पंख
तितली
हंसते हुए
भगवान की तरह
सुंदर...।
तितलियों
वे सुंदर हैं
एक फूल की तरह
क्योंकि यह मुलायम होता है
न सिर्फ़...
क्योंकि वे फूल हैं
बहुत बहुत सुंदर..

कहानी

"बैरी भये पालनहार"

गोपाल राय उम्र के उस पड़ाव पर आ गये थे जहाँ से आगे बढ़ने के लिए उन्हें स्वयं सहारे की आवश्यकता महसूस हो रही थी। पत्नी पहले ही बिस्तर पकड़ चुकी थी, ऐसे में खेत-खलिहान को देखने वाला कोई शेष नहीं बचा था। जब तक शरीर चलता रहा, गोपाल राय खेत-खलिहान संग अपने दोनों बेटे विजय और अशोक की शिक्षा-दीक्षा में कोई व्यवधान नहीं पड़ने दिया। परिणाम हुआ कि दोनों बेटे शहर में अच्छे पदों पर आसीन हो गये है, लेकिन किसी बेटे को इसकी चिन्ता नहीं कि उनके माँ-बाप गांव में कैसे हैं।

गोपाल राय ने भी कभी इसकी चिंता नहीं की, कि उनकी संतानें उन्हें क्यों नहीं पूछ रही। अपने गांव और खेत-खलिहान में ही मगन रहते। जब दोनों पति-पत्नी शरीर से असहाय हो गये तो उनको भी बेटों की उपेक्षा महसूस होने लगी। जीवन की गाड़ी को खीचना ही था। गांव की बेटी गीता को अपना सहारा बना लिया, जो उन लोगों की सेवा-टहल अपनी मां-पिता समझकर कर रही थी। पर उसके भतीजे ने एक दिन उसे भी साथ लेकर शहर चला गया। गोपाल राय के स्वास्थ्य को देखकर गांव में उनके शुंभचिंतक उन्हें यही सलाह देते कि वह अब घर-जमीन की चिंता छोड़कर बेटों के साथ ही शहर में आराम से रहे। उन लोगों के साथ रहेंगे तो वहाँ वह किसी अच्छे डाक्टर से दवा भी करा सकेंगे। वे लोग नौकरी पेशा वाले है, नौकरी छोड़कर गांव में साथ रह भी नहीं सकते। रही बात गांव के खेत-खलिहान की तो उसे किसी को बटाई पर दे दें, जब स्वास्थ्य कुछ ठीक लगे तो आकर गांव में देख लिया करें।

एक दिन अचानक गोपाल राय की सेहत काफी बिगड़ गयी, तो उनके एक पट्टीदार ने उसकी जानकारी उनके बेटों तक पहुँचा दी। पिता के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलते ही दोनों तत्काल गांव पहुँच गये। पिता की दशा को देखकर उनके स्वास्थ्य से अधिक उन लोगों को यह चिंता सताने लगी कि अगर इनको कुछ हो गया तो गांव की जमीन को निकालना भी एक मुसीबत हो जायेगी। इनके बाद इन जमीनों की सुरक्षा करने वाला भी गांव में कोई नहीं रह जायेगा। अच्छा होगा इनके रहते ही सभी जमीन बेचकर शहर में अच्छा मकान ले लिया जाये। दोनों भाईयों ने मंत्रणा कर यही फैसला किया। अस्वस्थ्य पिता के सम्मुख अपना प्रस्ताव भी रख दिया। गोपाल राय ने उनकी बातों का कोई उत्तर नहीं दिया तो दोनों फिर एक साथ बोल पड़े कि आपके बाद गांव में तो रहने और देखने के लिए कोई बचेगा नहीं। इसलिए अच्छा होगा अभी ही सारी जमीन को निकाल दिया जाये और आप लोग भी हमलोगों के साथ चलकर शहर में ही रहे। गोपाल राय अपनी पुश्तैनी जमीन अपने जीते-जी बेचने के पक्ष में नहीं थे। बोले- मेरे न रहने के बाद तो गांव की सारी सम्पत्ति तुम लोगों की ही होगी। उस समय तुम लोगों के मन में जो अच्छा लगेगा करना। अभी ऐसा न सोचों तो ठीक होगा। जो काम कल करना ही है उसे आज ही करने में क्या हर्ज है-बड़े बेटे विजय ने कहा। बड़े भाई की बातों से छोटे भाई अशोक को भी कुछ बल मिला, कहा-पिता जी अब आपका शरीर तो खुद उनका साथ नहीं दे रहा है। ऐसे में खेत-खलिहान का काम कहाँ से

राजेन्द्र परदेसी

अब तक 18 काव्य, कहानी साक्षात्कार ,निबंध संग्रह पर पुस्तकें-हताश होने से पहले,दूर होता गाँव,सृजन के पथिक,भारत-नेपाल कथा संगम आदि कृतियाँ प्रकाशित .

संपर्क-136,मयूर रेज़िडन्सी , फरीदनगर ,लखनऊ – 226015,मो-9415045584

करेंगे।बेटों की बातों से गोपाल राय को उनके अंदर से स्वार्थ लिप्सा की गंध आ रही थी। इस कारण कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहे थे। पिता को मौन देख और छोटे भाई को अपने साथ देख विजय पुनः बोला-आप बेकार में जमीन का मोह कर रहे हैं। इससे मुक्ति लेकर शांति से हमलोगों के साथ शहर में रहे, दोनों लोग।

गोपाल राय अब स्वयं को असहाय पा रहे थे। शरीर के साथ परिस्थितियाँ भी बेटों के असहयोग के कारण विपरीत दिखने लगा था। ऐसे में लाचारी और बुझे मन से बोले-ठीक है जो तुम लोगों को सही लगे करो। पिता की सहमति मिलते ही दोनों बेटे उन्हें छोड़कर अपने पट्टीदार दौलतराय के पास पहुँचकर जमीन बेचने की बात चलाई तो उन्होंने कहा-बेटा, इतनी जल्दी क्या है। पहले अपने पिता को साथ ले जाकर शहर में किसी अच्छे डाक्टर को दिखाओ, वह स्वस्थ्य हो जायेंगे तो स्वयं फिर गांव आकर जो करना उचित लगेगा करेंगे।पर बेटों की स्वार्थ लिप्सा इतनी बढ़ गयी थी कि उन्हें माँ-बाप के स्वास्थ्य से अधिक जमीन से प्राप्त होने वाले धन की चाह ही दिख रही थी। जिसके सहयोग से भौतिकता की सभी सुख-सुविधाओं को पाने की

सहयोग से भौतिकता की सभी सुख-सुविधाओं को पाने की चाह मन में पाल रखी थी। ऐसे में किसी की और सलाह कहाँ से सुहाती। दोनों भाई समवेत स्वर में बोल पड़े- काका, आप देख रहे है कि बापू अब इस हालत में नहीं है कि ठीक होने पर भी खेती का काम देख सके।बात तो ठीक है, पर जल्दी करोगे तो लोग गरजू समझकर सही दाम भी नहीं देंगे। दौलत राय ने सलाह दिया।

काका, आपकी बात बिल्कुल सही है, पर हमलोग नौकरी-पेशा वाले ठहरे। इसी काम, के लिए बार-बार छुट्टी लेकर तो आ नहीं सकते। बड़े भाई विजय ने उत्तर दिया तो छोटा भाई अशोक ने बात आगे बढ़ाया। काका, गरज हमें है तो लोग लाभ लेंगे ही, यह तो जग की रीति है।'ठीक है, जब तुम दोनों भाईयों ने गांव की जमीन बेचने का मन बना ही लिया तो फिर लेने वालों को तलाशता हूँ।' दौलत राय ने आश्वासन दिया।'जरा जल्दी कीजिएगा', विजय ने कहा। 'ठीक है।' दौलत राय से आश्वासन लेकर दोनों भाई घर आकर पिता को सारी बात बताया, तो उनके मुख से इतना ही निकला-ऊपर वाला यही चाहता है तो तुमलोगांे ने ठीक ही किया होगा।' फिर गांव के वैध जी की दी दवा खाकर लेट गये।

अब पिता से अलग कमरे में बैठकर दोनों भाई जमीन से होने वाले आय का हिसाब-किताब करने लगे। किसके हिस्से में क्या आ सकता है। उसी के अनुसार भविष्य की योजनाएं भी बनाने लगे। पर पिता जल्दी कैसे स्वस्थ्य हो सकते है, इस पर पल भर भी विचार-विमर्श नहीं किया। माँ-बाप के भविष्य को ऊपर वाले के ऊपर छोड़कर अपनी चर्चा समाप्त कर दिया। फिर शाम को पिता के पास जाकर विजय बोला- बापू, हमलोगांे की छुट्टी अब समाप्त हो रही है। कल हमदोनों सुबह लौट जायेंगे। आप अपना ख्याल रखियेगा।बेटे की बात सुनकर गोपाल राय कुछ कहना चाहते थे कि उसके पहले ही छोटा बेटा बोल पड़ा-हमलोग तो यह सोच के आये थे कि अपने साथ ले चलेंगे और वहाँ किसी अच्छे डाक्टर को दिखाये। पर बिना आपके यहाँ जमीन का सौदा कौन करेगा। जमीन जायदाद के कागज पत्तर उन्हें दिखाना होगा। बात पक्की हो जायेगी तो सूचना दीजियेगा। हम लोग तुरन्त आ जायेंगे।

गोपाल राय क्या कहते। वह तो सोच रहे थे कि बेटों के साथ शहर जाकर अपना और पत्नी का ठीक से इलाज करायेंगे। जिससे जल्दी स्वास्थ्य लाभ हो। फिर पत्नी को उनके पास ही छोड़कर कुछ दिनों के लिए गांव आकर यहाँ का भी सब काम देख लेंगे। इसलिए मौन ही रहे।पिता के मुख से कुछ नहीं निकला। तो बड़ा बेटा बोल पड़ा-क्या सोच रहे है। कुछ बोले नहीं। 'क्या बोलूं। छुट्टी खत्म हो गयी है तो तुमलोगों को वापस नौकरी पर जाना ही होगा'- हताश मन से गोपाल राय ने जवाब दिया।

अभी बेटों को वापस गये एक सप्ताह भी न हुआ था कि गाँव से दौलत काका का संदेशा मिला कि जमीन के खरीददार मिल गये हैं। तुम लोग गांव आकर अपने बापू को लेकर रजिस्ट्री आफिस जाकर जमीन खरीददार के नाम करा दो और वहीं पैसा भी प्राप्त कर लो।काका का संदेशा मिलते ही दोनों भाई दूसरे दिन गांव पहुँच गये और उनके सम्मुख अपनी उपस्थिति दर्ज़ करायी। सब मिलकर रजिस्ट्री आफिस गये जहाँ जमीन बेचने और खरीदने की औपचारिकतायें दोनों पक्ष ने पूरा कर लिया। जमीन का मूल्य काका ने बड़े बेटे को सुरक्षा की दृष्टि से सौंपवा दिया।घर आकर दोनों भाईयों ने मंत्रणा की और फिर पिता से बोले। जमीन का इतना पैसा यहाँ रखना सही नहीं होगा। इसलिए कल ही हमलोग शहर लौटकर वहाँ बैंक में जमा कर देते हैं। फिर जैसा आप कहेंगे वैसा किया जायेगा। दोनों ने अपनी बात समाप्त किया कि गोपाल राय बोल पड़े -बेटा, अब तो गांव में कुछ बचा नहीं है। अच्छा होता तुम लोग एक दिन बाद जाते तो हमलोग भी घर किसी को सौंप कर वहीं तुम्हारे साथ शहर चल के रहते।पिता का प्रस्ताव सुनते ही बेटों के सम्मुख विकट समस्या खड़ी हो गयी। दोनों मेे कौन इन लोगों को अपने साथ वहाँ रखेगा। और सेवा-सत्कार करेगा। कोई यह करने को उन्मुख नहीं था। क्योंकि माँ-बाप अब दोनों के लिए बोझ और बैरी लगने लगे थे। इसलिए इससे मुक्ति के लिए दोनों भाई मिलकर कुचक्र रच डाला। पहल बड़े बेटे ने किया- बापू, हमलोगों की छुट्टी समाप्त हो गयी है। कल सुबह जाना ही पड़ेगा। इसलिए आप लोग कुछ दिन यहीं और रूक जायें और इस घर को भी किसी के हाथ बेंच दें। आखिर शहर जाने के बाद आपलोगों को इसकी चिंता सताती ही रहेगी। अच्छा होगा सब से मुक्त होकर एक साथ शांति से शहर में रहे। इतना कहने के साथ उसने पिता की ओर एक कागज पर कुछ लिखकर बढ़ाते हुए कहा-' यह लीजिये हमलोगों का वाराणसी के घर का पता आप लोग गाँव का सब काम समाप्त कर वहाँ आ जाईयेगा। हमलोग वहाँ स्टेशन पर लेने आ जायेंगे। नहीं तो यह पता पूछ कर आपलोग खुद भी आ सकते हैं।'बेटों की प्रतिक्रिया गोपाल राय को असहज कर रही थी पर उम्र की लाचारी ने उन्हें सब कुछ देखने-सुनने के लिए विवश कर दिया। बोले-'ठीक है।'

उत्तर में छोटे बेटे ने कहा-कल सोमवार है हमलोग लौट जायेंगे। आप उसके बाद के सोमवार को ट्रेन पकड़कर वाराणसी आ जाईयेगा। हम लोग स्टेशन पर ही मिल जायेंगे। इतने दिन में यहाँ का काम भी समाप्त हो जायेगा।उम्र के बोझ ने गोपाल राय को एक यंत्र बना दिया था। केवल आदेश पालन करने की ही स्थिति में रह गये थे। अपनी बात करने की स्थिति में नहीं थे। बेटे ने कागज दिया तो उसे बिना देखे और पढ़े रख लिया। वैसे भी उनकी बूढ़ी आँखे साफ पढ़ने की स्थिति में नहीं रह गयी थी। सोचा कि जब वाराणसी जाऊँगा तो बेटों में से कोई-न-कोई उन लोगों को लेने तो आयेगा ही। फिर इसकी जरूरत ही क्या पड़ेगी। जरूरत पड़ भी गयी तो किसी को दिखाकर पता पूछ लूंगा।

सप्ताह बीत गया। गोपाल राय दुःखी मन से घर की चाभी दलपत राय को देकर उन्हीं के सहयोग से स्टेशन पर आकर वाराणसी की ट्रेन पकड़ लिया।

जैसे ही ट्रेन उनके गांव के स्टेशन चली। उनके आँखों में आँसू आ गये। पत्नी ने हिम्मत दिया। यह जानते हुये कि यह धरती शायद अब फिर कभी देखने को न मिले।दूसरे दिन ट्रेन सुबह ही गंतव्य स्टेशन पहुँच गयी। गोपाल राय पत्नी और सामान के साथ प्लेटफार्म पर ही बेटों का इंतजार करते रहे। जब सभी सवारी वहाँ से बाहर निकल गये तो उन्होंने भी यह सोचकर की छुट्टी मिलने में देरी हो गयी होगी। इसलिए जल्दी नहीं आ पाये। अच्छा होगा स्टेशन से बाहर होकर उनका इंतजार करूं। सुबह से दोपहर हो गयी पर बेटों की कोई झलक न मिली तो निराश होकर बेटे के दिये हुए कागज को निकाला और पास ही खड़े एक रिक्शेवाले को दिखाकर कहा-हमलोगों को इस पते पर पहुँचा दो जो किराया होगा ले लेना।

कागज लेकर रिक्शेवाला उसे पढ़ा फिर उन्हें देखकर सवाल किया-बाबा, क्या आपकी कोई संतान नहीं है क्या?'मेरे दो बेटे है, यह पता उन्हीं लोगों का है, जहाँ चलने को कह रहा हूँ।''यहाँ क्या करते हैं?''दोनों अच्छे पद पर है' अफसोश भी जताया, इसके पहले यहाँ आने का कभी मौका नहीं मिला। इसलिए घर नहीं देख पाये पर दोनों एक ही मोहल्ले में रहते हैं।

'बेटों ने ही यह लिखा है।''हाँ, मेरी आँखें पढ़ नहीं पाती नहीं तो मैं ही पढ़कर तुम्हें बता देता।'गोपाल राय की बातों को सुन रिक्शावाला बहुत दुःखी हुआ। वह समझ नहीं पा रहा था कि इन लोगों को कैसे बताये की इसमें घर का पता नहीं कुछ और लिखा हुआ है। उनलोगों को सच बताने का साहस नहीं जुटा पाया। सोचा अच्छा होगा अनभिज्ञ हो जाऊं। इसलिए कागज उन्हें वापस लौटाते हुए कहा-बाबा, मैं अभी कुछ दिनों से ही इस शहर में रिक्शा चला रहा हूँ। इसलिए इस जगह को नहीं जानता।युवां रिक्शावाले की बात सुनकर उन्हें बहुत निराशा हुई पर हताश नहीं हुए। उन्हें एक प्रौढ़ रिक्शावाला दिखा, आशा जगी कि शायद इसे पता हो उसे कागज देकर लिखे पते पर पहुँचाने का अनुरोध किया। प्रौढ़ रिक्शावाला समाज में आये बदलाव और रिश्तों का अवमूल्यन काफी नजदीक से देख रहा था। कागज पढ़ते ही वही सवाल किया जो पहले वाले ने किया था। काका, आपके कोई संतान नहीं है क्या?'क्यों, बेटा?' 'यह पता कागज पर किसने लिखा है?''मेरे बड़े बेटे ने' गोपाल राय ने स्पष्ट किया।

गोपाल राय की बात सुन प्रौढ़ रिक्शेवाले की आँखे शब्दों को पढ़कर फटी की फटी रह गयी। उसे विश्वास नहीं हुआ कि किसी के बेटे ने अपने पिता के लिए यह शब्द लिखे। तभी तो उसने सवाल किया-काका, क्या गाँव आपको अच्छा नहीं लग रहा था जो यहाँ चले आये।'नहीं, बेटा मेरा मन तो गांव छोड़ने को बिल्कुल नहीं था। पर बेटों ने जिद्द किया कि यहाँ आपलोग अकेले कैसे रहेंगे इस उम्र में इसलिए उन्हीं लोगों के कारण यहाँ आना पड़ा।'गांव में तो आपकी खेती-बाड़ी होगी ही। उसे अब कौन देखेगा।''अच्छी खासी थी, पर एक सप्ताह पहले ही बेटों ने सब बेचवा कर पैसों के साथ आ गये थे और मुझे एक सप्ताह बाद इसी पते पर आने को कह गये थे।'गोपाल राय के भोलेपन को देख प्रौढ़ रिक्शावाले को उन पर दया आ रही थी साथ बेटों के मोह में पड़कर नारकीय जीवन जीने की स्थिति आने के लिए उन पर क्रोध भी आ रहा था। पर वह कर भी क्या सकता था। शहर की नारकीय से तो अच्छा होगा यह लोग गाँव लौट जाये। वहाँ कोई न कोई दया दिखाकर अपने घर शरण दे देगा। इन्हीं भावों को लेकर वह प्रौढ़ रिक्शावाले ने पूछा-' काका, आपने पढ़ा इसमें क्या लिखा है?'

'बेटा, आँख से साफ नहीं दिखाता। इसलिए बिना पढ़े रख लिया था। तुम ही बताओ क्या लिखा है।' गोपाल राय ने विवशता दर्शायी तो रिक्शावाला बोला-काका, इस कागज पर लिखा है कि यह दोनों लोग असाहय है। इनकी कोई संतान नहीं है। पत्र पढ़ने वाले अगर इन्हीं किसी वृद्धाश्रम में पहुँचा देंगे तो बहुत धर्म का काम होगा।'कागज पर लिखे शब्द को सुनकर गोपाल राय के नेत्र से आँसू बह निकले। पत्नी तो बेहोश होते-होते बची। अपने कोख से जना इतना बड़ा झूठ बोलेगा। कुछ पल तक दोनों को समझ ही नहीं आया अब क्या किया जाये कुछ देर बात गोपाल राय ने अपने दिल को मजबूत किया और रिक्शावाले से कहा-'बेटा, तुम्हें कष्ट न हो तो कागज पर लिखे स्थान पर हमलोगों को पहुँचा दो। जो भाड़ा होगा हम दे देंगे।''काका, भाड़े की बात आप न करे मेरी सलाह माने तो अच्छा होगा आप लोग गांव लौट जाये। हम आपलोगों को ट्रेन पर बैठा देंगे।' प्रौढ़ रिक्शेवाले ने मानवता दिखाते हुए सलाह दिया।

'नहीं बेटा, अब गांव भी जाकर क्या करूंगा?

''क्यों?'

'बेटों ने तो गांव में भी कुछ नहीं छोड़ा है, मेरे लिए। वापस जाऊंगा तो लोगों को क्या कहूँगा। इसलिए लौट आया कि बेटे अपनी स्वार्थ लिप्सा में इतने गिर गये है कि उन लोगांे ने अपना पता देने की जगह असहाय वृद्धाश्रम पहुँचाने के लिए अज्ञात व्यक्ति को पत्र लिख दिया था।' अपनी विवशता को दर्शाते हुए अनुरोध भी किया-बेटे तुम दयाकर हमलोगों को उसी जगह छोड़ दो जहाँ इस कागज में लिखा है। शेष जीवन हमलोगों का अब वहीं किसी तरह कट ही जायेगा। गांव के लोग भी यहीं सोचेंगे-समझेंगे कि हमलोग अपने बेटों के साथ खुशी से रह रहे है। इस प्रकार यह गलत संदेश गांव के लोगों तक नहीं पहुँच पायेगा कि सम्पन्न बेटों ने स्वार्थ में अपने मां-बाप का सब कुछ लेकर अनाथ वृद्धाश्रम में रहने का भेजवा दिया।

कहानी

(गुजराती से अनूदित दो कहानियाँ)

अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह

अनुवादक एवं परामर्शदाता
अवकाश प्राप्त एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (श्रीमती हर्षाबहन छगनभाई पटेल आर्ट्स & कॉमर्स कॉलेज,करजण.जिला.वडोदरा,) वर्तमान में गुजरात साहित्य अकादमी,गांधीनगर में परामर्शदाता
संपर्क: 2,`शील-प्रिय' विमलनगर सोसायटी,नवाबजार,करजण.391240.जिला वडोदरा, मो-9924567512

(1)

"जड़"

लेखिका: लता हिराणी

सुमी आँगन में बरतन माँज रही थी। धूप में उसकी गौर त्वचा पर सुर्खी फैल गई थी। जान-बूझकर उसने पीठ पर से साड़ी को खिसकने दिया था। सुरेश उसे देखता रहा,उसे बाहों में भर लेने की इच्छा हुई। ओह... दालान में झूले पर बैठी हुई बा....

सुमी बहू की दिनचर्या और सुरेश की बोलचर्या बा ही तय करती थी। उनका तो एक ही काम,दालान में झूले पर बैठे बैठे सारी गतिविधियों पर नजर रखना और परिस्थितियो की लंबाई-चौड़ाई सुनिश्चित करके क़तरब्यौंत करते रहना। बहुत पहले से भगवान का मंदिर कमरे में से दालान में लाने का प्रयास कर रही थी लेकिन यह परेंडी और झूला रुकावट बने हुए थे। झूले के बिना बा को एक क्षण भी चलता नहीं। सुरेश ने बा की आवाज सुनी।

`हाँ बा..."

``वहाँ क्यों खड़ा है? जा, जल्दी जाकर मेरे चश्मे ठीक करने के लिए दिये हैं,आज देनेवाला है। जा और ले आ।"

``हाँ बा," जीभ पर सदैव बसे हुए शब्द बाहर आए।

सुमी शादी करके आयी और रात्रिवेला में दोनों मिलते थे तब उसे तूकार पर आने में कई दिन लगे थे। सुरेश को वह बहुत प्रिय थी, पर उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाए, इस बात को लेकर वह बेचैनी अनुभव करता रहता था। आज तक उसकी नजरों के सामने स्त्री के नाम पर बा थीं। उसे पास-पड़ोस में भी जाने का मौका मिले नहीं, इस बात का भी बा खयाल रखती थीं। सुरेश का काम तो बस पढना और जैसा बा कहे वैसा करना था। बापुजी भी इसमें अपवाद नहीं थे। घर का यही अनुशासन। बेटे की शादी के थोड़े दिनों के बाद ही बा ने वश में कर लिया।

``बहुत कष्ट झेलकर तुझे बड़ा किया है,बेटा! मैं तो तुम्हारी सगी माँ और यह तो पराई लड़की है! गगा(बेटा) मेरी बात को सुनकर गांठ से बांध ले,अन्यथा पछताना पड़ेगा। आजकल की इस लड़की की बातों में आना नहीं। आजकल की लड़कियाँ तो बड़ी नखरेवाली होती हैं। उसे अपने वश में रखना है। समझा!"

``हाँ बा!" सुरेश समझ गया।

रात होते ही वह कड़ाई को ओढ़ने का प्रयत्न करता लेकिन सुमी का कोमल चेहरा देखकर नर्म हो जाता था। बेचारी निरी भोली है,कैसी मीठी बातें करती है! सुमी की कबूतर सी आँखों में वह पंख फड़फड़ाता रहता और सबेरा होते ही बा की आवाज के साथ नीचे आ जाता। बा जो कहे वह सत्य ही है।पांखोंवाला विचार वहाँ रुक जाता और नए नए बने पति की कड़ाई घुटनों के बल
आ जाता था!

बा को कही गई `जयश्रीकृष्ण' वाली आवाज में बदलाव आ जाता और ऊंची आवाज में ज़ोर से बोलता,``सुमी चाय रखी कि नहीं! क्यों इतनी देर लगती है!" उसे कुछ संतोष होता था हर बात में बा की आज्ञा शिरोधार्य करने की अनजान थकान के लिए भी यह सहज सुलभ औषधि थी।

सुमी के लिए यह बात अत्यंत विचारणीय थी कि -`रात होते ही जो प्राप्त होता है, वह पति सच्चा या इस दिन -दहाड़े का? दिन उगते ही ये क्यों इतने आमूलचुल बदल जाते होंगे? बा की मौजूदगी में उसको कप-रकाबी पटकने का मन करता था, पर वह ऐसा नहीं कर पाती थी। वह भगवान का उपकार मनाती कि संतोष इस बात का है,कि यह छोटू तो है! सुमी जब से शादी करके आयी है तब से उसे पड़ोस में रहनेवाले छोटू का संग। दोपहर होते ही वह छोटू का इंतजार करने लगती। स्कूल से वह सीधे ही बस्ते के साथ भाभी के पास पहुँच जाता था।

``भाभी! पहले मुझे सुखड़ी(घी,गेहूं का आटा और शक्कर से बना मीठा व्यंजन) दीजिये।"

सुमी ने दालान में झूले की ओर नजर गड़ाए रखी थी। बा ने सुना तो था पर वे माला लिए ऐसी ही बैठी रहीं। माला जाप करते वक्त वह बोलती नहीं थीं,ऐसा नहीं था। माला हाथ में रखकर सुरेश को लंबा चौड़ा भाषण देतीं और सुमी को भी डांट लेती थीं और बापुजी की भी खबर ले लेती थीं। छोटू ने तो बा की ओर देखा तक नहीं। झूले के पास जाकर बा हाथ फैलाये उससे पहले वहाँ पड़े हुए डिब्बे को उठाकर फटाक से दो टुकड़े उठा लिए।

बा ने नाराजगी जताई -``अपनी औकात में रह।"

``बा दो ही तो लिए हैं।'' कहते हुए भाभी के पास वह दौड़ गया।

हररोज ऐसा ही कुछ होता रहता था और सुमी की नजर में छोटू हीरो बन जाता। शांति अनुभव करने के लिए यही एक ठौर था। छ महीनों में तो सुमी और छोटू पक्के दोस्त हो गए थे। गरम गरम रोटी, मोटी रोटी उतरती जाती थी और माँ-बेटा खाना खाने के लिए बैठ जाते थे। बापुजी तो जब वापस लौटकर आए तब खाना खाते थे। उसकी मोटी रोटी पर भी बा ही घी चुपड़ देती थी। घी की लुटिया और डिब्बा सबकुछ तालेबंद कोठार में रहता था। ``कल की आयी हुई लड़की, वह क्या समझे!''

छोटू को आश्चर्य अनुभव होता था कि भाभी पेट से क्यों मोटी होने लगी हैं? सुमी का दुबला-पतला शरीर और फिर खाने-पीने के मामले में बा के रूखे और कड़े व्यवहार के कारण उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। रात को वह सुरेश से शिकायत करती।

``अभी तो मैं पेट से हूँ फिर भी बा ठीक से खाने नहीं देती हैं।''

सुरेश उसे हौले से सहलाकर कहता,``बस एकबार बच्चा आ जाने दे। देखना फिर बा का
प्यार उमड़ेगा और सबकुछ बदल जाएगा। फिलहाल तो जैसा बा कहे वैसा ही कर।''

धीरे धीरे फरियाद,शिकायत सब शांत हो गया। सुमी चुप हो गई। वह रातवाले सुरेश के पास थोड़ा थोड़ा जी लेती थी। दिवस दरमियान एकदम चुप। बा कुछ भी कहे, पर जवाब देना ही नहीं है। माथापच्ची तो टलेगी। उसका परिणाम यह आया, बा के शब्दों में, कि `निपट जड है। नीरि मूढ!''

सुमी ने पुत्री को जन्म दिया। ``हे भगवान इसने तो पत्थर जना है।'' अब अलग ही पीड़ा शुरू हुई! सुमी को बच्चे के लिए भी कुछ तो कहना ही पड़ता था।

``बा, मोटी रोटी पर तनिक घी छिड़क ही दीजिये ना! यह भूखी बच्ची तो मात्र चूसती ही रहती है, तो....''

``हाँ, अब रानीबा को दूध कम पड़ता है! घी का भाव(दाम) सुना भी है कभी बाप जिंदगी में!''

``थोड़ी तो दया-माया रख ना अब, यह बच्चा दु:खी होता है,'' बापुजी भले ही उनका बोलना निष्प्रभाव रहे फिर भी, कभी तो बोल ही देते थे।

``आप जाकर नारण की दुकान पर बैठो। स्त्रियों के मामले में टांग मत अडाओ।''

सुरेश को साँठी जैसी बेटी से कोई खास लगाव नहीं हुआ था। उसे भी लड़के की चाह थी। उसे भी वह छोटा सा नाजुक पिंड पत्थर लगने लगा था।

सुमी के माइके में माताजी की मनौती थी, पुत्री को प्रसव के लिए नहीं लाया जा सकता।

``माइकेवालों ने तो हाथ झाड लिए हैं। बेटी को बिदा कर दिया सो कर दिया अब पीछे मुड़कर देखते तक नहीं हैं।''-बा ने कहा।

``बा, माताजी की मनौती का सवाल नहीं होता तो मेरे बापुजी मुझे आकर लिवा ले ही जाते। बस सवा महिना होने पर नहा लूँ, उसके बाद मेरी बा मुझे एक दिन भी यहाँ रहने नहीं देगी।''-पत्थर हुई सुमि की आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

``देखे देखे, आए बड़े माताजीवाले, बकवाद बंद कर!''

सुरेश को भी तो बहुत बुरा लगा, पर बा....

छोटू को बहुत इंतजार था, कि भाभी की गुड़िया बड़ी हो जाए और उसे खेलने के लिए ले जाए। छोटी सी बबुड़ी हाथ-पैर हिलाती है तब उसे आनंद और आश्चर्य के साथ देखते रहनेवालों में सुमी के अतिरिक्त यही अकेला था।

लड़की को दस्त लग गया था। सुमी रोती हुई बा को सुनाई दे ऐसे सुरेश के समक्ष आजीजी करती थी।

``अब घरेलु इलाज से ठीक नहीं होगा। मेरी बेटी को डॉक्टर के पास ले चलो। अब उसका
दस्त बेकाबू हो गया है।''

लड़की की देह में वैसे भी कुछ नहीं था। इस बीमारी के कारण उसके हाथ-पैर डोरी जैसे हो गए थे। चार दिन हुए दस्त रुकने का नाम नहीं ले रहा था। फिर भी बा देशी उपचार ही बेहतर की बात को लेकर टस से मस नहीं हो रही थीं। अब तो उसकी चमड़ी भी लटकने लगी थी,परंतु फँकी और चटावन चलता रहा और उस छोटी सी जान ने पांचवें दिन माँ की गोद में आखिरी सांस ली। बा ने कह दिया-`ठीक है,जैसा लेनदेन।'

बात बात में रोने लगती सुमी की आँख काँच की हो गई थी कि क्या? सुरेश घबराया। पास-पड़ोस के लोग मसलहत करते हुए आए। सुमी को अंतिमबार बेटी का मुख दिखाया पर वह तो मानो पत्थर की मूरत! चौबीस दिन के पिंड को कपड़े में लपेटकर जमीन में गाड़कर आ गए। आकर सुरेश नहाकर आँगन में बैठा।

जैसे ही सुरेश को देखा कि ऊंची आवाज में रोते हुए सुमी छाती पीटे जा रही थी और रोये जा रही थी। सारा मुहल्ला सिसकने लगा। इन निर्दय लोगों के लिए सुमी का कल्पांत पेट की जनी की मौत जैसा ही था।

``अरे,कैसे संग-दिल हैं ये माँ और बेटा! अपना खून,अपना ही बीज के प्रति कोई दया-माया नहीं।...''

सुरेश की समझ में नहीं आया, कि अभी लड़की को लेकर निकले तब तक तो सुमी की आँख कौड़े जैसी थी, अब रह-रह कर उसे क्या हुआ ! पर सुमी का आक्रंद उसे भीतर से कोई पिघला रहा हो ऐसा लगा। सारा मुहल्ला जमा हो गया।

``चुप रह,बेटा! यह तो ऊपरवाले ने जैसा लिखा हो,वैसा होता है। अपनी थोड़े ही चलती है? नसीब में होगा तो कल दूसरा बच्चा आयेगा।'' सुमी के कान में बा का डायलॉग टकराया। सुरेश को बा की समझदारी के लिए अहोभाव हुआ। बा भले ही सख्त स्वभावी हो पर उसे भी तो माया है ना!

बापुजी शहर में शांतिकाका के हालचाल पूछने के लिए गए थे। वे वहाँ चार-पाँच दिन रुक गए और यहाँ यह सब हो गया। बापुजी आए और जो घटित हुआ था,उसे जाना। उन्होंने बा से कोई बात नहीं की। अत्यंत दु:खपूर्ण लहजे में उन्होंने सुरेश से कहा,``अब इन्सान बनो तो बेहतर।''

सुरेश ने सुमी को रिझाने के बहुत प्रयत्न किए। अफसोस भी छिपा रहता नहीं था। अब वह ऐसा नहीं होने देगा। दूसरा बच्चा आयेगा तब वह ठीक से दरकार करेगा....पर ऐसे आश्वासन से सुमी अपनी व्यथा को भूल सके ऐसा नहीं था।

सुमी के माता-पिता आकर सुमी को लिवा ले गए। बा ने वायदा किया कि सुमी को पंद्रह
दिन बाद वापस भेज दिया जाए। घर में काम करनेवाला और कोई नहीं है। बा से तो अब काम हो नहीं पाता और फिर अब तो कोई बच्चा भी रहा नहीं है। अन्यथा अलग बात थी।

पंद्रह दिन बीते और संदेश आया: सुमी की तबीयत अभी ठीक नहीं है,अभी नहीं आएगी। महिना बीता, दो महीने बीते, सुमी के आने के कोई आसार नहीं थे। बा से काम नहीं हो रहा था। सुमी के बगैर सबकी परेशानी बढ़ गई थी। समधी को दो-तीन बार संदेश भेजे पर कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिल रहा था।

सुरेश ने अपने दोस्त की बहन, जिसका ब्याह सुमी के गाँव में किया गया था, उसके साथ चिट्ठी भेजी।

``तुम्हारे बिना यहाँ मेरा हाल बुरा है। तुम एकबार आ जाओ। अब तुम्हें मैं दु:खी होने नहीं दूंगा...'' कोई जवाब नहीं।

**

सुबह के ग्यारह बजे थे। दालान तप गया था। नीम के पेड़ की छाया आज तपिश को रोक नहीं रही थी। `राम राम रा म रा मरा....' का माला जाप करती हुई बा झूले पर बैठी रहीं। माला फेर रहा बा का हाथ कांप रहा था या फिर होठों में फड़फड़ाते हुए शब्द! वैसे भी माला फेरते वक्त मन में अनेक योजनाएँ चलती रहती हैं, आज उसमें खटका जुड़ गया था। गर्मी लग रही थी पर अंदर जाने के लिए पैरों में ताकत नहीं अनुभव हो रही थी।

``मेरा क्या है?'' यह रही आपकी बेटी! पूछ लीजिये न! किस बात का दु:ख है? क्या हम उसे खाना नहीं देते? पहनने-ओढ़ने के लिए नहीं देते? और यह मेरा बेटा है! क्या कोई ऐब है उसमें? घर में गिनकर चार लोग! न तो कोई आगे है न कोई पीछे। चार लोगों का काम भी क्या हो सकता है भला! अभी तो अंगूठे जैसी है तो कभी टोकना-कहना भी पड़ता है! उसका कोई कसूर होगा तभी तो कहते होंगे न....'' माला फेरते फेरते बा के होठ फड़फड़ा रहे थे।

``कहो कहो अभी...कुछ कहने को बाकी रहा है तो...'' बापुजी ने झूले के पास होकर गुजरते हुए व्यथित होकर कहा।

बा के हाथ से माला को तनिक फेंक दिया गया हो ऐसा हो गया। घुटने पर हाथ टिकाते हुए ऊँहकार भरते हुए खड़ी हुईं। माला को लेकर उसके ठिकाने पर रखा। कोई और सामान्य दिन ऐसा हुआ होता तो एक घंटे तक बा की वाणी अस्खलित चलती रहती पर आज बा ने चुप्पी साध ली। बापुजी बोलने को तो बोल गए लेकिन बाद में उन्हें भी पछतावा हुआ। भले ही कबुल करे नहीं पर उसके मन में भी खटका तो है ही।

पति की बात का जवाब दिये बगैर बा ने व्यवस्था शुरू कर दी,

छोटू से कह देना कि वह स्कूल से सीधा ही उसके घर चला जाए। भाभी,भाभी कहता
हुआ आए नहीं!''

अभी बा की बात खत्म हुई नहीं कि छोटू बस्ता घुमाता हुआ उछलता-कूदता हुआ आ पहुंचा।

``मेरी बा कहती थी कि आज भाभी आनेवाली हैं।''

`तुम अपने घर जाओ। भाभी आएगी तब तुम्हें बुलाऊँगी, ठीक है!''

उसे बा को सुनने की उसे कहाँ आदत ही थी! वह तो अंदर जाकर छिप गया। चिंता के चलते बा को इस बात का खयाल रहा ही नहीं।

``अभी कल की जायी लड़की ने अकारण ही बात का बतंगड़ बना दिया है!'' बा ने पुन: कहा। पर आवाज में उनका असली मिजाज कहाँ था?

बापुजी अब खामोश रहे। आज सुबह से बा के हाथ से कुछ न कुछ गिरता रहता था। सुरेश को चाय पीने के लिए बुलाया तब भी मानो गुनाह कर रही हों ऐसी दबी हुई आवाज का अहसास हुआ था। बापुजी को तो कुछ देर तक विश्वास ही नहीं हो रहा था, कि वह जो कुछ देख रहे हैं वह सच है या नहीं? पत्नी का रूप उनके लिए अलग ही था। वैसे वजह समझ में आए ऐसी होते हुए भी....

वे हाथ में गीताजी लेकर बैठे पर उनका मन गीताजी में लगा नहीं।

धूप आँगन से गुजरते हुए दालान में पसर गई थी। अंदर कमरे में अंधेरा अनुभव हो रहा था। सुरेश ने आकर खिड़की का पर्दा हटाया और अंदर जाकर बैठा। अब उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह फंदे में फंस गया है। आज तक जैसा बा ने कहा वैसा करता रहा था।

``अभी तो अंगूठे जैसी है, वह क्या समझेगी!'' पर बात बढ़ गई। कहीं सबकी मौजूदगी में फजीहत न हो जाए!'' उसे रह रहकर सुमी की याद आती थी।

मैंने थोड़ा सा काबू जताया पर वह तो बेचारी गऊ थी। कहाँ कभी किसीके खिलाफ गई है! बा ऐसे ही....और यह पहली बेटी आकर मर गई तब बेचारी रो-रोकर आधी हो गई थी पर पता नहीं तब मेरी आँखों पर भी पट्टी बंधी हुई थी!

बा ने कहा था,``ठीक है,पत्थर गया'', उसमें तो मैं भी पाषाण सा जड़ हो गया था।

शान्तिकाका ने यह रिश्ता करवाया था इसलिए आखिरकार उन्हें फिर से समाधान करवाने के लिए जुड़ना

पड़ा। शांतिकाका ने पहले तो सुमी को अलग से बैठाकर बात करने का प्रयत्न किया। सिसकते हुए उसने कहा,

``मुझे बा को लेकर कोई फरियाद नहीं है पर वह कभी तो मेरा पक्ष लेकर बोले! मैं रात-
दिन उनके घर में खटती रही थी ना! मेरी बेटी सूखकर कांटे जैसी हो गई थी,फिर भी उस बाप
का दिल क्यों नहीं पसीजा?''

सुमी की व्यथा-कथा सुनकर उसके माता-पिता का भी खून खौल उठा था। उनका घर पैसे टके से समृद्ध था। सुरेश का घर कमजोर फिर भी माँबाप की एक मात्र संतान जानकर उन्होंने अपनी बिटिया की सुरेश से शादी करवायी थी। वैसे भी बिटिया पर जो गुजरती थी उससे वे वाकिफ थे। धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा ऐसा मानकर अपनी व्यथा को माँ ही माँ में छिपाए रहे। इस प्रसूति में तो हद्द हो गई। उन्होंने शान्तिकाका के साथ बा के प्रति विरोध के साथ सबकुछ कहलवा दिया। जिसका सारांश था-`हमें तो अब यह संबंध तोड़ देना है।'

सुरेश के घर में सन्नाटा छा गया था। बा तो अवाक् रह गई। बेटी के बाप होकर समधी इस प्रकार खुलेआम आरोप रखेंगे ऐसी तो उन्हें कल्पना तक नहीं थी। बेटा कहीं बहू का नहीं हो जाए कि सुखसंपन्न घर की लड़की कहीं बेटे के कान भरकर माँ के विरुद्ध उकसाये नहीं, इसी विचार का यह नतीजा था। सुरेश की नजरों से कभी सुमी हटती नहीं थी। सुमी थी तो माँ और बेटे को गरम गरम खाना नसीब होता था! सुबह नींद खुलते ही बेचारी वह काम पर चढ़ जाती थी और रात हो जाने पर भी फुर्सत अनुभव करती नहीं थी। फिर भी हर तरह से आज्ञाकारी और सारी इच्छाओं के वश!

बाद में तो ऐसा समय आया कि बा के लिए काम और सुरेश के लिए माँ असह्य हो गई थी। उसके कान में बापुजी के शब्द भी गूँजते रहते थे,-``अब तो मानव बनो।''

अंतत: यह दिन भी आ गया। सुमी के बापुजी कागजी कार्रवाई के लिए आनेवाले थे।

दोपहर बाद सुरेश ने दालान में से झूले को खोलकर हटा दिया था। दोनों ओर लंबी दरियाँ बिछा दी। बापुजी बीच में बैठे और सुरेश एक कोने में गुमसुम बैठ गया।

शाम चार बजे सभी एक के बाद एक आ गए। दो काका,फूफा और गाँव के दो बुजुर्ग। सुमी के दो मामा,काका और उसके बापुजी पांचों एकसाथ आए। पीछे पीछे सुमी भी घूँघट निकाले घर में आयी। उसके बापुजी ने सुमी को साथ में इसलिए लिया था, कि उसे दिया गया जेवर और महंगी चीजवस्तु अपने साथ वापस ले लिए जाए। बा मंदिरवाले कमरे में थी। सुमी सुरेश को एक नजर देखकर कोनेवाले कमरे में चली गई। सुरेश की याचना से युक्त आँखें पलभर के लिए उठी और झुक गईं। बा घर से निकाल नहीं दे, इसलिए छोटू उस कमरे में बैठा हुआ था। भाभी से चिपक गया। सुमी रो पड़ी।

``तो अब क्या करना है?'' गाँव के बुजुर्ग डाह्याबापा ने कहा।

``अब इस प्रकार तो चला नहीं सकते। हमारी भोली परेवे जैसी बेटी...'' सुमी के मामा ने जवाब दिया।

``भाई, सच तो यह है,कि सुरेश का कोई दोष नहीं है। सास-बहू के बीच कुछ अनबन है। सब ठीक हो जाएगा, यदि आप समझें-मानें तो...'' सुरेश के काका ने समाधान के सूर में कहा।

``इसे आप थोड़ी सी अनबन कहते हो? समधन मेरी बच्ची को खा जाएगी! सुमी के बापुजी गुस्से में आकर लगभग खड़े हो गए।

``भैया! आप शान्ति रखिए। आपका बी.पी. बढ़ जाएगा। वैसे भी हमें फैसला तो करना ही है।'' सुमी के काका ने कहा।

``देखिये समधीजी, हम कान बंद करके बैठे हुए नहीं थे। सारी बातें हम तक पहुँचती ही थीं। सुमी छान-छानकर कहती थी, फिर भी उसकी बातों से हम समझ जाते थे कि हमारी बिटिया सुखी नहीं है। हमने अब तक कोई कम समाधान नहीं किया है। समधन तो बड़ी पहुंची हुई औरत है और सुरेशचन्द्र या आप में से कोई उन्हें दो शब्द कह नहीं सकते हैं। सौ बात की एक बात। अब हमें तो आ यह संबंध तोड़ना ही है।

``भाई, यदि आप मान जाओगे तो अब मैं उसे रोकूँगा। आपकी बेटी का ध्यान मैं रखूँगा, बस?'' बापुजी ने झिझक अनुभव करते हुए कहा।

``अब रहने भी दो समधीजी। आपने आजतक क्यों कोई रोकटोक नहीं की?''

अंदर से सुमी के रोने की आवाज आयी।

दरवाजे में से छोटू ने झाँका। ``बा सबकुछ सुन रही है,हाँ...''

``तुम यहाँ बड़ों की बात में क्यों टांग अडाने के लिए आए हो? चलो,उठो? तुम तुम्हारे घर चले जाओ...और बीचवाला दरवाजा बंद करते हुए निकलो।'' बापुजी ने कहा।

छोटू ने किंवाड़ अधखुला बंद किया। चर्चाएँ फिर से उग्रता के साथ शुरू हुई। प्रसंग, घटनाओं का पुनर्पुन: पोस्टमॉर्टम हुआ। उनके नए नए अर्थघटन और निष्कर्ष....परिणाम एक ही
.... हम हमारी बेटी को हमारे साथ वापस लेकर जाएंगे।

सुरेश मुंडी नीचे किए बैठा हुआ था। वैसे भी गाँव में माँ-बेटा बदनाम हो ही गए थे। आज सबके बीच एकदम खुले भी पड गए।

``ठीक है भाई, यदि आप किसी समाधान पर आना नहीं चाहते हैं तो अब इस चर्चा को खत्म करो। ले जाओ आप अपनी बेटी को और भाईसाहब, व्यवहार से सुमी के गौने में माइके से जो दिया गया है वह सब आप लौटा दीजिये और बात को खत्म करो, और क्या?'' चतुरकाका आखिरी फैसले पर आ गए।``

हाँ,वापस लौटा दीजिये सबकुछ और पंच के पास लिखित करवा लेते हैं। कोर्ट में तो फैसला आने में बहुत देर

लगती है।"

घर में से क्रमश: सारी चीजवस्तुएँ आती गईं। बर्तन,मोती के तोरण,चकला,गद्दी,गद्दा,

झूमर,रेशमी रज़ाई,कपड़े,जेवर....सुमी के बापुजी के पास गौने में दी गई वस्तुओं का लिस्ट था। तदानुसार सबकुछ दालान में जमा होने लगा। टेंपोवाले को भी बुला लिया गया था।

छोटू बड़ेदादा के डर के कारण बाहर नहीं आ रहा था पर कान लगाए हुए बैठा था। एक तरफ भाभी रो रही थीं और दूसरी तरफ बा भी रो रही थीं। अब बेटे का घर टूट रहा था और स्वयं कुछ कर नहीं पा रही थीं।

``ये तो हमारी है।" शान्तिकाका के हाथ में रही पायल को देखकर सुमी के काका ने कहा।``यह तो मुझे याद नहीं था, इसलिए सोचा कि पूछ ही लूँ। पायल तो यहाँ से भी दी हुई हो सकती है ना!" उन्होंने कमरे में खड़ी सुमी की ओर देखा और पायल समधी को दे दी।

सारा हिसाब हो गया।``सुमी बेटा! तुम तो तैयार हो ना? चलो चप्पल पहन लो।" मामा ने पूछा और नि:श्वास डाला।``किसे पता था कि मुझे तुम्हें इस प्रकार वापस भी ले जाना पड़ेगा!" सुमी की हिम्मत ने जवाब दे दिया था। वह सबके चलाये चल रही थी। मायके गई तब तो उसे लगा था कि बस,अब तो छुटकारा हुआ इस नरक से। उसे सुरेश की याद आ जाती थी लेकिन वह मन मसोसकर बैठी रहती। ऐसा निरा बेदम पति किस काम का? माँ के पास तो भीगी बिल्ली! यमराज जैसी सास के साथ जिंदगी बीते भी तो कैसे! पर आज जैसे आमने सामने की चर्चा हुई और सुमी पस्तहिम्मत होने लगी थी। मामा ने चप्पल पहनने के लिए कहा और उसका शरीर बड़े थैले जैसा हो गया। आँखों पर अंधेरा छाने लगा। जैसे तैसे करके पैर डाले,बाएँ या दाहिने का भी होश नहीं रहा।

मामा ने सुमी का हाथ पकड़ा। अन्य लोग बाहर जा चुके थे। अचानक छोटू दौड़ता हुआ आया। सुमीभाभी का पल्लू खींचते हुए छोटू ने कहा, ``आप अपनी सारी वस्तुएँ ले जाइए,हमारी नहीं।"सुमी के मामा मूढ़ की भांति देखते रहे।

``जब शादी हुई थी तब शीलाकाकी ने मुझे कहा था, भाभी तो हमारी हैं।" ज़ोर ज़ोर से रोयी...और सुमी ने पैर से चप्पल उतारकर फेंक दी।

(2)
"उड़ान"

लेखिका: रेखा जोशी

`` क्या आज वहाँ जाना जरूरी था?" टेबल पर मुक्का जमाते हुए उसने कहा!

उसके क्रोध की लपट मानो ज्वाला बनकर शरीर से लिपट गई।

सरल स्वभावी रुचि ने उतनी ही विनम्रता के साथ जवाब दिया, `गुरुजी का व्याख्यान था इसलिए गई थी।' अनिकेत पुन: चिल्लाया,`क्या वहाँ जाने से ही भगवान मिलते हैं?' अंदर जाते हुए वह बड़बड़ाया `पता नहीं यह दंभी समाज किसे भगवान समझता है, ज़िम्मेदारी से बचने के लिए ही ऐसा मार्ग अपनाता है।'

रुचि को लगा, बात बढ़ जाएगी, इसलिए वह सीधे रसोईघर में जा कर अपना काम करने लगी, लेकिन आज उसका काम में मन नहीं लग रहा था। बिना किसी प्रयोजन के डिब्बे का ढक्कन खोलती और बंद करती- फिर से खोलती और बंद करती....अपने भाग्य की भांति....

उसे पुराने दिनों की याद आ गई, पप्पा और भाई दोनों समय को लेकर एक सरीखे, उसकी नजर ही मानो घड़ी। मुझे आने में तनिक भी देरी हो जाए तो आकाश पाताल एक कर देते। और मैं अधिकार के लिए रानी लक्ष्मीबाई हो जाती। बाद में मन ही मन बड़बड़ाती- विकास करना हो तो समय के साथ समझौता करना ही पड़ता है। क्या सारे नियम लड़कियों पर ही लागू होते हैं? परंतु सारी अकुलाहट और प्रश्न संस्कार के परिणामस्वरूप हवा में पिघल जाते थे,और तब से मैंने निर्णय किया था और बस अब तो अत्याधुनिक अमरीका में ही शादी करके बस जाना है। जिससे विशाल आकाश के तले मैं अपना विकास कर सकूँ, अपनी मरजी के अनुसार जी सकूँ। वैसे भी अमरीका के आकाश में सूर्य बड़ा दिखाई देता है...,परंतु मुझे कहाँ मालूम था, भूगोल के बदलने से इतिहास नहीं बदल जाता, और उसने खुद पर मार्मिक हँस लिया...

कि अचानक डोरबेल बजी....और तेज गति से दौड़ रही विचार की ट्रेन को ब्रेक लगा....

रुचि घबराती हुई दरवाजा खोलने के लिए आयी, उसके सामने उसकी उन्नीस वर्षीया पुत्री काव्या खड़ी थी- ``हाय मोम...! कहती हुई गले लग गई...रुचि को यंत्रवत् खड़ी देखकर काव्या ने पूछा,`अरी ममा, आज तेरा खिलखिलाता हुआ मुख क्यों उदास है?" रुचि ने उदासी ओढ़े चेहरे के साथ जवाब दिया,``छोड़ बेटा छोड़।" ऐसा कहकर बरसों की थकान उतार रही हो ऐसे बैठ गई। काव्या ने तुरंत जवाब देते हुए कहा, ``डेड़ी ने अवश्य ही कुछ कहा होगा, अन्यथा तुम इतना जल्दी उदास नहीं हो सकती।" वह रुचि की आँखों के भाव पढ़ने को अधीर हुई।

काव्या भी उसकी मम्मी की प्रतिकृति थी। पढ़ने-लिखने में तेजस्वी और कंठ में तो मानो कोयल बसी हुई हो। दोनों माँ बेटी होने से ज्यादा सहेलियाँ थीं। हर बात वे साथ बैठकर करती थीं। वातावरण को कुछ हल्का बनाने के लिए काव्या ने अपने कॉलेज,लाइब्रेरी तथा आज के युवा मानस की बातें शुरू की,परन्तु रुचि यंत्रवत् हामी भरती रही। माँ को इस तरह सुनते देखकर वह और पास गई,सामने पालथी मारकर बैठ गई और बोली,``ममा....मुझे श्री श्री रविशंकरजी का `आर्ट ऑफ लिविंग कोर्स' करना है। मेरी सारी फ्रेंड्स करनेवाली हैं।`` उसे मालूम था यह विषय मम्मी को बहुत प्रिय है इसलिए....रुचि ने माथा हिलाते हुए मन ही मन कहा-``तुम पहले तो तुम्हारे डेड़ी की मंजूरी ले लो, बाद में कहना जो कहना चाहती हो!" काव्या मम्मी के मनोभाव तुरंत समझ गई और बाल्कनी में जाते जाते कहा `इस बात के लिए डेडी कभी नहीं मानेंगे....!" वहाँ अंदर कंप्यूटर पर बैठे हुए अनिकेत ने आवाज दी...``व्हेर इज माय टी? आई एम गेटिंग लेईट!" कि बाल्कनी में खड़ी काव्या ने प्यार भरे शब्दों में लड़ लिया,`` डेडी, आप हमेशा जल्दी में होते हो। ऑफिस तो आपके जाने से ही खुलता है और आपके आने से ही बंद होता है, क्यों? आज तो मैं आपको जल्दी से जाने देनेवाली ही नहीं हूँ।" हँसते हुए अनिकेत ने कहा,``ओ.के. माय डीयर,बोलो तुम क्या कहना चाहती हो?" गले से लगते हुए काव्या ने अपनी बात शुरू की- ``माय डीयर डेड! आई वोंट टु टॉक अबाउट नोट ओनली वन थिंग, बट अ लोट्स ऑफ थिंग्स!" यह सुनकर अनिकेत बीच में ही अप्रत्याशित रूप से बोल पड़ा- ``डीड यू आस्क फॉर माय परमिशन?" काव्या ने कहा-`कोई प्रोग्राम तय नहीं किया है, डेड आपकी ओर से यस होगा तभी...."

कुछ देर रुककर काव्या ने कहा,``हमारा विकास तभी संभव होगा,(जब) हम अंदर छिपी हुई विशेषताओं को बाहर लाएँ..." कि एक फोन आया और अनिकेत खड़ा हुआ, ऑफिस बेग और टिफिन लेकर गाड़ी की ओर बढ़ा, वातावरण में सन्नाटा छा गया....कुछ देर के लिए दीवार पर टंगी हुई घड़ी की मात्र टीक टीक आवाज और बाहर पेड़ पर बैठे कौए की कर्कश आवाज वक्त को भरती रही....

रुचि बाथरूम से निकलकर बालों में हेयरड्रेसर घुमाते हुए सोच रही थी कि ये आँखें और अंदर की नमी कब सूख गई, इसका तो पता ही नहीं चला...! काव्या ने मौन भंग किया,``ममा, पप्पा जाने तो देंगे न?" रुचि ने प्यार से सहलाते हुए कहा,``बेटा, तुम्हारे डेडी के सिद्धान्त कुछ अलग हैं, मेरा तो मानना है कि प्रेम मुक्त होना चाहिए, किसीके विचारों को, पसंद – नापसंद को महत्त्व प्रदान करने, बांधे-जकडे रखने से घुटन बढने लगती है, मैं ऐसा मानती हूँ। उनकी प्रेम विषयक व्याख्या शायद अलग है...रुचि आज मुग्धा से परिपक्व और परिपक्व से प्रौढा होकर विचार करने लगी। प्रेम से क्या तात्पर्य है? किसीके विचार के अनुसार चलना,अनुसरण करना? उसकी पसंद के अनुरूप बोलना,चलना? ना,ना,उसका मन विद्रोह करने लगा,उसे लगा,माथा चकराने लगा है, इसलिए विचारों को लगाम देकर वह सो गई।

शाम ढले अनिकेत की गाड़ी का हॉर्न सुनायी दिया, रुचि ने उठकर टीवी का स्विच बंद किया और मुस्कुराते हुए बेग लेते हुए कहा,``व्हाय आर यू सो लेइट टु डे।" अनिकेत ने टाई खोलते हुए कहा,``आज एक पार्टी थी।" रुचि ने पानी का ग्लास हाथ में देते हुए कहा,``आज हमें एक नाटक देखने के लिए जाना है?" अनिकेत अकुलाया,``आई हेव जस्ट रिटर्ण्ड, लेट मी जस्ट रिलेक्स!" कुछ देर के लिए भारी अवकाश छा गया...बाद में रुचि ने कहा, ``कल बापुजी का श्राद्ध है तो मुझे भी तैयारियाँ करनी हैं।" अनिकेत ने मात्र `हं'...कहकर अपनी सम्मति दर्ज करवायी।

रुचि ने उत्साहित होकर पूछा,`` नाटक देखने के लिए जाएँ तब क्या मैं जीन्स पहनूँ?" नाराजगी जताते हुए अनिकेत ने कहा,``वहाँ बड़े—बुजुर्ग भी होंगे, तुझे देखकर वे क्या सोचेंगे?" रुचि को भी मन ही मन लगा, फिर वही बात, कपड़े भी अपनी पसंद के नहीं! हमारे सुख की व्याख्या भी क्या हमें नहीं करनी है? यह समाज अर्थात् कौन? हम ही ना? वह क्या कहेगा, क्या समझेगा, उसकी वेदी पर हमें हमारी खुशियाँ झोंक देनी हैं? एक भी विचार अपना नहीं, सबकुछ पराया? अपने व्यक्तित्व का विलोपन करके बरतें तभी हम अच्छे? क्या यही प्रेम है जहाँ हमारी एक भी सांस अपनी इच्छानुसार न हो! रुचि के मन में विद्रोह की आंधी चली...क्या समझते हैं स्त्री को, ये लोग? रसोईघर की साफ़ी? संतान पैदा करने की मशीन? या खुला प्रदर्शन करके कमाने का साधन? रुचि के इस सैलाब में विचारों की तरियाँ यहाँ से वहाँ दिशाहीन होती हुई भटकने लगीं...

रुचि आज एक निर्णय पर आ जाने के लिए अपना मन बना चुकी थी, वह इंडिया और अमरीका के बीच तुलना करने लगी। यहाँ कद और पद बहुत बड़े पर मन बिलकुल खुला नहीं,यहाँ अपेक्षा और परीक्षा अधिक और मुक़ाबले में परिणाम मात्र उपेक्षा ही हो तो क्या मतलब? यदि अमरीका में रहकर भी मानसिकता बदलती नहीं है, वही परंपरा और अस्वस्थ विचार....नहीं....बस...अब ज्यादा नहीं, जख्म अब पक गया है इंडिया की स्नेहिल उश्मित गर्मी से वह फोड़ा फटेगा, उसके बाद ही पीड़ा में ए..क..द..म.. राहत। रुचि ने अंदर जाकर स्मृतियाँ एवम् सामान भर कर उड़ान भरी निज नीड की ओर...

****

कहानी

क़ाज़ी वाजिद सिद्दीक़ी
348 ए, फाइक एंक्लेव फेस 2, पीलीभीत बाईपास, बरेली ,उ प्र.
मो- 9027982074 ई मेल wajidhusain963@gmail.com

"अलविदा पीटर"

सवेरे - सूरज उगने से पहले- झाड़ियों में कबूतरों की गुटरगूं मुझे खुली खिड़की से सुनाई देने लगती थी। पहाड़ की ढलान पर मुर्ग बांग देने लगते थे। ... मैं सोचता, काश मेरा भी एक मुर्गा होता। मैंने पापा से मुर्गा दिलाने को कहा, उन्होंने मना कर दिया। मम्मी ने तो हां कर दी थी, लेकिन पापा ने कहा, 'नहीं।' अगर तुम मुर्गी दिलाने को कहते, तो मैं ला देता। मुर्गी कम से कम अंडे तो देती है, पर मुर्गा किसी काम का नहीं, बांग देकर मुर्गियों को बुलाता रहता है। लेकिन पापा मैं तो यही चाहता हूं, मरियम के पास एक मुर्गी है जिसका नाम हेलेन है। हेलेन आया करेगी, तो साथ में मरियम भी आया करेगी। 'यह बहुत बिगड़ता जा रहा है।' उन्होंने कहा। 'अब कोई बताए,' उन्होंने मम्मी को डांटा, ' क्यों लेकर दिया जाए इसे मुर्गा? तुम भी बस, इसके मुंह से रुलाई फूटी नहीं कि झट तैयार!... 'पापा ने कहा, 'इसे पैसे की कोई कद्र नहीं है। और अभी इसे यह कद्र पता न चली तो फिर कब सीखेगा?' जिन बच्चों को मांगते ही झट से सब कुछ मिल जाता है, वे बड़े होकर मवाली बनते हैं, दुकानों से सामान चुराते हैं, क्योंकि उन्हें मनचाही चीज़ों को आसानी से पा लेने की आदत पड़ चुकी होती है। इसलिए मुर्गे की जगह उन्होंने मुझे एक चूजा लाकर दिया। अब मैं ठीक से बड़ा होऊंगा और मवाली नहीं बनुंगा।

हर सुबह अब मुझे चाहे कितना भी ख़राब क्यों न लगे, दूध का एक कप पीना पड़ता है। मलाई वाले कप का एक रुपया मिलता है, बिना मलाई वाले का आधा। इन रुपयो से मम्मी मेरे चूजे के लिए दाना खरीदती हैं।

मेरा चूजा वैसे है बहुत प्यारा। उसे छुओ तो मखमली लगता है। हाथ में दाना हो तो गोद में चढ़कर चुगने लगता है। और सबसे अच्छी बात यह है, दाना न हो तो भी पीछे-पीछे आता है। हां इतना ध्यान ज़रूर रखना पड़ता है, कि बिल्ली से बचा रहे। मैंने उसे नाम दिया है पीटर, क्योंकि वह खिलौना नहीं है, वह तो बच्चों की तरह चलता- फिरता -खाता है। बहुत चंचल है मेरा पीटर, बड़ा भी हो गया था। मम्मी कहती हैं, 'पीटर बांग देने लगेगा तो हम इसकी शादी हेलेन से करेंगे।'... पर मम्मी शादी में तो पार्टी देना पड़ती है, मेरे पास पैसे नहीं है।' ... 'उसके लिए तुम पैसे जमा करो।' मम्मी बोलीं। ...'कैसे।' ...'स्कूल टाइम से जाया करो, ए बी सी डी याद करो' मैं रोज़ तुम्हें पांच रुपये दूंगी। उन रूपयों को जमा करके पीटर और हेलेन की शादी की पार्टी देना।

मुझे पीटर पर बहुत प्यार आता है। हर सुबह उसके लिए मलाई वाला दूध पीता हूं, समय से स्कूल जाता हूं, ए बी सी डी याद करता हूं। मेरे पास उसकी शादी की पार्टी के लिए बहुत रुपये जमा हो गए है, बस इंतजार है, 'बांग देकर, हेलेन को 'आई लव यू' बोलने का।'

मैं बहुत खुश हूं, मेरे पीटर ने हेलेन को बांग देकर आई लव यू बोल दिया। मैंने मम्मी से पीटर और हेलेन की शादी करने के लिए कहा। मम्मी भी खुश थीं, बोलीं, 'हेलेन से तो पूछो, शादी करेगी? हेलेन से बिना पूछे शादी करोगे तो वह पीटर से बेबात में लड़ा करेगी।'

'जैसे आप पापा से लड़ती है।'

मम्मी की हंसी छूट गई। 'कैसी बातें करता है बदमाश! 'फिर कहा, 'एक पैकेट में दाना लेकर जाओ, पहले हेलेन को दाना खिलाना, फिर शादी तय करना, नहीं तो चोंच मार देगी।' मैंने उसे दाना खिलाया फिर पूछा, 'मेरे पीटर से शादी करोगी?' वह शादी का सुनकर नाचने लगी। मैं और मरियम शादी के गीत गाने लगे। मैंने मरियम से कहा, 'कल क्रिसमस है, परसों इसकी शादी करते हैं।' हम दोनों की मम्मी शादी का सुनकर बहुत खुश हुई और पार्टी की तैयारी में जुट गई।

रात को मम्मी मुझसे बोली तुम.' अब जल्दी सोया करो, 'सवेरे पीटर बांग दे, उसे दाना खिलाना, फिर स्कूल के लिए तैयार होना।' ... मैं सोने लेटा ही था, तभी पापा के मोबाइल में रिंग आई। पापा ने कहा, 'जीजा जी कैसे हो? कल आ जाओ, क्रिसमस सेलिब्रेट करेंगे। मैंने व्हिस्की की एक बोतल ख़रीदी है और मुर्गा तो मेरे बेटे जोसफ ने पाल रखा है। बिल्कुल तैयार है कटने के लिए।' जीजा जी बोले, 'वेरी गुड आइडिया, कल मिलते हैं।'

मैं रात में इंतजार करता रहा कि बाहर के कमरे में बैठे पापा कब टीवी बंद करके सोने जाते हैं। फिर उसके बाद मैं चुपचाप उठा और पीटर के साथ बाहर पोर्च में निकल आया। कुछ दूर तक चलने के बाद हम पहाड़ियों पर पहुंचे। मैंने पीटर को ज़मीन पर छोड़ते हुए कहा, 'तुम्हारे दोस्त यहां रहते हैं, तुम्हें यहां बहुत अच्छा लगेगा।' मैं जवाब का इंतज़ार करता रहा, लेकिन पीटर कुछ नहीं बोला और जब 'अलविदा पीटर' कहने के लिए मैने उसकी कलगी को छुआ तो उसने आख़िरी बार उदासी से मेरी ओर देखा। धर पहुंचकर मैं उसे 'बाय' कहने के लिए घूमा, वह मेरे पीछे चला आ रहा था। मैंने उसे गोद में उठाया

फिर छोड़ने ले गया पर वह मेरी गोद से उतरा ही नहीं, मजबूरन मुझेे उसके साथ रुकना पड़ा। फिर पापा दिखाई दिए। वे हाथ में लालटेन लिए मुझे पुकार रहे थे। मुझे लगा वो पीटर को लेने आए हैं। मैं ज़मीन पर पड़े पत्तो के ढेर में छुप गया। तेज़ ठंड पड़ने लगी थी। अगर पीटर मेरे ऊपर पंख न फैलाता तो शायद मैं मर जाता।

मुझे ठंड से कांपते देखकर पीटर बांग देकर पापा को बुलाने लगा। मैं बेहोशी की हालत में बड़बड़ा रहा था, 'पापा तुझे काट डालेंगे, मत बुला।' 'उस पर तो मुझे बचाने का भूत सवार था, पागलों की तरह बांग दिए जा रहा था।' उसकी बांग सुनकर पापा भागते हुए आ गए। वो अपनी गलती पर बहुत शर्मिंदा थे। उन्होंने मुझसे वादा किया, वह मेरे पीटर को कभी नहीं काटेंगे और मुझे गोद में उठाकर घर ले गए। आज पापा ने पहली बार पीटर को अपने हाथ से दाना खिलाया, उस समय उनकी आंखें नम थी।

अरुण कुमार प्रसाद

काव्य

कलिंग का पाप

पाप था कलिंग का होना, स्वाभिमानी!
कि अशोक की महत्वाकांक्षाओं का
होता रहना अभिमानी?

सम्मान, कहते हैं, छीने नहीं जा सकते।
किन्तु, यह तो सभ्यता के दौर का है एक मुहावरा।
अहंकार के अंधेपन की कोई सभ्यता नहीं होती।
सभ्य दिवास्वप्न में खोये मत रहो स्वयंवरा।

वर 'अशोक' सा हो तो तेरा स्वाभिमान कैसा!
समर, तुझे प्राप्त करना हो तो, तेरा सम्मान कैसा!

कलिंग को, पराजित होना पराजय नहीं
उसका आत्माभिमान था।
अशोक का जयी होना उसका जय नहीं
उसके अन्तर्मन में उसका अपमान था।

कलिंग का उद्यमी होना पाप था क्या?
कलिंग का समृद्ध होना गुनाह था क्या?
विस्तारवाद से ग्रस्त था अशोक।
ऐश्वर्य में दरिद्रता से त्रस्त था अशोक।

बलात्कार का फलसफा दूषित है दुष्टता से।
समर्पित न होने की धृष्टता से।
युद्ध और बलात्कार
अशोक का सम्राट होने का मापदंड है।
ऐसे लोग अन्तर्मन में हमेशा खण्ड-खण्ड है।

वीरांगनाओं ने उठाकर तलवार जीत लिया रण।
नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था अशोक का हर प्रण।

अशोक का कलिंग-प्रायश्चित
झोंकता है आँखों में धूल।
बुद्ध हो जाता यदि अशोक
' भोग' की शंकाएँ होती निर्मूल।

कलिंग के युद्ध में कलिंग का क्रोध
आत्मघाती नहीं था।
अशोक के अविवेकी-अन्याय का विरोध था।
और कायम रखने की जिद तक
मृत्यु की भांति प्रतापी था।

दुनियाँ में कलिंग अब भी है और अशोक भी।
बुद्ध को करना पड़ता है बस शोक ही।

हंसा हुआ दु;ख

वह हंसा,
हँसते-हँसते रो गया अपनी व्यथा।
पूरे संसार में,
दु:ख झेलने की यही है प्रथा।
क्यों रोते हो पूछ गया दुखी मन।
हृदय के आघात दिखाकर
सुखी हो गया पीड़ित तन।

आदेश,उपदेश

संसार स्वप्नवत नहीं है।
कठोर,तप्त प्रस्तर है।
अर्जन ही दु:ख का विसर्जन है।
दु:ख होने का आदेश न दे,उपदेशक।
उपदेश सुख होने का दे, मेरे महानिदेशक।
तू ईश्वर है,
महान आशय वाले प्राणी।
दीक्षा कर्म का दे,अपने मर्म का नहीं।
हे,व्याकरणयुक्त वाणी।
जीवन है आमरण तक,भ्रष्ट कर्तव्य सा।
अभ्रष्ट होने से मरण सा।
कटुता का लेन-देन प्रचुर है।
हर व्यक्ति घमंड से चूर है।
यह जीवन है।
जीवन यह, अपना तन है।
छीन-झपटकर देख-भाल कर।
आदेश है और उपदेश भी।

कहानी

शराफत आली खान
343,फाइक इन्क्लेव, फेज-2,पो.रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली-243 006(उ.प्र.)
मो. 7906849034

"यादों की चिंगारी"

गाड़ी अभी-अभी आकर स्टेशन पर रुकी थी। मुझे इसी गाड़ी से लगभग 2 घंटे बाद दूसरा इंजन लगने पर अपने शहर जाना था। मैं डब्बे के दरवाजे पर खड़ा होकर प्लेटफार्म की भीड़ को देख रहा था।

अचानक मेरे सामने से एक जाना पहचाना चेहरा गुज़रा। उस चेहरे को देखते ही मेरे मुंह से निकल गया "नसरीन" ।

वह रुकी और एक भरपूर नजर मेरे चेहरे तक डाली।मुझे देखकर उसका चेहरा खिल उठा पर कोई भी लफ्ज़ उसके होठों से नहीं निकला। मेरे हाथ बढ़ाने पर उसने फौरन अपना हाथ मेरे हाथ में दे दिया और मैंने उसे डब्बे के अंदर खींच लिया।

वह चुपचाप मेरे साथ साथ मेरी सीट तक आई। मैंने अपनी बीवी और बच्चे से उसे मिलवाया। फिर धीरे-धीरे नसरीन खुले दिल से बातें करने लगी। वह बार-बार एक ही जुमला कहे जा रही थी" आपने इतने बरसों बाद भी मुझे एकदम पहचान लिया। इसका मतलब मेरी तरह आप भी मुझे भूले नहीं थे?"

वह मेरी बीवी से बातें करती जाती, मगर उसकी नजरें मुझ पर टिकी हुई थीं।

वह बरसों पहले कॉलेज के जमाने में हमारे पड़ोस में रहती थी। मुझसे 1-2 दर्जा पीछे ही थी, मगर फिल्म देखने में और सैर सपाटे में मुझसे कहीं आगे थी। उसे फिल्म देखने की लत थी। मैंने शायद अपने जीवन की ज्यादातर फिल्में उसके साथ ही देखीं।

उसे घूमने का भी बेहद शौक था। शाम को स्टेशन के पास वाली सड़क पर वह मुझे जबरदस्ती ले जाती। इधर-उधर की फालतू बातें करती और फिर हम दोनों वापस आ जाते ।उसे मेरी क्या बात पसंद थी मालूम नहीं, मगर मुझे उसके बात करने का अंदाज और खरीदारी करने का तरीका बहुत पसंद था ।

उसके साथ चलने में मुझे लगता है कि उसकी वजह से मैं बिल्कुल महफूज हूं। फिर वह आगे पढ़ाई करने के लिए 1 साल के लिए दूसरे शहर में चली गई और मैं भी नौकरी की तलाश में कई शहरों की ख़ाक छानता रहा। वह जब वापस आई थी, उस समय मैं नौकरी न मिलने की वजह से बहुत परेशान और दुखी था।

नौकरी के लिए नसरीन भी हाथ पैर मार रही थी ।वह हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया करती थी। एक दिन उसने मुझसे कहा था "दुनिया में बड़े सुख जैसी कोई चीज नहीं नहीं है... छोटे-छोटे सुख जो हमें जाने अनजाने मिलते रहते हैं, उन्हीं से खुश रहना चाहिए।"

मैं उस शहर में ज्यादा दिन न ठहर सका। बाद में कई शहरों में छोटी मोटी नौकरियां करने के बाद मुझे सरकारी नौकरी मिली और मेरी जिंदगी में ठहराव सा आ गया। बाद में नसरीन का परिवार भी वह शहर छोड़ गया था और उसका नया पता मुझे मालूम नहीं हो सका था।

कई साल गुजर गए थे।मगर नसरीन की याद राख में दबी चिंगारी की तरह गर्म ही रही ,कभी बुझी नहीं।

आज जब उसका चेहरा मेरी नजरों के सामने आया तो मैं अपने आप को रोक न सका। वह भी बेहद खुश थी ।बोली, "इत्तेफाक की बात है कि मैं भी इसी गाड़ी में बैठी थी और रास्ते भर आपकी याद आती रही।"

चूंकि बीवी को मैंने नसरीन के बारे में कई बार बताया था। इसलिए वह भी उससे खूब दिलचस्पी से बातें कर रही थी। मैं उन दोनों के पास से उठकर रिसाला खरीदने नीचे उतर गया। वापस आने पर मैंने देखा कि नसरीन की बातें तो मेरी बीवी से हो रही थीं,मगर उसकी नजरें मुझ पर जमीं थीं।

नसरीन अपनी बड़ी बहन से मिलने जा रही थी, जो की इसी शहर में मास्टरनी थी।नसरीन बस अभी तक कोई नौकरी न पा सकी थी ।मुझे यह जानकर बहुत अफसोस और इससे भी अधिक अफसोस इस बात का हुआ कि वह अब पूरी तरह नाउम्मीद हो चुकी थी ।उसने मुझसे कहा कि मैं कहीं उसके लिए नौकरी का बंदोबस्त करूं।"

मगर मैं उसके लिए क्या और कहां कोशिश करता । उसे मेरी नौकरी के बारे में कहीं से पता चल गया था। मगर उसे यह नहीं मालूम था कि मैं छुट्टी खत्म करके बीवी बच्चों के साथ वापस जा रहा हूं तो वह भी हमारे साथ चिपकी चली आई। मेरी बीवी ने उससे सिर्फ एक बार दिखावे के लिए साथ चलने को कहा था। नसरीन बिना झिझक या लज्जा के तुरंत मान गई ।उसके साथ चलने की बात पर मेरी बीवी के चेहरे पर नाराजगी सी दिखाई देने लगी, लेकिन फिर वह हंसने बोलने लगी ।चार-पांच घंटे का सफर बातों में कितनी जल्दी गुजर गया था, कुछ पता ही नहीं चला ।

घर पहुंच कर मेरी बीवी के साथ उसने भी खाना पकाने से लेकर घर की सफाई वगैरह में पूरा साथ दिया। नसरीन 2 दिन रही। तीसरे दिन खरीदारी करने मेरी बीवी के साथ गई।मगर शाम को जब मैं दफ्तर से वापस आया

तो बीवी ने बताया कि वह 4 बजे वाली गाड़ी से बड़ी मुश्किल से वापस गई है। बाजार में मेरे सामान की खरीदारी उसने अपनी पसंद से की थी, जैसे कि वह मेरी पसंद नापसंद अच्छी तरह जानती हो।

काफी दिन बीत गए ।उसके दो-तीन ख़त आये, मगर मैं जवाब न दे सका ।इधर बीवी भी बीमार थी और वहअपने पीहर गई हुई थी।

एक दिन शाम के समय मैं अपने दफ्तर के एक साथी के घर दावत में जाने के लिए तैयार हो रहा था कि अचानक दरवाजा खुला और नसरीन अंदर दाखिल हुई। मैं हैरान रह गया ।

आते ही वह बोली," अरे ,आप कहीं जाने की तैयारी कर रहे हैं ?"

मगर मैंने तब दावत में जाना ठीक न समझा, मगर बिना किसी खबर के, वह भी मेरी बीवी की गैरहाजरी में उसका आना मुझे अखर सा गया।

वह मेरी खामोशी भांप गई ।बोली,"क्या आपको मेरे इस तरह अचानक आज आने से खुशी नहीं हुई ?" मैं तो कई दिन पहले से बाजी के घर आई हुई थी ।आज वापसी के लिए स्टेशन पर पहुंची तो खुद से एक शर्त लगा ली कि अगर आप की ओर जाने वाली गाड़ी पहले आएगी तो आपके यहां चली जाऊंगी और यदि मेरे घर की तरफ जाने वाली गाड़ी पहले आई तो वापस घर चली जाऊंगी ।

अब शर्त की बात थी। आपकी ओर आने वाली गाड़ी पहले आई और मुझे मजबूरन आपके पास आना पड़ा ।"

यह सुनकर मैं हंस पड़ा।,"अरे,शर्त की क्या बात थी...

यह घर तुम्हारा नहीं है?"

यह जानकर कि मेरी बीवी घर पर नहीं है ,नसरीन काफी खुश हुई। फिर देर रात तक वह मुझसे इधर-उधर की बातों के बीच अपने शिकवे शिकायतें ले बैठी कि आप मुझे भूल गए आपने मुझसे क्या-क्या बातें की थीं?

मैंने उसे समझाया अगर मैं उसे भूल जाता तो शायद उस दिन पहचान भी न पाता ।हां, मैंने उस से कभी कोई वादा नहीं किया था ।

दूसरे दिन सवेरे ही मैं ने नसरीन को विदा कर दिया। वह जाने को तैयार नहीं थी। मगर मैंने उसे लोक-लाज का वास्ता दिया तो वह चली गई। कुछ दिन बाद पत्नी के लौटने पर जब मैंने उसे नसरीन के आने की खबर दी तो उसके चेहरे पर नाराजगी और गुस्से के कई रंग नज़र आये।मगर वह उह कडवाहट को खामोशी से पी गई।करीबन 2- 3 महीने बाद नसरीन की चिट्ठी आई।मैं ने उसे जवाब देने के लिये रख लिया। मगर बाद में न तो वह चिट्ठी ही फिर दिखाई दी और न ही मुझे जवाब देना याद रहा।

फिर दो महीने बाद उसकी चिट्ठी आई।मैं ने सोचा, अब की बार उसे ज़रूर ख़त लिखूंगा। मगर वह ख़त भी 10-15 दिन तक आंखें बिछाए मेरी तरफ देखता रहा और फिर नजरों से ओझल हो गया।

एक दिन फिर उस का ख़त आया। जिसमें लिखा था कि अगर इस बार भी आप लोगों ने जवाब नहीं दिया तो वह फिर कभी ख़त नहीं लिखेगी।

एक दिन शाम को मैं ने बीवी से कहा,"क्यों न हम अपने बंटी के तरफ से नसरीन को अपनी खैरियत का जवाब दे दें?"

" क्यों?" बीवी ने इस छोटे से लफ्ज़ के जरिए अपनी सारी कड़वाहट मेरे मुंह पर थूक दी।

मैं ने धीरे से कहा ,"किसी के ख़त का जवाब न देना जरा ठीक नहीं लगता।"

" अच्छा..." उस ने हैरानी से चौंकते हुए जवाब दिया, और किसी कुंवारी लड़की का किसी शादीशुदा आदमी को ख़त लिखना या किसी शादीशुदा आदमी का किसी कुंवारी लड़की के ख़त का जवाब देना या दिलवाना क्या ठीक लगता है? अगर यह सब ठीक है तो मेरी नजर में ऐसे किसी भी ख़त का जवाब न देना भी गलत नहीं हो सकता।"

बीवी के हांफते हुए चेहरे को मैं ने आहिस्ता से अपने सीने से लगा लिया। उस के चेहरे पर उभर आईं पसीने की बूंदे मेरे सीने को भिगो रही थीं।

गज़ल

डॉ. नलिन
कोटा (राजस्थान)

आस का दीपक जला है फिर
आँधियों ने भी छला है फिर

.

प्यास फिर से कुलबुलाई है
यह नदी तो निर्जला है फिर

.

साँझ तक घेरे रहे बादल
और इक सूरज ढला है फिर

.

है समस्या आज भी वैसी
चक्र बातों का चला है फिर

.

भूख से सर्जक हुआ व्याकुल
मर रही कोई कला है फिर

.

जा रहा वह ठोकरें खाता
पुण्य उसका यों फला है फिर

.

अँगुलियाँ उनकी मचलती हैं
ले नलिन तेरा गला है फिर

कहानी

अर्चना तिवारी
वडोदरा ,गुजरात

"लीला"

कल जब मैं बाजार गई तो रास्ते में अचानकएक दुबली पतली नाजुक सी लड़की एक छोटे बच्चे का हाथ पकड़े मेरी तरफ आने लगी. मैंने पहचानने की कोशिश की कौन है यह. मेरे आस पड़ोस में रहने वाली कोई या मेरी कोई पुरानी स्टूडेंट. बहुत सोचने के बाद भी कुछ याद ना आया. इसी बीच वह मेरे बिल्कुल पास आकर मेरे पैरों की तरफ झुक प्रणाम करने लगी. अपने साथ खड़े बच्चे को भी प्रणाम करने का संकेत करने लगी. मैं कुछ कहती इससे पहले ही उसने कहा, मैडम पहचाना ,मैं लीला हूं और यह मेरी बेटीरुचि है .अब मुझे वह दुबली पतली लीला याद आ गई और इसके साथ ही याद आने लगी उसकी पिछली सारी बातें. जब वह मैं मेरे घर पहली बार अपने पिता के साथ आई थी तो उसकी आंखों में कौतूहल और एक अजीब सा डर था.

उसके पिता हट्टे कट्टे गठीले बदन और लंबी मूछों के मालिक थे. उनमें और उनकी बेटी में मुझे जरा भी समानता नजर नहीं आ रही थी. उन्होंने बताना शुरू किया ,मैडम मेरी बेटी पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं लेती वह पिछले दो साल से दसवीं की परीक्षा में फेल हो रही है. आप इसे इस तरह पढ़ाना कि इस बार यह पास हो जाए .मुझे इसकी शादी करानी है और इसलिए इसको दसवीं पास करना जरूरी है. मैंने कहा देखिए मैं पढ़ा तो दूंगी पर मेहनत तो लीला को ही करनी पड़ेगी. अगर यह चाहे तो ही दसवीं पास कर सकती है. मेरा ऐसा मानना है कि हम सब बच्चों को अच्छी राह दिखा सकते हैं पर उस राह पर बच्चों को ही चलना पड़ता है. पर मेरे इन सब बातों का उन पर कुछ खास असर होता मुझे दिखाई नहीं दिया.

उनके जाने के बाद भी लीला चुपचाप सी बैठी रही .मैंने सोचा शायद आज उसका ट्यूशन में पहला दिन है इसलिए वह चुप है. पर धीरे-धीरे मुझे पता चला कि लीला स्वभाव से ही ऐसी है. अपने दोस्तों से भी वह बहुत कम बातें करती है. उसका व्यक्तित्व अंतर्मुखी था. मैंने धीरे धीरे उसकी पढ़ाई के अलावा अन्य बातों में भी दिलचस्पी लेनी शुरू की .इसका असर यह हुआ कि वह थोड़ी खुलकर मुझसे बात करने लगी. एक दिन मैंने पूछा कि तुम आगे पढ़ाई करना नहीं चाहती, क्यों? पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं लेती हो .उसने बताया मैडम मैं पढ़ना चाहती हूं पर दसवीं पास करने के बाद मेरे पिता मेरी शादी करना चाहते हैं. हम राजस्थानी ओं में लड़कियों की शादी बचपन में ही कर दी जाती है. गांव में तो लड़कियों को पढ़ने नहीं दिया जाता, बस थोड़ा अक्षर ज्ञान हो जाए उतना ही जरूरी होता है.

मैं तो शहर में रहती हूं इसलिए मुझे पढ़ने की इजाजत मिली है. मैंने कहा तुम्हारे सारे दोस्त दसवीं पास करके आगे पढ़ाई करते हैं और तुम पीछे रह जाती हो इससे तुम्हें बुरा नहीं लगता .उसने कहा मैडम मुझे अच्छा नहीं लगता पर दसवीं पास करने के बाद मेरी शादी हो जायेगीमैं अभी शादी करना नहीं चाहती हूं. मुझे आगे की पढ़ाई करनी है. आप कुछ भी करो बस मुझे पास नहीं करना. मैं विवेक शून्य सी उसकी तरफ देखती रह गई .यह कैसी दुविधा है ,उसके पिता ने उसे पढ़ने के लिए मेरे पास भेजा था और लीला पढ़ना नहीं चाहती थी या यूं कहूं कि दसवीं पास करना नहीं चाहती थी .

मैंने उसे समझाया कि देखो पढ़ाई सब के लिए बहुत जरूरी है शादी के बाद भी तुम्हारे काम आयेगी. मुझे लगने लगा की शायद मेरी बात लीला के समझ में आने लगी. इसका नतीजा यह हुआ की दसवीं के रिजल्ट के बाद वह जब मुझसे मिलने आई तो उसके हाथ में मिठाई का डब्बा था और आंखों में आंसू थे. मैं समझ गई कि वह इस बार पास हो गई है पर यह समझ नहीं पा रही थी कि उसे बधाई दूं या उसकी भविष्य की चिंता में उसका साथ . उस दिन के बाद वह मुझसे मिलने कभी नहीं आई .

मैं भी अपनी उलझन में ऐसी उलझ गई की लीला का ख्याल दिल से जाता रहा. आज जब बाजार में उसे देखा तो पिछली सारी बातें याद आने लगी और उसका वह दर्द भी याद आया. मैंने सहज होकर पूछा लीला ,तुम ससुराल में खुश हो न. पति कैसा है ,तुम्हारा ख्याल तो रखता है न. उसने पहले की तरह ही सहमति में सिर झुका दिया. मैंने कहा तुम्हारी बेटी तो बहुत प्यारी बिल्कुल तुम्हारी जैसी है .उसे मैंने पर्स से निकाल कर एक चॉकलेट दिया .उसने हंसते हुए तुरंत ही थैंक यू कहा. लीला ने कहा मैडम मैं इसे डॉक्टर बनाना चाहती हूं और यह निर्णय मेरा होगा ,मेरे पति की सहमति की मुझे जरूरत नहीं है .और हां ,यह पहली बार में ही दसवीं पास कर जाएगी .उसकी तरफ देखते हुए मैंने हंस कर कहा, हां हां यह जरूर पास करेगी .आज मेरे सामने लीला नहीं एक मां खड़ी थी जो अपनी अधूरी इच्छा अपनी बेटी में पूरी होते देख रही थी.उसकी आंखों में मुझे आशा की किरण दिख रही थी।

कहानी

सतीश कुमार नारनौंद
जिला हिसार हरियाणा

"गंगा-घाट"

बलिया छः फुट लम्बा,सांवला रंग,सुडौल व गठिले शरीर का इंसान था। उसकी पत्नी पार्वती बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की (आठवीं पास)औरत थी ।उनके दो बच्चे थे। लड़के का नाम वंश और लड़की का नाम वंशिका था। पार्वती रंग-रूप में हूर के समान थी।वह गौर वर्ण,मध्यम कद,हिरणी के समक्ष नयन,लंबी केश राशि तथा गहरे डिम्पलों से युक्त मुस्कान की मल्लिका थी।ऐसा लगता था मानो विधाता ने बिल्कुल फुर्सत में इस अद्भुत देवी का सृजन किया हो। पार्वती कभी भी किसी के साथ लड़ कर नहीं चली। धार्मिक प्रवृत्ति की होने के कारण वह बड़ों का आदर,अपनी हम उम्र की औरतों से प्रेम व छोटे बच्चों से स्नेह रखती थी। मोहल्ले के सभी आदमी व औरत पार्वती का उसके श्रेष्ठ गुणों के कारण सम्मान करते थे। बलिया अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहा था ।उसकी सबसे बड़ी कमी थी उसकी-अनपढ़ता,जिसका उसे सारा जीवन मलाल रहा।

बलिया, ठाकुर जी की जमीन पर बटाई पर खेती करता था। बलिया बड़ा पुरुषार्थी और परिश्रमी व्यक्ति था । वह आज के काम को कल पर नहीं छोड़ता था।

जब उसके जमींदार,ठाकुर जी के बच्चे छोटे थे और वह बसों में चढ़कर स्कूल जाते थे तो उनको देखकर बलिया बड़ा प्रसन्न होता था। ठाकुर जी की लड़की अर्पिता तो पढाई में बड़ी तेज़ थी। ठाकुर जी के बच्चे बलिया के बच्चों के हमउम्र थे परंतु अपनी हसीयत के अनुरूप वंश और वंशिका गांव के राजकीय विद्यालय में पढ़ते थे लेकिन थे बड़े संस्कारी,होनहार व पढाई में तेज। अपने गुरुजनों का सम्मान, कर्तव्यनिष्ठा तथा शिक्षा के महत्व को दोनों बच्चों ने अपने माता पिता से सीखा था। दोनों बच्चे विद्यालय में अपनी-अपनी कक्षाओं में हमेशा प्रथम रहते।सभी अध्यापक भी दोनों बच्चों पर गर्व करते थे।

एक बार किसी समाजसेवी संस्था ने, उपमंडल स्तर पर एक शैक्षिक प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें ठाकुर की लड़की अर्पिता तथा बलिया की पुत्री वंशिका ने भी भाग लिया। अंतिम समय में वंशिका केवल 2अंको से प्रतियोगिता में प्रथम रह कर 11000 हजार का ईनाम जीत गई। अर्पिता दूसरे स्थान पर रही।बलिया का परिवार व सारा मोहल्ला बड़ा खुश था।सबने मिलकर बेटी को सम्मानित किया। बलिया व पार्वती खुशी के मारे सारी रात सो नहीं पाये। खुशी के आंसू पोंछते हुए बलिया ने पार्वती से कहा "पार्वती आज विधाता की दया से,मेरी वह फसल तैयार हुई है,जिसको मैं ठाकुर के साथ बांट नहीं सकता।

उधर ठाकुर को वंशिका का प्रतियोगिता में प्रथम आना व अपनी बेटी का पिछड़ना पच नहीं रहा था। वह वंशिका को निजी स्तर पर नीचा दिखाने में जुट गया। सबसे पहले ठाकुर ने बलिया को बंटाई पर दिये गए खेतों को आधा कर दिया तथा खेती की अपनी शर्तें बढ़ा दी। मजबूरी में बलिया ने खेत छोड़ दिया। यहीं ठाकुर चाहता था।

पिछले दो महीने से वंश बीमारी के कारण बिल्कुल कमजोर हो गया था। बलिया ने अपने सामर्थ्यानुसार उसके इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी परंतु एक दिन काल ने वंश को अपने अंचल में छुपा लिया। अब बलिया बिल्कुल टूट चुका था।उसके पास अब पैसे का भी कोई सहारा नहीं था।वंश के रूप में उसका दायां हाथ कट चुका था,गरीबी,समय की मार तथा परिस्थितियों ने उसकी कमर तोड़ दी।बेटे के रूप में हृदय में लगी चोट को भूल ही नहीं सका और एक दिन उसको भी विधाता ने अपनी गोद में ले लिया। अब तो मानों परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा।

पार्वती व वंशिका का संसार ही उजड़ गया। ठाकुर को भी इसका पता लगा। वंशिका से बदला लेने का भी ठाकुर के पास अच्छा अवसर था।जब किसी का राम रुष्ट होता है तो सभी दिशाएं अंधकारमय हो जाती हैं। हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार मृतक की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करना पवित्र माना जाता है परंतु पार्वती के पास पैसे नहीं थे। मौक़े का फ़ायदा उठाकर ठाकुर ने अपनी गाड़ी से वहां ले जाने की बात कहकर, लोगों की सहानुभूति भी ले ली। ठाकुर का शैतान जाग उठा और उसकी नजर तो वंशिका के चढ़ते यौवन पर थी।

तीन दिन बाद बलिया की अस्थियों को लेकर पार्वती, वंशिका व ठाकुर हरिद्वार में गंगा घाट के लिए गाड़ी से निकले। रास्ते में गाड़ी खराब होने का बहाना बना कर ठाकुर ने देर कर दी। संस्कार क्रिया लेट होने पर, ठाकुर ने रात को गाड़ी चलाने में असमर्थता जताई। न चाहते हुए भी विवश पार्वती ने अपनी बेटी के कहने पर ठाकुर के साथ रात को गंगा के किनारे धर्मशाला में रुकने की बात माननी पड़ी।कई दिनों से थकी हारी पार्वती को नींद आ गई। मौके का फायदा उठाकर ठाकुर वंशिका का कपड़े से मुंह बंद कर,मानवता की सारी सीमाएं पार कर गया। शैतान ने आज कन्या की अस्मत को तार-तार कर दिया।रोते हुए वंशिका जब अपनी मां को जगाने गई तो पार्वती के प्राण पखेरु उड़ चुके थे।नि:शब्द रात्रि में पवित्र गंगा घाट पर इस कुकृत्य का गवाह स्वयं परमात्मा तथा वंशिका की सिसकियां थी।

कहानी

"जायज नाजायज"

अभी मंगरा का बचपना ठीक से खत्म भी नहीं हुआ था कि बदमाशियां उसकी शुरू हो गई थी, उसका जीने का ढंग ही बदल गया थाऔर तभी उसके साथ वह हादसा हो गया था । उसी के खातिर वैधसाधूमहतोको हमारे घर आना पड़ा था ।आज ही सुबह ! शाम को ही उनसे फोन पर बातें हुई थीं । लाने – पहुंचाने वालीबात परसाफ मना करते हुए -
" समय पर मैं खुद पहुंच जाऊंगा, आप चिंता न करें ..!" उसने कहा था ।

मंगरा पिछले तीन दिनों से घर में पड़ा पड़ा दर्द से कराह रहा था । दर्द भी ऐसा कि उसने खाना पीना तक त्याग दिया था । दर्द से बेहाल ! वह न उठ पा रहा था,न चल - फिर पा रहा था । हमेशा एक तरफ देह किए पड़ा रहता । कुछ भी खाने दो, फकत एक नजर भर उसे देखता और मुंह दूसरी तरफ घूमा लेता था । उसकी यह हालत न उसकी मां से देखी जा रही थी न मुझसे देखा जा रहा था । फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे थे । उसके दर्द के आगे हम पूरी तरह लाचार और बेबस थे । जब भी मैं उसके पास जाता,उसकी आंखों से लोर टप टप टपकने लगती और वह मुझे बड़ी कातर नेत्रों से देखने लगता, उसका इस तरह देखना मुझसे देखा नहीं जा रहा था । कभी कभी उसकी डबडबाई आंखें देख मुझे लगता वह अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगा है । और वह मुझसे कहना चाहता है कि आपकी बात कभी नहीं माना सदा मनमानी करता रहा उसी का यह नतीजा है, शुरूमें ही अगर हम आपकी बातें मान ली होंती तो आज हमको यह दिन देखना नहीं पड़ता ।
" मंगराजियादा बदमाशी मत किया करो वर्ना कभी रोना भी पड सकता है...!" बचपन में कही मेरी यह बात आज मंगरा को शायद बहुत याद आ रही थी । वह बार बार सुबक रहा था ।

आज भी मुझे याद है बचपन में ही वह बदमाशी पर उतर आया था और फिर कभी किसी कीनहीं सुनी उसने और न अपनी आदतों से कभी बाज ही आया । जैसा जब मन किया मनमर्जियां करता रहा, कहूं तो जैसे जैसे वह बड़ा होता गया,उसकी नादानियां और शरारतें भी बड़ी होती गई । उसकी मां का भी दोष कम नहीं था ।
" देखो,मंगरा को समझाओ ..!" मैं उसकी मां से कहा करता ।

" बच्चा है ! बचपना है! अभी शरारत नहीं करेगा तो क्या बुढापे में करेगा....?" उसकी मां उल्टे मुझसे सवाल कर देती । तब वह मां का दूध पीना छोड़ मुझे चिढ़ाने सा मुंह करने लगता था ।
" शरारत तक तो ठीक है, पर यह तो कुछ ज्यादा ही बेहुदा हरकतें करने लगा है और डांटने की बजाय तुम उसे और सर पे चढ़ा रही है- यह ठीक नहीं है,मंगराकी.मां !" मैं बिगड़ सा पड़ता था ।
" तुम काहे इसके पीछे पड़े रहते हो, खेलने दो न । यह मेरी देह पर चढ़े, कपार पर चढे-चढनेदो,बड़ा होगा तो खुद ब खुद समझदार हो जाएगा..!" और उसकी मां के सामने मेरी एक नहीं चलती और तब खदबदाते मन सेउन दोनों मां बेटे को देखता रह जाता था । इधर
मां की सह पाये मंगरा का उछल कूद शुरू हो जाता था ।
" डर है, बड़ा होकर कहीं यह हमें कोई परेशानी में न डाल दे और खुद कोई मुसीबत मोल न ले ले । मुझे इसकी चिंता है ...!"

श्यामल बिहारी महतो

प्रकाशन- बहेलियों के बीच कहानी संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ से 2006 में प्रकाशित तथा अन्य चार कहानी संग्रह उबटन,बिजनेस, लतखोर औरपंचनामा प्रकाशित ,कोयला का फूल उपन्यास भी प्रकाशित है
संप्रति- तारमीकोलियरीसीसीएल कार्मिक विभाग
पोस्ट- तुरीयो पिनकोड 829132 जिला- बोकारो, झारखंड

" ऐसा कुछ नहीं होगा,यह मेरा बेटा है और इसकी हर हरकत पर मेरी कड़ी नजर है...!"
" फिर भी..मेरा कहना था..!"
" ऐसा करो, अगले साल ठंड के दिनों में इसका " नेगा करवा दो "
" अगले साल क्यों, इसी साल क्यों नहीं ? अभी ठंड गया कहां है..!'
" कुछ मेरी भी बातेंमान लो न...!" मंगरा की मां मनुहार करने लगती और मैं उसका मुंह ताकने लगता था ।
" मंगरा कहां है..? बुलाइए...!" घर आते ही वैध साधूमहतो ने पूछा था ।
" उसी के पास चलना होगा । वह यहां आ नहीं सकता है ..!" मैंने कहा ।
" तेनुघाट में आपका कोई जानकार वकील है..?" धानेश्वरमहतो अचानक आंगन में आ टपका था ।
" क्यों ? क्या हुआ..?"

" रात को पुलिस दामाद को उठा कर ले गयी । आज सुबह उसे तेनुघाटचलान कर दिया...!"
और धानेश्वर आंगन में ही माथा पकड़ कर बैठ गया था।
" परसों तो पंचायत में समझौता हो गया था न, फिर यह सब कुछ...?"
" हां हो तो गया था, पर बाद में किसी ने लड़की के बाप को बहका दिया,कि कुंवारी लड़की है, हल्ला हो गया है,अब इसके साथ कौन तेली लडका शादी करेगा, करमचंद से बोलोकि इसके साथ भी शादी कर लेगा, दामाद ने इंकार कर दिया। बेटी को लेकर उसका बाप कल सुबह थाने चला गया। लड़की ने थाने में बयान दिया है " करमचंद ने मेरे साथ बहुत बार बलात्कार किया है "
मन तो मेरा भी किया कि दो शब्द खरी खोटी मैं भी इसे सुना दूं कि किसने कहा था, घर में जवान पत्नी के रहते बाहर कुंवारी लड़की से इश्क़ लडाना ! गांव में सबको पता है कि बेटी को आगे कर लड़की की मां दारू बेचने की धंधा करती है, यह तो एक दिन होना ही था लेकिन धानेश्वर से बस इतना ही कहा" अच्छा, हम इस पर शाम को बात करेंगे ..!"
" काकू, शाम को घर आना, मां ने पंचायत बुलायी है ..!" धानेश्वर के जाते ही पूरनी देवी का बेटा नुना आकर सामने खड़ा हो गया। कल आफिस में आकर बाप के नाम कोर्ट का एक नोटिस रिसीव करा कर आया है "काकू, एक आप ही है जो हमारे दर्द को समझते है" कह आया था। अब यहां भी मां बेटा चाहते है कि पंचायत में हम उनकी आवाज बनें। पूरनी देवी नेमचन्दमहतो की पहली पत्नी थीऔर नूनाउन दोनों का पहला बेटा।परनेमचन्दउसे अपना बेटा ही नहीं मानता,वहउसे नाजायज कहता है -" एक ही रात मर्द के साथ सोने से कोई औरत बच्चे की मां बन जायेगी.?" उसका सबसे बड़ा आरोप रहा है। नूना के जन्म के बाद ही नेमचन्द ने पूरनी के साथ अपने सारे रिश्ते तोड़ लिया था। पूरनी के जीवन में फिर दूसरी रात नहीं आई। बाद में नेमचन्द ने सुखनी नाम की दूसरी औरतसे शादी कर ली और कोलियरीरिकॉर्ड में उसका और उनसे जन्में बच्चों के नाम दर्ज करा दिया था। पर नूना नाम सर्विस रिकॉर्ड में चढ़ने से वंचित रह गया। तभी से नूनाऔर उसकी मां नेमचन्द पर चढ़ाई किए हुए थे। आज के पंचायत में उन दोनों मां बेटे का अहम फैसला होने वाला था।
" ठीक है, अभी तुम जाओ,शाम को आता हूं..!"
" चलिए,मंगरा के पास चलते हैं,बाद में मुझे एक जगह और भी जाना है, वैसे आपके मंगरा को हुआ क्या था.?"
" उसे क्या कहते हैं लड़के लोग.. इश्क ! प्यार ! मोहब्बत ! हमारा मंगरा भी उसी इश्क के चक्कर में पड़ गया ! सिलसिल के चक्कर में ..!"
" सिलसिल कौन..?"
" मंगरा की दोस्त, जिसके पीछे मंगरादिवाना था और समझता था कि वह सिर्फ उसी की है पर वह यह नहीं जानता था कि उसके पीछे कई औरमंगरा-बुधना पड़े हुए हैं जैसे रागनी को चाहने वाले विक्रम दासको यह पता नहीं था कि रागनी को चाहने वाले और भी चार हैं, एक साथ पिकनिक गये उन पांचों ने मिलकर बेचारे विक्रम को दशमफॉल में डुबो डुबो के मार डाले थे। इश्क का भूत कभी कभी जान जाने के बाद ही उतरता है तभी जाना था। यहां भी एक सिलसिल के पीछे सभी पागल ! " एक अनार सौ बीमार " वाली हालात बन आई थी। अभी तक उस पर मंगरा का ही अधिपत्य था, कहे तो ऐसा उसको वहम हो चुका था, वह उसका और सिलसिल सिर्फ उसकी वाली फीलिंग्सजागा हुआथा ! मंगरा और सिलसिल का जीवन एक साथ दौड़ रहा था । जैसेसिलसिल दौड़ पड़ती,मंगरा भी दौड़ पड़ता। उनके पीछे बाकियों भी दौड़ पड़ते थे, कभी जंगल की ओर तो कभी टांडगजार, झुरमूट-झाडियों में, दौड़तेदौड़ते कभी अतिक्रमण कर किसी के खेत - बारी में घुस जाना। यह कई दिनों से चल रहा था।पहले कौन पहले कौन के चक्कर में सभी एक दूसरे से लड भी पड़ते थे। एक दूसरे को धक्का मुक्की करना तो उनमें आम बात थी।
कई बार हमने मंगरा को समझाना चाहा कि बाबू इस तरह किसी के पीछे मत दौड़ो, कभी चोट घाट लगा तो जीवन भर लंगड़ा कर चलना पड़ेगा,जो एक का नहीं वह किसी का भी नहीं-यह भी जोड़ता। पर मंगरा काहे सुनता हमारी बात। रात दिन उसी सिलसिल के पीछे पड़ा रहता। खाने पीने कभी घर आता कभी नहीं,मंगरा ने कब मां की आंचल को अलविदा कहा, मां को भी पता नहीं चला। तब ममता मयीउसकी मां ने भी तंग आकर उसे उसकी हालत पर छोड़ दी थी ..!
" इतना बड़ा बदमाश...!"
" आए है, उसकी बदमाशी का नमूना भी देख लीजिए..!" मैंने कहा था-" परसों ही उसी सिलसिल ने उसे आवाज दी, मै उसे रोकता रह गया पर नहीं माना,खाना छोड़ मुड़ी उठा कर ऐसा दौड़ा ऐसा दौड़ा जैसे जीवन की आखरी दौड़ दौड़ रहा हो। वह सीधे सिलसिल के पास पहुंचा, दोनों में खूब चूमा चाटी और छेड़ छाड़ हुई, मंगरा उस पर लपकना चाहा- " यहां नहीं, चलो कहीं ओर...!" इसके साथ ही सिलसिल दौड़ पड़ी उसके पीछे मंगरा भी दौड़ पड़ा था। फिर वे दोनों कहां गायब हो गए किसी को कोई पता नहीं, कोई खबर नहीं। दिन भर क्या खाये क्या पिये कोई जानकारी नहीं।
अचानक शाम को एक लड़के ने बताया कि चोटाही के पास जामून पेड़ के नीचे मंगरा गिरा पड़ा है।
" कैसे, क्या हुआ..?" सुन कर मैं चिंतित हो उठा। फिर उस लड़के को लिए मैं उधर दौड़ पड़ा। जाकर देखा सचमुच मेंजामूनपेड़ के नीचे मंगरा दर्द से कराह रहा है, और चेहरा सुखेसखुआ पता की तरह हो गया है।
" आपका मंगरा, इस जामून पेड़ के नीचे सिलसिल के साथ खेल रहा था, कभी उसको चाटता फिर चढ़ता, फिर चढ़ता फिर चटता। सीधे सीधे उस पर चढ़ - उत्तर रहा था। हम जामून खाने पेड़ पर चढ़े हुए था तभी

देखा सिलसिल अचानक से उछल पड़ी और मंगरा जमीन पर गिर पड़ा । मेंढक माफिक, पैर उसका तीरा गया और तभी सिलसिल को एक बूढ़ा भगा ले गया, अभी तक उन दोनों का भी कोई पता नहीं है " लड़के ने बताया था ।
" आप तो हमें खरिहान में ले आए, आपका मजनू मंगरा कहां है...?"
" वह देखिए,माचा (मचान) के नीचे बैठा हुआ है, मंगरा.अरे ओ मंगरा .!" मुंडी घुमा कर मंगरा ने हमें अपनी ओर आतेदेखा।
" यह तो एक काला बछड़ा है, कमाल की बात है कि इसे अपना नाम मालूम है...!"
" यही हमारा मंगरा है-मजनू मंगरा..!"
" क्या ! फिर वह सिलसिल ..?"
" एक सफेद जवान बाछी थी...!" मैंने जवाब में कहा
" तो अभी तक आपने जितनी बातें कही, इश्क मोहब्बत पर जितने भाषण दिए सब इसी मंगरा और उस सिलसिल बाछी के लिए था..? गजब की थोथी कूटते है आप..! मै तो समझा था,मंगरा आपके सगे बेटे का नाम है और सिलसिल कोई लड़की होगी..!"
" आज के सगे बेटों का सिर्फ बाप के दौलत से प्यार रहता है,परमंगरा हमें दिल से प्यार करता है.. बस जल्दी से इसे ठीक कर दीजिए...!"
" चिंता की बात नहीं है,पूठा (पिण्डली) घसक गया है ..!" वैध साधूमहतो ने पैरकी पूरी तरह से जांच पड़ताल करने के बाद कहा" बस गरम पानी और पायला (चावल-धान नापने काकांसा बर्तन)मंगा दीजिए..आपकामंगरा दो दिन में चलने के लायक हो जायेगा ...!"आज नूना भी बहुत खुश था । पंचायत का फैसला उसके पक्ष में आया था । पंचों ने नूना को जायज़ मान लिया था।

लघुकथा

रंजना फतेपुरकर

इंदौर

मो 98930 34331

"दर्पण"

काफिला पर्वतों के पास से गुजरा।कुछ पल घने पेड़ों के नीचे विश्राम किया और आगे चल पड़ा।लेकिन जाते जाते एक यात्री अपना दर्पण वहीं भूल गया।

दर्पण अपने आप को अकेला महसूस करने लगा।लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने देखा दर्पण में एक खूबसूरत चट्टान का प्रतिबिंब नज़र आ रहा था।दर्पण ने देखा,पास ही एक चट्टान गर्व से मस्तक उठाए खड़ी थी।उसके सांवले रूप ने दर्पण के ह्रदय में हलचल मचा दी।दर्पण चट्टान के आकर्षण में डूबने से अपने आप को रोक नहीं पाया।एक दिन जैसे ही सूरज की किरणें दर्पण पर पड़ीं,दर्पण हवा के झोंके से ज़रा सा हिला और सूरज की किरणें परावर्तित हो चट्टान पर गिरने लगीं।चट्टान का ध्यान अनायास ही दर्पण की तरफ गया।दर्पण ने चट्टान को अपनी तरफ देखता पा तुरंत चट्टान से कहा-

"ऐ प्यारी चट्टान मैं अपना हृदय तुम्हारे सांवले,सलोने सौंदर्य को अर्पित करना चाहता हूं।मेरे ह्रदय में केवल तुम्हारी छवि है।"

लेकिन चट्टान का हृदय तो पत्थर का था।दर्पण के प्रणय निवेदन का उसपर कोई असर नहीं पड़ा।

चट्टान बोली-

"दर्पण तुम कैसे कह सकते हो तुम्हारे हृदय के हर हिस्से में केवल मेरा प्रतिरूप है तुम्हारे तो सामने जो आता है उसी की छवि तुम में नज़र आती है।"

दर्पण बोला-"समय बताएगा मेरे हृदय के हर हिस्से में केवल तुम्हारी ही छवि है।"

अचानक तूफान उठा,तेज़ हवा के झोंके से दर्पण उछलकर चट्टान से जा टकराया।दर्पण के असंख्य टुकड़े टुकड़े हो गए।चट्टान ये देखकर हैरान रह गई कि दर्पण के हर टुकड़े में केवल उसीका प्रतिबिम्ब नज़र आ रहा था।चट्टान का प्रस्तर हृदय भी दर्पण के अनूठे प्रेम पर समर्पित हो गया।

कहानी

बसन्त राघव
रायगढ़,
छत्तीसगढ़

"दीवार"

वह एक संयुक्त परिवार था, लेकिन जब आशीष की शादी हुई,परिवार विघटन के कगार पर जा खड़ा हुआ। पहले विभाजन स्थूल न होकर सूक्ष्म था। विचार वैषम्य की दीवार उठने लगी,जो दिखाई नहीं पड़ती थी- महसूस की जाती थी।

आशीष स्थानीय मिडिल स्कूल में अध्यापक था। हालाकि उसने इतिहास एम.ए.(प्रथम श्रेणी)में पास किया था,लेकिन सशक्त 'पहुंच' न होने के कारण हाईस्कूल में व्याख्याता पद के लिए योग्य नहीं समझा गया। तथापि वह अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट था। बजाय इसके कि वह किसी नेता या विधायक की चिरौरी करता, वह निम्न श्रेणी शिक्षक बने रहना ही श्रेयस्कर समझा।

आशीष के पिता श्याम पंडा आठ एकड़ जमीन के कास्तकार थे। महंगाई के जमाने में आठ एकड़ जमीन जो असिंचित हो,जरूरत की अधिकांश चीजें जुटा नहीं सकती।

आशीष की पत्नी मधु पढ़ी लिखी थी। बड़े शहर की लड़की थी- क़रीने से रहना चाहती थी। कपड़ों की शौकीन थी,परन्तु अक्सर उसका यह शौक पूरा नहीं हो पाता था। वह अपने घर को सजा - संवार कर रखना चाहती थी। वह कभी - कभी अपमानित महसूस करती ,जब घर में उसको 'पराए घर की' समझा जाता । आम बहुओं की तरह वह अलग गृहस्थी बसाने के चक्कर में नहीं रहती। वह फिजूल खर्ची भी नहीं थी, अपनी सीमाओं के भीतर रहकर वह खुश और संतुष्ट रहना चाहती थी। ऐसी स्थिति में जब कोई उसका प्रतिवाद करता तो वह सहन नहीं कर पाती थी। उसे लगता जैसे उसके विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है।

आशीष की माँ पुराने विचारों की स्त्री थी। नए जमाने की हवा में उसकी सांसे घुटने लगतीं। पूर्वाग्रह और रुढ़ियों में उसका पूरा जीवन बीता था। नए विचार उसे ढकोसले और फालतू लगते। फिर भी वह तोड़ फोड़ नहीं चाहती थी। घर में सुख शांति बनी रहे, इसके लिए वह बराबर देवी - देवताओं से मनौतियां मांगती रहती।

कलह - क्लेश से वह दूर रहना पसंद करती थी, फिर भी जब छोटी- छोटी बातों को लेकर बखेड़ा खड़ा हो जाता तब समझ नहीं पाती, ऐसा क्यों हुआ?। जबकि वह निर्दोष है। अक्सर वह दूसरों में छिद्रान्वेषण करती।

श्याम पंडा एक तरह से पुराने और नए के मध्य सेतु का कार्य करते थे। परन्तु जब नए और पुराने जीवनमूल्यों और आदर्शों के बीच टकराव होता, वह निर्लिप्त एवं तटस्थ नहीं रह पाते थे। नए विचारों के पोषक होते हुए भी, , यथोचित कद्र नहीं कर पाते थे।

उस दिन,आशीष की बहन सुजाता को देखने के लिए कुछ लोग आए हुए थे। लड़का बी.ए. था और आशीष का पूर्व परिचित भी था। आधुनिक कृषि की उसमें अच्छी समझ थी। आशीष ने ही उन लोगों को आमंत्रित किया था। उनकी खातिरदारी में किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी,उसने। जी खोलकर सेवा सत्कार किया जा रहा था। माँ ने टोक ही दिया- "आशीष ,थोड़ा हाथ रोककर खर्च करो.....। रोज कहीं न कहीं से लड़के वाले आते हैं, खा - पीकर चले जाते हैं। जाने के बाद एक फोन करना भी जरूरी नहीं समझते। लड़की थोड़ी सांवली क्या हो गई इन लोगों को पसंद ही नहीं आती..... इन्हें अप्सरा चाहिए।

आशीष को माँ की यह बात अच्छी नहीं लगी, बोला- 'जानता हूँ माँ , ऐसे मौके में तुम्हें टोकने की आदत है। परन्तु मेहमानों की ठीक से खातिरदारी न करने का परिणाम तो जानती हो न? माँ , मैं कहे देता हूँ- इन लोगों को किसी भी प्रकार की कमी महसूस न हो- यह मैं बर्दाश्त नहीं करुंगा.....। लड़का सुंदर है, पढ़ा लिखा है, खाते - पीते घर का है....."

उन लोगों ने लड़की देखी और पसंद कर ली। रात्रि को,रिश्तेदार इकट्ठे हो गए, पंडित ने जन्मकुंडली मिलायी। लेन - देन की बातचीत होने लगी। लड़के का बाप बनिया निकला- बड़ी बेशर्मी से उसने लंबी चौड़ी फेहरिस्त थमा दी।

आशीष को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहाँ तो विवाह-शुद्ध संस्कार और दो आत्माओं का पवित्र मिलन माना जाता है और हमारा यह समाज इसकी आड़ में व्यापार कर रहा है , विडंबना है। आशीष से रहा न गया, उसने कहा-' देखिये शर्मा जी , हम तो लड़की वाले हैं लड़की के साथ कुछ न कुछ तो देंगे ही अपनी हैसियत के मुताबिक.....और हो सकता है आपने जिन चीजों की मांग की है उससे भी अधिक दें....लेकिन आपसे निवेदन है विवाह को कृपया व्यापार का रूप न दे....."।

जितने भी लोग वहां पर मौजूद थे, आशीष को ऐसे देख रहे थे जैसे उसने कोई आश्चर्यजनक घटित कर दिया हो! श्याम पंडा ने आशीष को अलग से बुलाकर कहा 'बेटे , यह सब तो होता ही है, थोड़ी शांति से काम लो, किसी तरह सुजाता के हाथ पीले कर विदा कर दें,इसी में कल्याण है।'

आशीष चुप्पी लगा गया परन्तु उसके माथे पर बल

जरूर पड़ गए। मेहमान अगली सुबह विदा हो गए थे।

घर में जब कभी कोई नई चीजें आतीं आशीष की माँ कहती-' फालतू है, इसके बिना क्या काम नहीं चलता था?" आशीष की पत्नी मधु की बहुत दिनों से इच्छा थी कि घर में एक 'ए.सी' लग जाए। जेठ की दोपहरी में ईंट का मकान अत्यधिक तपने लग जाता है। गर्मी असहाय हो जाती है। एक दिन जब आशीष और उसके पिता श्याम पंडा इसी संदर्भ में चर्चा कर रहे थे, मधु ने अपने मन की बात कह दी। आशीष की माँ जो वहीं पर बैठी हुई सब्जी काट रही थी, बोल उठी-'एक क्यों , दो ए.सी लगवा लो,हमें तो गर्मी लगती नहीं जैसे..... मैं पूछती हूँ, इससे पहले कूलर से दिन नहीं कटते थे क्या....?"

और वह ऐसे चुप हो गई जैसे स्थिति को गंभीर बनने से रोकने के लिए यह बहुत जरूरी हो।

एक बार आशीष ने दो साड़ियां लायी। माँ को जब साड़ियों की कीमत बतायी गई, वह विस्फारित नयनों से अपनी बहू को देखने लगी बोली-" पचास हजार रुपये की साड़ी पहनेगी हमारी बहूरानी ....." मधु ने भी उसी तर्ज में कहा -"एक साड़ी आपके लिए भी है माँ जी....."

नए और पुराने के बीच अदृश्य दीवार उठती चली गई परन्तु एक बड़ी घटना ने इस दीवार को ध्वस्त कर दिया।

जब कोरोना ने पूरी दुनिया में कहर बरपा रखा था। लॉक डाउन लगा हुआ था। पृथ्वी उदास थी, चिताओं से आसमान धधक उठा था। चिलचिलाती धूप में नंगे पांव कोलतार की सड़कें नापी जा रही थीं, रेल की पटरियों पर रोटियां बिखरी हुई थीं। चारों ओर दुःख और तकलीफों के पहाड़ खडे हो गए थे। लोग अपने ही घरों में कैद हो गए थे , नजरबंद होने की तरह। भीतर खौफ था, बाहर सन्नाटा। आक्सीजन की कमी थी, हवाओं में मौत नाच रही थी। आखिरी विदाई भी इतनी निष्ठुर होगी किसने सोचा था भला । दवाओं की कालाबाजारी की जा रही थी। मौत का व्यापार हो रहा था। फिर भी नेता राजनीति कर रहे थे। सत्ताधारी थाली बजवा रहे थे, टीका महोत्सव की चर्चाएं टीवी चैनलों में जोरशोर से दिखाई जा रही थीं। आशीष का मन यह सब देख अवसाद से भर जाता। ऐसे भयानक खौफनाक माहौल में जब इंसान को सबसे ज्यादा हमदर्दी की जरूरत होती है, लोग बहाने तलाशते। संवेदनाएं जैसे मर गईं थीं। मनुष्य मनुष्य के बीच एक अदृश्य दीवार खड़ी हो गयी थी।

सावधानियां बरते जाने केबावजूद श्याम पंडा और उसकी बेटी सुजाता को भी कोरोना ने अपनी गिरफ्त में ले ही लिया। पहले सर्दी खांसी आना शुरू हुई फिर तेज बुखार के साथ - साथ पसलियों, पीठ और पेट में बहुत तेज दर्द होने लगे ,मधु को सारा माजरा समझते देर नहीं लगी ,उसने बिना देर किए अपने पूर्व परिचित डाक्टर केनन से मोबाईल से सम्पर्क किया। डाक्टर केनन की सलाह पर ही मधु ने ससुर एवं ननद सुजाता को होम आईसोलेशन में रखा और उनकी खूब सेवा ,जतन की- उनकी मनपसंद चीजों के अलावा फल, चटनी, आवले का मुरब्बा खिड़की से देती। वीडियो काल से उन्हें भाप लेने और कुछ समय पीठ के बल सो कर सांस लेने की हिदायतें देती रहती । थर्मा मीटर और ऑक्सीमीटर से बराबर रीडिंग लेने के लिए, तो कभी कौन सी दवा कब लेनी है , बताती रहती थी। वह कमरे में भले नहीं जाती थी, लेकिन दरवाजा जब भी खुलता बाहर खड़ी मधु दोनों का हौसला जरूर बढ़ाती । मधु की सास दूर से यह सब देखती रहती, उसे रात भर नींद नहीं आती थी, बुरे - बुरे ख्याल आते रहते थे। गली में जब कुत्ते भौंकते तो वह सहम जाती, चौबीसों घंटे भगवान का जाप करती। हफ्ते भर में मधू की सेवा सुश्रुषा और सास की दुआएं असर दिखाने लगीं। पन्द्रह - अठारह दिनों में श्याम पंडा और सुजाता बिलकुल स्वस्थ हो गये। सास आपातकाल में मधु की अद्वितीय भूमिका के आगे नतमस्तक हो गई थी, मन ही मन वह मधु को खूब आशीर्वाद देती रहती। ईश्वर को धन्यवाद ज्ञापित करती ,ऐसी बहू देने के लिए घर में जो एक अदृश्य दीवार उठ खड़ी हुई थी, अंधेरे की वह दीवार आज पूरी तरह से ध्वस्त हो गई थी। सुनहरा उजाला अपनी पूरी रंगत के साथ बगर गया था ।

मन का रंग उजड़ जाने पर

काव्य

मन का रंग उजड़ जाने पर
तन को रंग कर क्या करते हम।
इस लम्बी बीमार उमर को
ऐसे कब तक समझाते हम ।

हर दिन थाल सजाकर अपना
चंग बजाकर क्या गाते हम ।
मन का रंग उजड़ जाने पर
तन को रंग कर क्या पाते हम।
इस लंबी बीमार उमर को
ऐसे कब तक समझाते हम।

उब २हे थे थे दिशाहीन हो
पांव नहीं रुकना चाहते थे।
कुछ क्षण को ग्लि जाएं अकेले
कह कर कुछ बढ़ना चाहते थे।

फुर्सत की है घड़ी किसे जो
ज्यादा देकर उलझाते हम।
मन का रंग उजड़ जाने पर
तन को रंग कर क्या पाते हम।
इस लंबी बीमार उमर को
ऐसे कब तक समझाते हम।

रामस्वरूप मूँदड़ा
बूँदी-323001 (राज)

कहानी

अर्चना त्यागी
व्याख्याता रसायन विज्ञान
एवम् कैरियर परामर्शदाता
जोधपुर (राज.)

"साक्षात्कार"

मेरे सामने कुर्सी पर बैठे आदमी को काफी देर तक देखने के बाद मैंने मन में ठान लिया कि आज मुझे मिस्टर वशिष्ठ से बात करनी ही होगी। तीन दिन से यह व्यक्ति ऑफिस अा रहा है और मै उसे वापस भेज रहा हूं। मेरी अंतरात्मा मुझसे प्रश्न किया" तुम बात कर पाओगे मिस्टर वशिष्ट से ? उन्होंने तुम पर अहसान करके तुम्हे अपनी कंपनी में नौकरी दी है। उनसे कैसे पूछोगे कि आपने किसी दूसरे की जगह मुझे क्यूं रखा ? उनसे वादा भी किया था नियुक्ति के समय कि तुम्हारे पास आने वाली समस्याओं के लिए तुम उन्हें परेशान नहीं करोगे। अपने सभी फैसले खुद करोगे।

मैंने झुंझलाकर खुद को ही जवाब दिया" हां मैंने उनसे वादा किया था। लेकिन वो कंपनी के मालिक हैं। किसको रखना है यह उनके अलावा और कोई कैसे बता सकता है ? मैं तो एक कर्मचारी ठहरा। उनकी दया है कि उन्होंने बिना कोई पूछताछ किए, मेरी बातों पर विश्वास करके मुझे नौकरी पर रखा है। अचानक पार्क में नहीं मिले होते तो आज मैं इस कंपनी का मैनेजर नहीं होता। मैं ऐसे किसी कि बात पर विश्वास करके अपनी नौकरी नहीं खोना चाहता।पहले भी गिनकर दस नौकरी छोड़ चुका हूं। स्वतंत्र फैसले लेने के कारण और लोगों की मदद करने के कारण।" मैंने सिर को झटका। व्यस्त होने का बहाना किया।

"आप कल आइए श्रीमान, तब तक मैं मिस्टर वशिष्ठ से बात कर लूंगा आपके विषय में।" मैंने उसे समझाते हुए कहा और फिर अपने काम में व्यस्त हो गया। उसने थोड़ा रोष से जवाब दिया" आप तीन दिन से यही बात दोहरा रहे हैं। मैं क्या नहीं जानता कि आप चाहें तो अभी उनसे बात कर सकते हैं। किन्तु आप नहीं चाहते कि मेरा कोई फायदा हो। आप मेरी जगह ही विराजमान हैं। मै ही इस कुर्सी पर बैठा करता था। मुझे पारिवारिक समस्या के चलते अचानक जाना पड़ा और आपका उदय हो गया। मैं उसकी बातों से तिलमिला उठा फिर भी बस इतना ही कहा " आप धैर्य रखें श्रीमान, मै पूरी कोशिश करूंगा कि आपको आपकी कुर्सी वापस मिल जाए। अभी आप जाइए। दो दिन बाद मिस्टर वशिष्ठ आएंगे। मैं तुरंत आपको बुलवा लूंगा।"

"बल्कि आप ना अा पाएं तो फोन करके आपको बता दूंगा। "मैंने अपना स्पष्टीकरण दिया। " नहीं साहेब आप बस फोन करना में उसी समय हाजिर हो जाऊंगा।" उसका रोष अब विनम्रता में बदल गया था। मेरी और देखा और उठकर चला गया। मैंने एक राहत की सांस ली। लेकिन कल के बारे में सोचकर परेशान हो उठा। मिस्टर वशिष्ठ से बात करना मतलब एक और साक्षात्कार। लेकिन बात तो करनी ही पड़ेगी। शाम को ऑफिस से घर पंहुचा तो उनको फोन करना नहीं भूला।

स्वाभाविक भी था। इतनी बड़ी कंपनी के मालिक से सीधे मिलना, बड़ा काम था। एक शब्द की भी गलती पर मेरी नौकरी भी जा सकती थी। शाम को तैयार होकर उनके घर पहुंचा। उनके बंगले में बने उनके व्यक्तिगत ऑफिस में उनका इंतजार कर रहा था। तभी उन्होने अंदर प्रवेश किया। मैं सम्मान में उठ खड़ा हुआ। हाथ जोड़कर अभिवादन किया। चरण स्पर्श करने ही वाला था कि उन्होंने बैठने का इशारा कर दिया। मैं उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। मिस्टर वशिष्ठ मुस्कुराए। " बोलो क्यूं परेशान हो संदीप ? ऐसा क्या हुआ मेरे पीछे कि फोन करना पड़ा तुम्हे ?"

मैंने हिममत करके उनकी बात का उत्तर दिया। " सर मेरे स्तर पर सुलझने वाली समस्या नहीं थी। कंपनी में कर्मचारियों की नियुक्ति से संबंधित समस्या मेरे वर्तमान कार्यक्षेत्र से बाहर है। मैं उससे संबंधित कोई निर्णय नहीं ले सकता हूं। एक व्यक्ति प्रतिदिन ऑफिस आकर मुझे बताता कि उसको बिना बताए, उसकी जगह आपने मुझे नियुक्त कर दिया है। आप विदेश में थे। अपनी सामर्थ्य अनुसार मैंने उसे समझाने की पूरी कोशिश की। परन्तु वह मानने को तैयार ही नहीं था। इसीलिए मुझे आपको फोन करना पड़ा।" मैं एक सांस में ही सब बोल गया।

" वो सही कह रहा है। उसने मुझे मेल भी किया था। लेकिन नौकरी वह स्वयं छोड़कर गया था। कंपनी को बिना नोटिस दिए।" उन्होंने कुछ सोचते हुए जवाब दिया। "अच्छा एक बात बताओ, उसके साथ हमे क्या करना चाहिए ?" उन्होंने फिर एक प्रश्न पूछा। मैं अब थोड़ा सहज महसूस कर रहा था। मैंने एक पल सोचे बिना उनके प्रश्न का उत्तर दे दिया।"सर हम उसके आचनक नौकरी छोड़ने का कारण पता लगाना चाहिए। और लौटकर वापिस आने का भी। यदि उचित कारण था तो उसे नौकरी पर बहाल कर देना चाहिए।"

"परन्तु तुम कहां जाओगे ?" उन्होंने अगला प्रश्न किया। इसी प्रश्न का मुझे डर था। फिर भी उत्तर तो देना ही था। " मैं कोई और नौकरी तलाश करूंगा सर। वैसे भी मेरी यह नौकरी आपका अहसान है मुझ पर। उस दिन पार्क में मेरी बातें सुनकर आपने मेरी सहायता की है।" कहकर मैं चुप हो गया।" ठीक है अभी तुम घर जाओ कल बात करते

हैं ऑफिस में ।" उन्होंने कुछ सोचते हुए मुझे जवाब दिया। मैं उन्हें प्रणाम करके उठ गया। घर आकर भी मैंने कुछ नहीं किया। कई दिनों से ठीक से नहीं सो पाया था इसलिए बिस्तर पर लेटा और सो गया।

मैं अगले दिन ऑफिस गया। परेशान नहीं था। बस नियति से थोड़ी शिकायत थी। यह ग्यारहवीं नौकरी थी जो मेरे हाथ से जाने वाली थी। मेरी किसी गलती के कारण नहीं। वसुधैव कुटुंबम् की मेरी विचारधारा के कारण। और मैं चाहकर भी कुछ नही कर सकता था अपनी नौकरी को बचाने के लिए। दो दिन की छुट्टी का प्रार्थना पत्र मैंने लिख लिया था। नौकरी छूटने से पहले पता लगा लेना चाहता था कि वह व्यक्ति किस मजबूरी में नौकरी छोड़कर गया था और अब वापस लौट कर आने को मजबूर था।

ऑफिस पहुंचा तो आधे घण्टे के अंदर ही मिस्टर वशिष्ठ ने बुला भेजा। चुपचाप उनके कमरे की ओर बढ़ा। ऑफिस में सबकी नजरें मेरी ओर ही थी। प्रश्नवाचक निगाहों से मैं समझ पा रहा था कि सब जानना चाह रहे थे कि मैंने क्या कर दिया है ? जो चेयरमैन साहेब ने बुला भेजा है।

कमरे में दाखिल होने पर उन्होंने अपने सामने रखी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। " धन्यवाद सर" कहकर मै बैठ गया। उन्होंने बिना कुछ कहे एक लिफाफा मेरी और बढ़ाया। मैं समझ गया टर्मीनेशन लेटर ही होगा। मैंने उनके हाथ से लिफाफा ले लिया और वापिस जाने के लिए मुड़ा।

मिस्टर वशिष्ठ अपनी कुर्सी से खड़े हो गए। बोले। "पढ़ोगे नहीं क्या लिखा है लेटर में?"

मना कैसे करता। " जी सर कहकर मैंने लिफाफा खोला। पढ़कर मैं असमंजस कि स्थिति में था। ऐसा लगा मानो जमीन के नीचे से उठाकर किसी ने सीधे आकाश में उछाल दिया हो। उस लेटर में को लिखा था मैं विश्वास नही कर पा रहा था। मैंने उन्हें बताना चाहा " सर, सी ई ओ साहेब का नियुक्ति पत्र है। मुझे लगता है गलती से मेरा नाम लिखा गया है।" मिस्टर वशिष्ठ ने ठहाका लगाया। गलती से नहीं श्रीमान, सोच समझ कर लिखा है। कल मेरे घर पर हुए तुम्हारे साक्षात्कार के आधार पर। आपकी कर्तव्य निष्ठा, निर्णय लेने की क्षमता और सबसे बढ़कर मानवीय संवेदना से प्रभावित होकर यह कंपनी आपको यह सम्मानित पद सुशोभित करने के लिए आमंत्रित करती है।" मैंने कुछ बोलना चाहा पर इशारे से उन्होंने रोक दिया।

"मैं जानता हूं तुम क्या कहना चाहते हो" उन्होंने मुस्कुराकर कहा। तुम्हारी सभी पुरानी कंपनियों में मैंने पता कर लिया है। उनमें से किसी भी कंपनी ने तुम्हारी योग्यतानुसार कार्य नही दिया। इसीलिए उन्होंने एक योग्य कर्मचारी को खो दिया है। मेरी कंपनी ने तुम्हारी योग्यता को पहचान लिया है। तुम्हारी योग्यता के आधार पर ही तुम्हे इस पद के लिए चुना गया है।" मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैं कभी अपने पैरों के नीचे जमीन को देखता कभी कमरे की छत को। आगे बढ़कर मैंने मिस्टर वशिष्ठ के चरण स्पर्श किए। ये ग्यारहवीं नौकरी जाते जाते ऐसे बच गई थी जैसे मेरी ही किस्मत में लिखी थी।

"मिस्टर नागर को क्या बोलना है सर?" मेरी बात खत्म होने से पहले ही उन्होंने अपना निर्णय सूना दिया। "वो हमारे नये जनरल मैनेजर हैं तुम्हारे स्थान पर। बाहर ही बैठे हैं। मैंने ही उन्हें तुमसे बात करने के लिए कहा था। उन्होंने सब मेरे कहने से किया है। वो पहले कंपनी में काम नहीं करते थे, अभी नियुक्त हुए हैं। हां उनका नियुक्ति पत्र तुम्हे ही देना है।जाइए अपने नए ऑफिस में और अपना काम शुरू कीजिए।" उन्होंने आदेशात्मक स्वर में कहा।" जी सर" कहकर मैं बाहर अा गया। आज मेरा वक़्त बदल गया था। भगवान ने मेरी झोली में अपना खजाना डाल दिया था।

मेरा साक्षात्कार मिस्टर वशिष्ठ ने अपने घर पर लिया था इसलिए शाम को मैं धन्यवाद देने उनके घर पर पंहुचा। " बहुत धन्यवाद सर। लेकिन इतने कुशल कर्मचारियों में से आपने मुझे क्यूं चुना सर।" वो मुस्कुराए, फिर बोले " उस दिन पार्क में तुमसे बात करके मुझे अपने संघर्ष के दिन याद अा गए। सच्चाई पर टिके रहना। दबाव में भी सही निर्णय लेना। और सबसे बढ़कर इंसानियत, जो दूसरे कर्मचारियों को अपने बराबर माना तुमने, ने मुझे प्रभावित किया। मेरा सौभाग्य है कि तुम मुझे मिले। अब संशय छोड़कर, मन लगाकर काम करो।" मैं उनके चरण स्पर्श करके केवल धन्यवाद ही कह सका। किन्तु उनके शब्दों ने मेरा जीवन ही नहीं, जीवन जीने का नजरिया ही बदल दिया। कभी सोच ही नहीं सका कि दस सालों बाद इतनी बड़ी नौकरी पार्क में पड़ी मिल जाएगी।

उदय राज वर्मा उदय

गौरीगंज अमेठी उत्तर प्रदेश

किताबें खुली
ज्ञान को पाकर के
ज्ञानी हो गये
***
महामूर्ख थे
किताबों साथ हुई
पंडित बने
***
अंधेरा भागा
उजाला हुआ दिल
किताबें साथ
***

कहानी

नीलू चोपड़ा
गुरगाँव
divyachopra1105@gmail.com

"ऋणमुक्त"

आलोक जैसे ही स्कूल से घर लौटा तो पाया कि गांव से उसकी दादी जी आई हुई थीं। वही मीठी आवाज़ ,ममता को छलकाता चेहरा। मम्मी उसे यूनिफॉर्म बदलने के लिए कहती ही रह गई परन्तु आलोक सीधा जाकर दादी से लिपट गया। दादी और पोते का ऐसा मिलन दुर्लभ ही देखने को मिलता है। आलोक मचल कर बोला दादी अब मैं आपको जल्दी जाने नहीं दूँगा। पोते का प्यार देख दादी की आँखे भरग ई। आलोक की दादी, पति की मृत्यु के बाद पहली बार अकेली शहर आई थी। मन उदास था पर आलोक का प्यार देख दिल बहल सा गया था। अगले ही दिन आलोक ने दादी से उनके हाथों से बने अपने मनपंसद गुड़ और आटे से बने गुलगुले बनवाकर टिफिन में ले जाने की ज़िद की, तो मम्मी ने उसे डांट दिया, क्या टिफिन में कोई ऐसी चीज़ें लेकर जाता हैं ? सब बच्च तुम्हारी मज़ाक बनाएंगे। सेंडविच या बटर ब्रेड या मैगी लेकर जाओ पर आलोक नहीं माना। अब आलोक की मम्मी का गुस्सा अपनी सास पर उतरा। वह क्रोध में बोली यह क्या है, अम्मा आपने तो आते ही आलोक को बिगाड़ना शुरुकर दिया। आलोक की दादी देवकी बाई बेचारी आटे से सने हाथ लेकर खड़ी खड़ी सोचने लगी अब वह क्या करे? इस बीच पता नहीं कब आलोक बिना टिफ़िन लिए ही स्कूल चला गया ।सारे दिन देवकी बाई सहमी सी उदास बैठी रही।उसका भी खाना खाने को दिल न किया।

आलोक अपनी दादी से बहुत हिलमिल गया था। अब स्कूल से आकर उसका अधिकांश समय दादीजी के साथ गुजरता था। दादी उसे होम वर्क करने के बाद सुलाती ।रात को शिक्षाप्रद कहानियां भी सुनाती। आलोक ने देखा मम्मी ,पापा और बड़ी दीदी अक्सर बाज़ार घूमने फिरने जाते रहते हैं परन्तु दादी को तो कोई भी अपने साथ कहीं नहीं ले जाता। आलोक उन्हें मंदिर तक तो ले जाता था। मम्मी ,दादी के कपड़े भी अलग धुलवाती उनके कपड़े वशिंग मशीन में नहीं डालने देती। जब उनकी किटी पार्टी होती तो वह दादी को कमरे से बाहर निकलने से भी मना कर देती। उसे यह सब अच्छा नहीं लगता था परन्तु वह छोटा था इस का कारण समझता नहीं था इसलिए चुप रह जाता था। कुछ दिन बाद ही दादी अपने गाँव लौट गई। आलोक ने मम्मी से दादी के इतनी जल्दी वापिस जाने का कारण पूछा तो वो बोली कि उनका यहाँ मन ही नहीं लग रहा था इसलिए जाना चाहती थी। समय का पहिया घूमता गया। आलोक भी अब युवा हो चुका था दीदी की शादी तय हो गई थी । शादी में शामिल होने दादी को फिर गाँव से बुलाया गया। पोती की शादी होने की खुशी दादी के चेहरे पर झलक रही थी। वह बड़े उत्साह से अपने खानदान में शादी के समय होने वाले रीतिरिवाजों के बारे में मम्मीपापा और दीदी को समझा रहीं थीं। अच्छी बात यह थी कि वो सब भी बहुत ध्यान से उनकी बातें सुनकर उसका पालन भी कर रहे थे।आलोक अब बड़ा हो चुका था उसे दादी को ऐसे सम्मान मिलते देख बहुत ही खुशी हो रही थी।

शादी के दिन घर में बड़ी चहल पहल थी। बहुत सारे रिश्तेदार भी आ गए थे। दादी अपने सभी रिश्तेदारों से मिलकर बहुत खुश थीं। आलोक के जिम्मे भी बहुत सारे काम थे। अचानक किसी काम के सिलसिले में वह मम्मी और दीदी से कुछ पूछने के लिए उन्हें खोज रहा था परवो दोनों कहीं दिखाई नहीं दें रहीं थीं ऐसे ही घूमते हुए उसे स्टोर रूम से मम्मी और दीदी की कुछ ज़ोर से बोलने की आवाज़ें सुनाई दी उसमें दादीकी भी एक धीमी आवाज़ थी। उसने दरवाज़ा खटखटाया ,आवाज़ दी पर कोई जवाब न आया। उसे बहुत जल्दी थी इसलिए रुका नहीं चला गया। जब वह बाहर से वापिस लौटा तो उसने दादी को कुछ उदास सा पाया शादी वाला घर था कुछ पूछने का समय भी नहीं था दीदी की विदाई अच्छी तरह हो गई। विदाई के बाद मेहमान भी लगभग जा चुके थे। आलोक भी अब फुर्सत में था वह दादी के कमरे में गया तो देखा दादी भी अपना टीन का बक्सा बंदकरके जाने को तैयार बैठी थी। पापा उन्हें बस में बैठाने के लिए ले जाने को खड़े थे वह हैरान रह गया।दादी कोई मेहमान तो नहीं थीं फिर इतनी जल्दी वापिस क्यों जा रहीं हैं ?उसने पापा से पूछा तो पापा उसे डपट कर बोले दादी को गाँव में जरूरी काम है तुम बीच में दखल मतदो। दादी की रोती हुई आँखे बहुत कुछ कहना चाहती थी परन्तु कह न पाई। वह मन की बात मन में ही लेकर चली गई। उनके जाने के बाद आलोक के मन में बहुत सारे सवाल उठ रहे थे जिनके उत्तर उसे ढूढने थे।

कुछ समय बाद आलोक की भी नॉकरी लग गई। वह सबसे पहले दादी से आशीर्वाद लेंने उनके गाँव जा पहुँचा। वह वहाँ एक बार बचपन में गया था अतः गाँव में प्रवेश करके उसने अपना परिचय देकर दादी का पता ठिकाना पूछा तो लोग उसे अवज्ञा भरी नज़रों से देखने लगे। एक युवक उसे दादी के घर तक ले जाने के लिए आगे आया। आलोक उसके साथ चल पड़ा। रास्ते में चलते हुए उस युवक ने आलोक

को बड़ी वितृष्णा से देखते हुए पूछा तुम अब गोमती काकी से क्या लेने आए हो? काका की मृत्यु के बाद आप लोग सब कुछ तो उनसे ले चुके हो। आलोक ने चकित होकर पूछा हमने उनसे क्या ले लिया जराबताओ तो ? उस युवक ने कहा भैयाजी, क्यों भोले बनते हो आपके पिता को तो मैं बचपन से जानता हूँ वह मेरे पिता के पक्के दोस्त थे। काकाजी ने बड़ी उम्मीद से उन्हें शहर पढ़ने भेजा था पर वो ऐसे गए कि फिर उस रूप में लौटेकर ही नहीं आए। उन्हें गाँव की तरक्की के लिए शिक्षा लेने भेजा था परन्तु वह तो शहर के रंग में ही रंग गए वहीं अपनी पसन्द से बिन बताए ब्याय कर लिया। काकाजी बेटे के लौटने की इंतजार में ही चले बसे। उसके बाद एक बार शहर में आलीशान मकान बनवाने के लिए गोमती चाची से पुश्तेनी पच्चीस बीघा के खेतो के कागजों पर उनका अंगूठा लगवाने के लिए आए थे।काकी की दो दुधारू गाय को बेचकर चले गए। अभी कुछ समय पहले अपनी बेटी की शादी के बहाने गोमती काकीको गए थे। बहाने से सारे खानदानी ज़ेवर भी ले गए। यह सुनकर आलोक शर्म से पानी पानी हो गया यदि यह सब बातें सही हैं तो वह दादी के सामने क्या मुँह लेकर जाएगा। हिम्मत कर वह उस युवक के साथ दादी के कच्चे जर्जर घर में घुसा दादी एक टूटी सी खाट पर बैठी थीं। चूल्हे पर कुछ पक रहा था। पूरी कोठरी में धुआं भरा था। अपनी दीनहीन दादी की यह दशा देख उसका दिल कराह उठा। वह युवक कहने लगा कि हम से चौधराइनजी की यह दशा देखी नहीं जाती पर वो इतनी स्वाभिमानी है किसी की मदद भी नहीं लेती। भोजन बनाने में बहुत निपुण है कुछ अमीर घरों में जाकर खाना बना आती है। आलोक की दादी से नज़रे मिलाने की भी हिम्मत नहीं थी। इसलिए वह दादी से मिले बिना लौट गया। आलोक सीधा अपनी नई नॉकरी ज्वाइन करने चला गया। उसने सोच लिया कि अगर किस्मत में लिखा हुआ तो स्वयं को दादी के दर्शन करने योग्य बनाकर ही उनके सामने जाऊँगा वरना उन्हें अपना मुँह न दिखाऊँगा।

आलोक ने अपनी योग्यता, कड़ी मेहनत और लगन से बहुत जल्दी ही अपनी कम्पनी के उच्चतम पद को प्राप्त कर लिया। बहुत दिनों से उसके दिमाग में एक योजना बन रही थी। अपने बंगले से कुछ किलोमीटर दूर एक सुंदर सा गाँव था। उसने अपनी अब तक की जमा पूँजी में थोड़ा लोन लेकर मिलाया। और एक छोटा सा फ़ार्म हॉउज खरीद लिया। वहाँ 1 गाय, एक माली देखभाल के लिए रख लिया। दुर्गा पूजा की छुट्टियों में वह दादी को लेने गाँव गया और उन्हें अपने साथ लेकर आ गया। आलोक ने व्यस्तता का बहाना बना, बहुत समय से मम्मी पापा से संपर्क ही नहीं किया था।

दरअसल वो उनसे बहुत नाराज़ था। अपने मम्मी पापा द्वारा दादी के साथ किए उनके स्वार्थी व्यवहार ,लालच की पराकाष्ठा पारकर देने उनसे कोई सम्पर्क रखना नहीं चाहता था। आलोक ने मम्मी पापा को भी दुर्गा पूजा एक साथ मनाने के लिए अपने घर बुला लिया दीदी भी मायके आई हुई थी। वह भी आ गई। आलोक ने दादी को अंदर वाले कमरे में बैठाकर उन्हें कहा जब मैं कहूँ तब ही बाहर मत आना। आलोक के मम्मी पापा आलोक का ठाटबाट देखकर बहुत खुश हुए। पापा बोले बहुत खूबसूरत जगह है। रिटायर तो हो ही चुके हैं, क्यों न अपना घर किराए पर दे यहीं सब एक साथर हें? दीदी भी चहकी मैं भी कुछ दिनों के लिए तुम्हारे जीजाजी को यहीं बुलवा लेती हूँ। आलोक मुस्कुराते हुए बोला जरूर बुला लेना। बातों बातों में आलोक ने उनसे पूछा कि पापा, आपने अपना मकान बनाने के समय इतने पैसे कहाँ से जुटाए क्या लोन भी लिया था? पापा तुरन्त बोले, कुछ जमापूंजी थी और कुछ लोन ले लिया था। अब आलोक ने दादी को बाहर आने के लिए कहा। दादी को देख उन सबके होश उड़ गए बोले अरे, अम्मा यहाँ भी पहुँच गई? अम्मा को भी शांति नहीं है। अरे बुढ़ापा है, आराम से गाँव में बैठकर भगवत भजन करो। अब आलोक को बीच में बोलना पड़ा। मैं दादी को अपने साथ लेकर आया हूँ आप दोनों से बहुत आदर से कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि यह नियम आपको किसने बताया कि जब माता पिता बूढ़े हो जाएं तो उन्हें गाँव या आश्रम में अकेला छोड़ देते हैं? उनकी जीवन भर की कमाई को लेकर आप अपने सुख साधन जुटाने में खर्च कर उन्हें बेसहारा छोड़ दे? खानदानी ज़ेवर जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं उसे जबरन लेकर बेटी के ससुराल में देकर उसे ससुराल में अपनी धाक जमाने की शिक्षा दी जाए। दादी पास बैठी सब सुन रही थी। वह अपनी पोती से बोली बेटी ससुराल में सेवा, प्यार समर्पण से जगह बनाई जाती है धन दौलत और ज़ेवर से नहीं। मेरी यह बात हमेशा ध्यान में रखना।

अगले ही दिन दुर्गामाँ की पूजा के बाद आलोक सबको अपने फार्महाउस में ले गया और अपनी दादी से कहा दादी यह फार्म मैनें आपके और स्वर्गीय दादाजी के नाम पर लिया है। दादी गोमती बाई की आँखों से खुशी के आंसुओं लड़ी लग गई उसने आलोक को गले लगाते हुए ईश्वर सबको तुम्हारे जैसा सपूत दें। आलोक ने सुना था कि माता पिता के द्वारा किए अच्छे या बुरे कर्मो का फल सन्तान को भोगना पड़ता है आलोक प्रसन्न था कि उसने अपने माता पिता द्वारा किए कर्मो का फल समय पर भुगत लिया। आज वह ऋण मुक्त हो गया था।

लघुकथा

डॉ० दलजीत कौर
#2571/40सी
चंडीगढ़ (160036)
9463743144

"आराम"

कई वर्षों से मेरी उससे दोस्ती थी ।मैंने उसके संघर्ष के दिन देखे थे ।पर दोस्ती अच्छी चल रही थी ।जब भी मैं उसके घर जाता ।वह मुझे देखते ही घर से बाहर आ जाता और लपक कर मिलता ।वर्षों से ऐसा ही स्नेह बना हुआ था ।हम दोनों के विवाह हुए ।बच्चों का जन्म हुआ ।मगर कभी दोस्ती की गर्मजोशी कम नहीं हुई ।

अचानक एक दिन उसकी क़िस्मत पलटी और किसी जुगाड़ से उसे एक उच्च पद की प्राप्ति हो गई ।मैं बधाई देने गया ।वह घर से बाहर क्या ?दरवाज़े पर भी नहीं आया ।उसकी पत्नी ने दरवाज़ा खोला और कहा -" वे आराम कर रहे हैं ।"

मेरे आधा घण्टा इंतज़ार करने के बाद वह आया और बहुत साहबी अंदाज़ से मिला ।उस औपचारिकता पूर्ण वातावरण में मेरा दम घुटने लगा ।मैं उठकर घर की ओर चल पड़ा ।मेरे मन में विचार आया ।शायद सभी अफ़सर आराम ही करते हैं।

"सोच"

वह उस समय में डॉक्टर बनी जब लोग लड़कियों को स्कूल भी नहीं भेजते थे ।डॉक्टर से ही शादी हुई ।उसके दो बेटियाँ व एक बेटा हुआ ।समय के साथ -साथ अपना एक बड़ा क्लीनिक बनाया ।बेटियाँ पढ़ने में होशियार थीं ।पर वह बेटियों पर ज़्यादा पैसे खर्च नहीं करना चाहती थी ।उसकी सोच थी -"बेटियों को तो पढ़ -लिखकर पराए घर चले जाना है ।उनके डॉक्टर बनने का हमें क्या लाभ ?"

वह बेटे को किसी भी क़ीमत पर डॉक्टर बनाना चाहती थी ।वही उनके बाद क्लीनिक का उत्तराधिकारी होगा ।उसकी सोच के अनुसार बेटा डॉक्टर नहीं बना ।बुढ़ापे के कारण पति -पत्नी बिस्तर पर आ गए ।क्लीनिक खंडर हो गया ।धीरे -धीरे उसकी दीवारें गिरने लगी ।मगर सोच की दीवारें अभी भी शक्तिशाली थीं ।

"प्रमाण पत्र"

सर्वगुण सम्पन्न बहू के घर आने पर भी सास को बहू पसंद नहीं आई ।विवाह से पहले माँ की अपने ही बेटे से नहीं बनती थी ।परंतु वह इसका दोष भी बहू को ही देती थी ।बहू बड़े घर से आई ।बेटा बहू का साथ देता था ।

रिश्तेदार व सम्बन्धी बहू की प्रशंसा करते थे ।सभी कारण बहू के ख़िलाफ़ थे ।आस -पड़ोस में वह बहू की बुराई करती ।मुहल्ले की औरतें भी बहू को बुरा कहती ।बहू ने किसी से कुछ नहीं कहा ।अंत समय में बहू ने सास-ससुर की ख़ूब सेवा की ।औरतें कहती रही - "ज़मीन - जायदाद के लिए सेवा करती है ।"

औरतें झूठ बोलती रहीं -"इसने कोई सेवा नहीं की ।"

वह चुप रही ।उसने बाहर निकलना छोड़ दिया ।किसी से बात करनी छोड़ दी ।वह अपना काम करती रही ।धीरे -धीरे वह शहर में मशहूर हो गई ।उसे इनाम मिलने लगे ।औरतें अभी भी बोल रही थीं । उसे निकम्मा बता रही थीं ।उसका नाम बुरी बहुओं में ले रही थीं ।

एक दिन मंच पर उससे पूछा गया -" आपको इतने इनाम व प्रणाम पत्र मिल चुके हैं ।आपको कैसा लगता है ?

उसने उदास हो कर कहा -जब तक एक बहू को सास प्रमाण पत्र न दे तब तक इस देश में सभी प्रमाण पत्र व्यर्थ हैं और उसकी अश्रुधारा बहने लगी ।

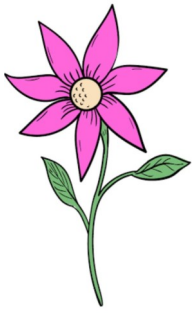

लघुकथा

अर्चना तिवारी
बरोड़ा,गुजरात

"अपराधबोध"

लता को रह रह कर आज सुबह से ही सीने में भारीपन और हल्का सा दर्द महसूस हो रहा था पर काम की अधिकता की वजह से उसने इस ओर ध्यान न दिया। अभी स्कूल में बच्चों की परीक्षा चल रही है इसलिए वह स्कूल से छुट्टी नहीं ले सकती ।जैसे तैसे घर का काम पूरा कर वह स्कूल पहुंची ।अभी स्कूल के गेट पर ही पहुंची थी कि अचानक उसे चक्कर आया और वही धम्म से गिर पड़ी ।बेहोशी की हालत में उसे हॉस्पिटल लाया गया । उसके पति दीपक को हॉस्पिटल में बुला लिया गया। डॉक्टर ने दीपक से पूछा_"बताइए,आपकी पत्नी को क्या बीमारी है? वह कौन सी दवाई लेती है" ?
दीपक ने कहा_ डॉक्टर साहब ,मेरी पत्नी को कोई बीमारी नहीं है बस हाई ब्लड प्रेशर की कोई दवाई लेती है शायद...।
शायद ,तो क्या आपको उस दवाई के बारे में मालूम नहीं?
नहीं मेरे बेटे नीरज को शायद मालूम हो। डॉक्टर ने नीरज से जब दवाई के बारे में पूछा तो उसने भी यही कहा कि उसे मालूम नहीं कि उसकी मां कौन सी दवाई लेती है। जब नीरज यह बता रहा था तब उसकी आवाज कांपने लगी और नजरें पिता की तरफ मुड़ गई। मन में ग्लानि थी कि आज तक उसने यह जानने की कोशिश न की कि मां कौन सी दवाई लेती है।
डॉक्टर ने दोनों को कहा_ आप लोग दोनों को मालूम नहीं की लता कौन सी दवाई लेती है ।आप लोग इतने गैर जिम्मेदार कैसे हो सकते हो?
लता तो शायद आप लोगों को परेशान नहीं करना चाहती थी इसलिए अपनी बीमारी के बारे में आप लोगों को कुछ न बताया पर आप लोगों ने भी जानने की कभी कोशिश नहीं की?
घबराते हुए दीपक ने पूछा_ "बताइए डॉक्टर साहब, लता को आखिर क्या बीमारी है"?
डॉक्टर ने कहा _उन्हें दिल की बीमारी है। उनका दिल बहुत कमजोर हो गया है और इसकी रफ्तार धीमी हो गई है। इसे डॉक्टर्स की भाषा में हार्टप्रॉब्लम कहते हैं। डॉक्टर की बातें सुन नीरज की आंखों से आंसू निकल पड़े और दीपक अपराध बोध में डूबता जा रहा था। सचमुच उसने तो पिछले कुछ दिनों से उमा और घर की तरफ ध्यान ही न दिया। बस ऑफिस के काम में उलझा रहा ।उमा इतनी बीमार होने के बावजूद भी घर और स्कूल दोनों संभालती रही। उसने मन ही मन फैसला किया अब वह ऑफिस और घर में बराबर समय देगा बस ईश्वर की कृपा से लता स्वस्थ हो जाए। प्रार्थना के लिए उसने दोनों हाथ जोड़ लिए।
नीरज को भी अपनी भूल का अहसास हो रहा था। उसने मां के हाथ को अपने हाथ में लेते हुए अपने आप से वादा किया कि अब हमेशा अपनी मां का ध्यान रखेगा।

विभा कुमारी "नीरजा"
नोएडा

"तबादला"

शाम को दफ्तर से आते ही राकेश ने कहा "सामान बांधना शुरू कर दो हमारा तबादला हो गया।" तबादले का नाम सुनते ही स्नेहा की घबराहट शुरू हो जाती है। फिर से एक-एक सामान बांधों और चल दो किसी नए शहर को। देहरादून आए अभी एक ही साल तो हुआ, और तबादले का आर्डर आ गया।

शुरू -शुरू में स्नेहा को तबादला बड़ा अच्छा लगता था,वो काफी खुश होती थी तबादले के नाम पर कि नए-नए शहर देखने को मिलेंगे ,घुमने-फिरने के खूब अवसर मिलेंगे। लेकिन जैसे -जैसे उम्र बढ़ती जा रही है वैसे -वैसे उसे तबादले के नाम से भी चिढ़ होने लगी है अब तो नए शहर जाने के नाम से ही घबराहट होने लगी है।

राकेश का क्या है? नए शहर जाते ही वो अपने दफ्तर में व्यस्त हो जाते है सारा सेटिंग तो स्नेहा को ही देखना पड़ता है। बच्चों के स्कूल से लेकर घर की सारी जिम्मेदारी स्नेहा की होती।रिश्तेदारों के जुबान पर एक ही बात रहती है "स्नेहा के बड़े मज़े है हमेशा घुमती ही रहती है , किस्मत हो तो स्नेहा जैसी" ।स्नेहा सोचती है "जूता तो सिर्फ पहनने वाले को ही काटती है दूसरों को तो बस उसकी खूबसूरती ही नजर आती है "!

काव्य

अनुपमा अनुश्री
भोपाल

सीख....

प्रकृति ने जो लिखा हुआ
उसे हम नहीं पढ़ते!
उसे देख कुछ नहीं सीखा करते।
उसकी लिखावट के
कुछ दृश्य बिंब
रचनाओं में
तो कभी- कभार उतरते
लेकिन उसके प्रतिबिंब में
हम नहीं दिखाई पड़ते ।

हम कुछ और सीख गए हैं
हमारे मनुज मस्तिष्क में
प्रकृति की कोमलता
निश्छलता
खुद को पल-पल
संवारने की अद्भुत क्षमता
पल-पल मुस्कुराने की प्रतिभा
चुनौतियों से और
निखर जाने की क्षमता
के बीज अंकुरित नहीं होते!

हमारी सीख का स्रोत
कहीं ...और कहीं है!
कहां है! क्यों है !
बस यह हमें पता नहीं है।
क्या उसने हमें कोई
ऐसे वाद्य यंत्र दिए हैं
जहां बस दुख के राग बजते!
प्रेम ,मधुरता, सुख के
गान नहीं सजते।
ढूंढना होगा
प्रकृति के कोख में
जहां अप्रतिम रंग
खुशियों के बिखरा करते।

काव्य

मीरा सिंह "मीरा"
बक्सर बिहार

"तेरी मेरी प्रेम कहानी"

तू है मेरे दिल का राजा
मैं हूं तेरी दिल की रानी।
सारी दुनिया जान रही है
तेरी मेरी प्रेम कहानी।।

तू मेरी आंखों में रहता
तुझमें मेरी दुनिया बसती।
देख तुझे दिल मेरा धड़के
तुझसे मेरी सांसें चलती।।
सुध बुध रहती मैं बिसरायी
दुनिया कहती है दीवानी---

फूल बन गए पथ के कांटे
लोग रहे हैं जाल बिछाते।
कदम कदम पर मिलता धोखा
पांव कहां मेरे रुक पाते।।
तू ही मुझको धीर बंधाया
रातें जब आयी तूफानी---

आंखों से जब छलके आंसू
लोग कहे मेरी नादानी।
जिस पथ में थे अनगिन कांटे
राह चुनी मैंने अनजानी।।
किसको मैं सच बात बताऊं
अपना रिश्ता है रूहानी----

दर्द भला क्या जाने दुनिया
जितने मुख हैं उतनी वाणी।
आते जाते लोग सभी हैं
यह दुनिया है बहता पानी।।
रिश्ते नाते का यह मेला
चार दिनों की अमर कहानी।
सारी दुनिया जान रही है
तेरी मेरी प्रेम कहानी।।

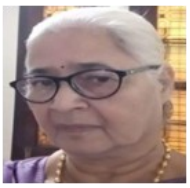

सुधा गोयल
बुलंदशहर

"उड़ चलो"

औरतों को शुरू से
साजिश का शिकार बनाया गया
मर्द के दिल का रास्ता
उसके पेट से जाता है
समझाया गया।
औरत आसानी से समझ गई
और रसोई में जुट गई
तरह तरह के पकवान
बनाने में जुट गई।
मर्द पकवान खाए
और साफ सुथरा न रहे
वह बावर्ची के साथ
धोवन,आया, चौकीदार बन गई।
एक समर्पित गृहणी हो गई।
पति उसे घर में उलझा
सफलता की सीढ़ी चढ़ता गया
और पत्नि को रसोई में छोड़
चंद लुभावने सपने थमा
जहाज में बैठ उड़ गया।
पति मिला न सपने
यह इंतजार बरसों तक चलता रहा
औरत को औरत-
होने का ईनाम मिलता रहा।
काश,झांक पाती रसोई से बाहर
देख पाती घर की चौखट से
खुला आसमान
यदि लगा लेती थोड़े से पंख
भर लेती एक उड़ान
बदल जाता उसका भी जहान ।
वक्त अभी भी है यदि जाग सको
रसोई से बाहर झांक सको
एक खुला आसमान
कब से तुम्हारी प्रतिक्षा में खड़ा है
बांह फैलाओ और समेट लो
अपने सपनों के साथ उड़ चलो
उड़ चलो उड़ चलो।

डॉ.रश्मि तिवारी

लखनऊ

काव्य

अपना

पूरे चांद की आधी रात,
कुछ कहने को आतुर उदास,
मैं अकेली...
कोई नहीं मेरे पास,
व्यथा बनी जीवन,
अतृप्ति आईं रास।।

तारों भरे गगन में,
मेरे पथ पर नही उजास,
न जाने कौन सी प्रतिज्ञा थी,
कि खुशियां बन न सकी मेरी हमराज,
कल आज और कल के फासलों को,
मिटाते - मिटाते,
खुद मिट गए,
काश ....
कोई होता अपना,
जो बांट लेता कुछ पल,
सांस...
उसांस।।

जीवन

छत के पीछे का तालाब...
मेरा था ।
उसमें उठती तरंगे
मन के हर भाव का प्रतिबिंब,
मस्तिष्क करता था प्रश्न अनेक,
कुछ के उत्तर , कुछ निरुत्तर,

उस छोटी सी बिटिया के
स्वप्न आकाश से....
हृदय का उत्साह बढ़ता ही गया ,
न रुके प्रश्न ,
न झुकी आशा,
कितना अधूरा ,
फिर भी सम्पूर्ण ।।
और आज तालाब से सागर तक आ गई,
जीवन के हर पल ,
हर अनुभव को संजोकर ,
उन अधूरे प्रश्नों के उत्तर पा गई,
सोच बनी यथार्थ ,
स्वयं परिपूर्ण ,
हर दृष्टि से परिभाषित और सम्पूर्ण,

पर आज कितनी अकेली ,
कितनी अपूर्ण।।

प्रश्न

कभी इस दर,
कभी उस आंगन,
कभी इस खिड़की ,
कभी उस दरवाजे,
यहां से वहां तक,
कई बार सांसों को
थमा मैंने,
हृदय को मस्तिष्क से बांधा मैंने।

पर हर बार अपनी सत्ता पर,
किसी और का शासन पाया मैंने।।

न जाने कौन हैं वो ?
बस....
इस प्रश्न का उत्तर
अब तक न पाया मैंने.। ।

अध्याय

पृष्ठ दर पृष्ठ खुलते गए,
नित नए अध्याय जुड़ते गए,
क्षण भर विश्राम की चाहत मै हम ,
अनजान पाठ पर आगे बढ़ते गए,
किसे सुनाएं हम अपना दर्द,
कैसे दिखाएं घावों के निशान,
क्षितिज पर उतरते सूरज की तरह,
धीरे धीरे हम ढलते गए ।।

बूंद

एक अभिव्यक्ति
उठती है व्यथा सी
आंदोलित करती हुई हृदय को
बहकती है बादल सी
बरसती है सावन सी
पानी के एक बूंद
जीवन के सूखेपन को सींचती है ।

कभी न रुकने का संदेश
सतत चलना है जिसका उद्देश्य
उमड़ती बूंदों की धारा
कड़कती बिजली में
सरसती बहारों सी।।

भविष्य है अंधकारमय
न जाने कहां होगा अंत
कब होगी पूरी यात्रा
मन में भय , संशय
विश्राम नही करने देते
चाहत है दिशाओं की
दृष्टि है दूर तक

न जाने कब मिलेगी शांति
कहां बनेगा आश्रय
कांप उठता है मन
सिहर जाता है तन

और अब गिर पड़ी
पूर्ण हुई
उस पाषाण पर जो जीते हैं
न कि जीने की चाहत में
पल पल मरते हुए।।।

नारी

समय बीता
पर तू न बदली,
क्यों ?
क्योंकि....
मैं जननी ,
मैं उजास हूं ।
सृष्टि का अंकुर मै,
मै अमरता का एहसास हूं।

डॉ. लक्ष्मीकान्त शर्मा

ऑरेंज रस्टी ज़िपर

सुनो मित्ती,
दिसम्बर में
काली पहाड़ियों की
गोद मे गिरते हुए
और अपनी आंखों में
नींद भर कर झूलते हुए
सांझ-सूरज का वो
नारंगी गोला
अक्सर ,
तुम्हारी गोद में रखे हुए
ऊन के गोलों की याद दिलाता है ।।

ढलती शाम
अंधेरों के घिरने से
कुछ पहले,
यही सूरज जब
किसी ऊंचे सघन
अरुकेरिया पर टिक जाता है
तब वो तुम्हारे चेहरे के
सुदीप्त गुलाबी रंग
चुराता है ।।

उसके आसपास छितराये
कत्थई चिड़िया के पंखों जैसे बादलों के झुंड
तुम्हारे माथे पर झूलती
कुछ बेपरवाह लटों की
याद दिलाता है ।।

या लगता है, जैसे
दिसम्बर की गज़क सी
मीठी सर्दियों में तुम,
मेरे लिए एक
ऑरेंज रस्टी जिपर
बुन रही हो
और उसके लिए
काली ऊन का कोई
नायाब डिज़ाइन
चुन रही हो ।।

हाँ , मित्ती
सर्दियां अच्छी लगती हैं मुझे
बदन पर तुम्हारे हाथ के बने स्वेटर का स्पर्श सुहाता है
यादों के प्रवासी परिंदों का
कारवाँ लौट आता है
लगता है ,मित्ती हर लम्हा
तू यहीं आसपास है
फिर क्यूँ लगता है, मित्ती
दिसम्बर उदास है ....
बहुत उदास है ....

केशव शरण
वाराणसी

काव्य

जाड़े की धूप

(एक)

हमारी किताबें
हमारे कोट की जेबों में रह गईं

धूप में आते ही
हमारी बात-चीत के विषय बदल गए

(दो)

हरी-भूरी घास पर
धूप के घेरे में
टहलते हुए मुझे लगा
मैं सर्दी से ज़्यादा था
अँधेरे में

(तीन)
खिली धूप ने
किसे नहीं खिलाया है
गेंदे, गुलाब, सूरजमुखी
या हमें ?

खिले हुए हम
प्यार तो खिला ही सकते हैं
हाथ के साथ
दिल भी मिला ही सकते हैं

(चार)
हरी घास पर
अभी और ढेलनियाँ लूँगा
फिर झाड़ूँगा स्वेटर
धूप को कोई जल्दी नहीं है
ढलने की
फिर मुझको क्यों हो चलने की ?

(पाँच)

सिहराती सुबह से
सिहराती शाम के बीच
दुनिया का कामकाजी रूप है
शुक्र है कि धुंध नहीं धूप है
और सब बढ़िया चल रहा है
धरती का प्यार भी पल रहा है
नीले आसमान के नीचे

काव्य

अमित कुमार मल्ल
प्रयागराज

हाथ

अपने हाथ मे
तुम्हारा हाथ लेना ,
केवल स्पर्श नही है
केवल प्रेम नही है
केवल ऊष्मा का संचरण नही है

यह साथ है
सब्जेक्ट समझने से लेकर
प्रोजेक्ट बनाने तक
कोचिंग में पढ़ने से लेकर
यूनिवर्सिटी में पढ़ने तक
फुल्की खाने से लेकर
माल घूमने तक

कम पैसों में गुजर करने से लेकर
साथ सड़क पर चलने तक
नौकरी का फार्म भरने से लेकर
नौकरी पाने तक

असफलताओं पर रोने से लेकर
फिर कॉम्पटीशन के लिये तैयार होने तक

यह आज़ादी है
रात विरात आने जाने की
कही भी आने जाने की
कपड़े अदल बदल पर पहनने की
अपने मन के कपड़े पहनने की
अपने मन से दोस्त चुनने की
मा बाप अपनो से दूर के इस शहर में
अपने मन से रहने की

यह बराबरी है
सड़क की गुमटी के बेंच पर
बैठकर चाय पीने का
मोटरसाइकिल पर टेक लेकर बतियाने का
जोर से मन भर हंसने की
तेज स्वर में बोलने की
अपने बलबूते पर दुनिया को फेस करने की
खुश रहने की
अपने मन की करने की

यह उस संघर्ष में भाग लेना है
जहाँ
सूरज की किरणों को तरसती गलियों में
सात बाई तीन की बरसाती में ,
परीक्षा केंद्रों के मटमैले मेज पर ,
सांसे और सपने जिंदा रखने की जंग
लड़ी जाती है

तुम्हारे हाथ की नसे
मेरी हाथों की नसों में ऊष्मा भरती है

तेरा हाथ
मुझे आश्वस्त करता है
रोने में
बिखरने में
तुम साथ हो

हौसला देता है
मानसिक संबल देता है
जिंदगी में आगे चलने की
साथ रहने की
दुनिया से जूझने की
जिंदगी जीने की

गीत

टीकम चन्दर ढोडरिया
,बारां राजस्थान

(1)
पृथक हुयी थी राहें अपनी
उसी मोड़ पर प्रिये खड़ा हूँ।
आओगी तुम लौट यहाँ पर
इसी आस में प्रिये खड़ा हूँ।।
माना आते नहीं विगत दिन
खिले फूल हैं मुरझाते
बँधे सभी हैं काल-चक्र में
नियम सृष्टि का समझाते
स्मृतियों की प्रबल चेतना
उर की साँकल को खोले
सुप्त-स्वप्न जब लें अँगड़ाई
तन-मन में मदिरा घोले
आ जाना तुम साँझ ढले भी
नेह-दीप मैं लिये खड़ा हूँ।।
गालों के गह्वर मिट जायें
कुन्तल श्याम धवल जब हों
रूप समेटे अपनी चादर
काया सुभग शिथिल जब हो
आना प्रथम मिलन सी प्रिय तुम
अधरों पर मुस्कान लिये
वय की सीमा से विमुक्त हो
अल्हड़पन का मान लिये
अभिनंदन में वही कुँआरी
मधुर-गंध मैं लिये खड़ा हूँ।।
आओगी तुम लौट यहाँ पर
इसी आस में प्रिये खड़ा हूँ।।

(2)
गाँव था कैसा बैठ पास मैं
तुझे बताऊँ हाल।।
भोर हुये ही धेनु रँभाती
पक्षी करते गान
गले पड़ी बेलों के घण्टी
छेड़े मधुरिम तान
भाभी चक्कीआटा पीसे
दादी करती जाप
लिये ठोपला अम्मा जाती
उपले देती थाप
नयी बहुरिया पनघट जाती
मुख पर घूँघट डाल।।
भाईजी खेतों पर जाते
काका दुहते गाय
लिये कलेवा काकी आती
सिर पर छाक जमाय
छड़ी लिये दादाजी बैठे
दरवाजे के पास
नेह डोर से बँधा हुआ था
घर भर का विश्वास
इक चूल्हें पर बनती थी तब
सब की रोटी दाल।।
चौपालों पर बैठे करते
सुख-दुख की सब बात
तारों सँग चलता चंदा भी
ले अपनी बारात
दादी नानी हमें सुनाती
रोज कहानी रात
पता नहीं कब सब सो जाते
कब होता परभात
मोटा खाया पहना मोटा
फिर भी थे खुशहाल।।
गाँव था कैसा बैठ पास में
तुझे बताऊँ हाल।।

डॉ अवधेश कुमार अवध

चन्दौली ,उत्तर प्रदेश

मोह

मोह का बंधन न होता त्याज्य केवल,
जागरण का बीज इसमें ही पनपता।
टूट जाता है मनुज नित हार से जब,
मोह अपनों का, हृदय में जोश भरता।।

मोह ना होता तो जग जुड़ता न ऐसे,
कब किसे कर्त्तव्य का यूँ ध्यान होता!
कृष्ण की गीता से अर्जुन कब जगा था!
पुत्र ना खपता अगर, क्या भान होता!

तू अगर इस हार से असहाय होगा,
कौन बूढ़े बाप की लाठी बनेगा!
कर्ज माँ का है तुम्हारे सर अभी भी,
सोच ले, पत्नी का हर संबल ढहेगा।।

पुत्र-पुत्री, बंधु-बांधव,मित्र, परिजन,
टूट ना जाएँ, तुझे जुड़ना पड़ेगा।
दुश्मनों को हो खबर, तू गिर गया है,
पूर्व इससे मोहवश उठना पड़ेगा।।

मोह से वात्सल्य का उद्भव हुआ है,
मोह से ही प्यार को विस्तार मिलता।
मोह से जीवन जटिल जीवंत जाग्रत,
मोह से ही पत्थरों पर फूल खिलता।।

मोह जीवन में अमिय रस कुम्भ होता,
आप से अपनों का यह बंधन प्रबल है।
यह मनुजता के लिए अनिवार्य, अक्षय,
शस्त्र एवं शास्त्र दोनों से सबल है।।

राम ने शबरी को माता - सा बताया,
कृष्ण ने भी द्रौपदी की लाज राखी,
बाण की शैया चुने थे कुरु पितामह,
संत कबिरा ने सुनाया सबद-साखी।।

मोह में पन्ना ने अपना पुत्र वारा,
मोह में बिस्मिल-भगत ने प्राण त्यागे।
मोह में 'इनसे हैं हम' विरचित हुई है,
मोह में अवधेश जुडते नेह - धागे।

मोह पालो किंतु रक्खो ध्यान ये भी
मोह हो कर्त्तव्य का साथी - सहायक।
मोह का विस्तार हो सारे जगत में,
मोह का अधिपति बने जगती सुनायक।।

अमलेन्दु शुक्ल

सिद्धार्थनगर उ०प्र०

राम

सम्भावनाओं की धुरी पर रथ चलाते वे रहे,
सह लिया हर कष्ट लेकिन कुछ नहीं मुँह से कहे,

यूँ नहीं फैला चतुर्दिक राम का है नाम जग में,
राम से भी अधिक फैला राम का है काम जग में,

जब कभी संघर्ष खुद की व्याख्या खुद से करेगा,
राम के ही नाम से पन्ने सभी अपने भरेगा,

वे अवध के थे कुँवर पर राम बनकर ही जिये,
संघर्ष के सारे गरल वे राम बनकर ही पिये,

हारना भी प्रेम में सीखा उन्होंने राम बनकर,
जीतना भी युद्ध में सीखा उन्होंने राम बनकर,

इस जगत की पाठशाला वे अकेले राम हैं,
युध्द भी यदि राम हैं तो प्रेम भी वे राम हैं,

पहनकर वल्कल समूचा राज्य हँसकर छोड़ देना,
महलों के सुख छोड़ जंगल की तरफ मुख मोड़ लेना,

बात साधारण नहीं पर कर दिखाया राम ने,
सम्भावनाओं का दिया हर पल जलाया राम ने,

छोड़कर संकोच सारे बेर शबरी के चखे,
तात कहकर गीध की अर्थी को वे कंधे रखे,

थी कलंकित गौतमी पर माँ पुकारा राम ने,
राम को ईश्वर बनाया राम के हर काम ने,

सीखना जो चाहते हो सीख लो तुम राम से,
कुछ नहीं छूटा यहाँ उस अलौकिक राम से,

सबने कहा भगवान पर इंसान बनकर वे रहे,
सम्भावनाओं की धुरी पर रथ चलाते वे रहे।

गीत

जितेन्द्र निर्मोही

कोटा (राज,)

हम कितने पढ़ पाये तुमको
यह अनुवादों से जानो
पढ़कर अब भी आये हैं हम
तुम मानो या ना मानो
सुबह-सुबह की भोर किरण से
पूछा नाम तुम्हारा
और चमन के फूलों के संग
था अभिसार तुम्हारा
चन्द्र किरण को पढ़कर
गाया गीत चांदनी वाला
यह सच है सच मानो।
हम भी कितने भोले निकले
लहरों पर सोते देखा
लहर लहर में मिलती देखी
तुमको खोते देखा
उठा ज्वार प्रणय का था
सागर से पूछा था सच मानो।
पर्वत पर थे भोले बादल
हमने उनसे पूछ लिया
आंख भरी थी उनकी इतनी
अश्रु धार को छोड़ दिया
हमने भी आंसू टपकाये
इस सच को सच ही मानो।
जितेन्द्र निर्मोही कोटा

काव्य

उदय किशोर साह

बाँका बिहार

तन्हा दिल तेरी यादों के है साये
तन्हाई में मेरा दिल क्यूँ घबराये
अक्स तेरी जब निगाहों में आये
फिजां में नशा प्यार की घुल जाये

रे चन्दा तुँ छत पर मेरी आ जाना
चाँदनी को भी अपने संग है लाना
दिल बहला लेगें वो जब जब आये
फिजां में नशा प्यार की घुल जाये

रे पपीहा मत दो तुम हमें ताना
सुख दुःख का है आना जाना
गैरों को हम क्यूं अपना बनायें
फिजां में प्यार की नशा घुल जाये

अमवा की डाली पे कोयलिया है काली
पूरवाई संग संग चले है मवाली
चलो गाँव के पीपल तले घूम आयें
फिजां में प्यार की नशा घुल जाये

कह दो कोई बेशर्म आसमान से
बादल ने की है वर्षा की वो वादे
झींगुर तेरी आस में सुर सजाये
फिजां में प्यार की नशा घुल जाये

नव गीत

राजपाल सिंह गुलिया

झज्जर (हरियाणा)

नई पुश्त अब मोबाइल को,
पाकर हुई निहाल.
इसके आगे रिश्ते लगते,
अनचाही सी कॉल.
अलग भले हो सबकी साइट,
सबका एक मुकाम.
वृद्ध अश्व भी तुष्टि चाह में,
काटें रोज लगाम.
जाने किस मोती की आशा,
गुगल रहे खंगाल.
निर्लज्ज मन दिगंबर आँखें,
खुशियाँ रहे तलाश.
अंत समय आभासी दुनिया,
करके रहे हताश.
पाकर एक क्षणिक सुख रहते,
घंटों मालामाल.
कोण बदल कर खींच रहे ये,
आज स्वयं का चित्र.
मोबाइल जाने धारक का,
केवल असल चरित्र.
फँसे हुए सब जान बूझ कर,
कैसा अन्तर्जाल.

गीत

बलविन्दर बालम

गुरदासपुर

नयां साल है नई सवेर।
गुलशन में फूलों के ढेर।
नयां साल है नई सवेर।
मुबारिक धरती अम्बर को।
मानवता के मन्दिर को।
अभिवादन से भरी चंगेर।
नयां साल है नई सवेर।
आधुनिकता के रंग नएं।
विज्ञानक के ढंग नए।
आया सूरज गया अंधेर।

नयां साल है नई सवेर।
रूठे यार मना ले यार।
गिरते लोग उठा ले यार।
अब न कर तू ज्यादा देर।
नयां साल है नई सवेर।
ईमानदारी नेकी सलाम।

सच का दुनियां में है नाम।
मेहनत से सोने के हेर।
नयां साल है नई सवेर।
सरहदों के शुभआशीष।
सबका मालिक है जगदीश।
रक्षा करती है फौज दलेर।
नयां साल है नई सवेर।
विद्या घर-घर पैर धरे।
झुग्गियों में भी लौ करे।
बालम बुद्धि मीठे बेर।
नयां साल है नई सवेर।

व्यग्र पाण्डे
सवाई माधोपुर (राज.)

प्रभात नई

झिलमिल झिलमिल तारें डूबे
धरा हुई प्रभात नई
दूर क्षितिज अरुणाई फैली
लगती जैसे बात नई
होने लगा प्रभास रह रह
कल-कल स्वर में नदी रही बह
बँधी नाव नाविक ने खोली
जल-तरंग सुहात नई ।
पूरव-दिशा सूरज का गोला
निकला जैसे रत्न अमोला
पंछी त्याग चले नीड़ों को
जाती लगे जमात नई ।
नव-प्रभात नव-शक्ति देता
कर्म जताता भक्ति देता
बैठ किनारे समाधिस्थ वक
करता हर पल घात नई ।

लौट चलें ...

लौट चलें फिर से हम
माँ प्रकृति की ओर ।
पेड़ों की पंचायत जहाँ
नाँच रहे हों मोर ।।
नदी-पहाड़ जंगल की शोभा
झरनों का हो शोर ।
जहाँ साँझ मंदिर की झालर
गाय रम्भाएं भोर ।।
दूर-दूर खेतों की पंगत
छिटके-छिटके गाँव
रोज प्रथम मिलन पर
सब कहते राम राम ।।
शुद्धता की पर्याय मृदा
पानी हवा के संग ।
जहाँ पक्षियों की चहचहाट
भरती कितने रंग ।।
अब भी समय है तज दो
इन शहरों के अनुबंध ।
बुला रही है सौंधी माटी
महसूस करो वो गंध ।।

प्रेमचन्द ठाकुर
बोकारो, झारखण्ड

एक नया कलाकार

एक नया कलाकार एक कली की तरह होता है,
जो एक संपूर्ण पुष्प की भाँति खिलना चाहता है,
पर वह खिल नहीं पाता,
कुछ भँवरें उसकी वृद्धि को रोक देते हैं,
मानो पूरी बगीचा उसी का हो,
एक नया कलाकार डरपोक होता है,
वह हर एक शब्द को लिखने से पहले
कई बार सोचता है,
क्योंकि वह शब्दों की चोट से परिचित होता है,
एक नया कलाकार "टैगोर" या "शेक्सपियर"
बनने कि ईच्छा तो नहीं रखता,
पर उसे यह संसार एक कलाकार के रूप में देखें
इस काबील बनना चाहता है ,
वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना चाहता है ।
एक नया कलाकार परम्पराबद्ध होता है,
वह स्वयंसेवी होता है ,
ऐसे शब्दों को संजोता है
जैसे एक वधू करती हो श्रृंगार ।
एक नया कलाकार शरणार्थी की तरह होता है ,
जो सुन्दर शब्दों के समुह में
एक सूक्ष्म शब्द बनना चाहता है,
एक नया कलाकार अपनी कला के
प्रदर्शन के लिए मंच तलाशता है,
जैसे रेगिस्तान में हिरण को जल कि तलाश,
एक नया कलाकार बड़े कलाकारो की
प्रतिक्रिया तथा आलोचना की आश में बैठा रहता है ,
इसलिए कि वह गलतियों को सुधार सके,
पर नए कलाकार की आश 30 फरवरी की तरह होती है ।
एक नया कलाकार प्रशंसा से निर्धन होता है
लेकिन अपने विचारों का राजा,
और उसकी निपुणता सबसे बड़ा धन,
जो अस्पर्शनीय है,
एक नया कलाकार कुछ कहना चाहता है,
वह अपने शब्दों में खुद को
मुस्कुराते हुए देखना चाहता है,
कुछ भूलना चाहता है ,
तो कुछ यादों को अक्षर बनाना चाहता है।
एक नया कलाकार सुनता,
समझता, देखता, और परखता है
फिर रचता है एक सुन्दर रचना,
जैसे एक ग्वाला दही को मथता है ।

ऋषि तिवारी
चकरी , सिवान , बिहार

बेटी विदाई

मां का गोद प्यारा छोड़ ,
घर निज न्यारा छोड़ ,
छोड़ती है जग याद छोड़ पाती है ।
नेह निज भ्राता छोड़ ,
बंधनों के नाता तोड़ ,
तोड़ती है सब पर तोड़ नहीं पाती है ।
सखियन साथ छोड़ ,
बहनों के हांथ छोड़ ,
चढ़ती है डोली पर चढ़ नहीं पाती है ।
कदम बढ़ा ना पाए ,
मन को मना ना पाए ,
बढ़ती है आगे पर बढ़ नहीं पाती है ।
अंगुली पिता की धरि ,
घूमें बाग गलियन ,
सोचे आज जीवन पिता के घर न्यारी है ।
जिसके चहकने से ,
घर आंगन गूंजे ,
देखो दुल्हन बनि जाने को तैयारी है

मनीष 'मन'
कौशांबी, उत्तर प्रदेश

न रांझा हैं,न कोई हीर अपनी

कलम साथी,कलम शमशीर अपनी।
समझती है यही बस पीर अपनी।
बदलते साल में हालत क्या हैं,
कि आंँखें नम वही तस्वीर अपनी।
शिकायत क्या किसी से क्यों करें हम,
अगर अच्छी नहीं तकदीर अपनी।
सुनो यूँ पूछना अच्छा नहीं है,
न रांझा हैं,न कोई हीर अपनी।
ग़ज़ल,कुछ शे'र,गम,आँसू,तेरी याद,
यही है बस सुनो जागीर अपनी।
नहीं अच्छे हमारे ख्वाब भी 'मन'
सुनाएंँ जो तुम्हें ताबीर अपनी।

मलय कुमार मणि

काव्य

बसंत का रूप

अपने बसंत रूप में धरा कितनी प्यारी है
जब शीत ऋतु से ये मिल कर वापस आती है
उमंग, उल्लास, नव पुष्प का राग सुनाती है
ये प्रकृति का अनुपम रूप बहुत लुभाती है ।

उतरायण में जब मकर सक्रांति मनाती है
बसंत का वरदान लिए बसंत पंचमी आती है
मां शारदे का पूजा विश्व में ज्ञान फैलाती है
सबको सद्बुद्धि दे ये कामना मन में जगाती है ।

भिन्न-भिन्न पुष्प जगत रंगीन बनाती है
फूलों से चेहरे पर सबके मुस्कान आ जाती है
विपरीत परिस्थिति में भी जीना सिखाती है
धरा सौम्य रूप में सबका भार उठाती है।

बसंत में आम का मंजर मोहक सुगंध फैलाती है
पेड़ पौधों में नव कोंपल नव जीवन लाती है
प्रकृति का ये रूप अनोखा मन हर्षाती है
सबके जीवन में नव उमंग फैलाती है ।

नागेन्द्र नाथ गुप्ता
ठाणे ,मुंबई

प्यार के गुलशन सजाना चाहिए,
दिल में उल्फत ही जगाना चाहिए।
दर्द ए दिल बेइंतहा उभरे अगर,
प्यार अपना कुछ छिपाना चाहिए।
आईने से क्यों मिलाएं आंख हम,
आंख से काजल चुराना चाहिए।
शौक पीने या पिलाने का अगर,
जाम उल्फत का पिलाना चाहिए।
डर तुम्हें बदनामियों का हो अगर,
तब सबक उल्टा सिखाना चाहिए।
प्यार में मगरूर होते लोग क्यों,
इस पहेली को बुझाना चाहिए।
प्यारमें तकरार का अधिकार है,
लोगों से नज़रें बचाना चाहिए।
प्यार का अंजाम केवल प्यार है,
उनकी हाँ में हाँ मिलाना चाहिए।

डा. लता अग्रवाल 'तुलजा'
भोपाल

अतीत से परहेज

मत ओढ़ो
अतीत की चादर
इसमें है बहत्तर छेद
हर छेद से
दौडा आएगा बीता पल
धीरे-धीरे रिसता चला जाएगा
भीतर तुम्हारे
मस्तिष्क की जमी परतो में
मचाएगा खलबली
मन को बना मृग मरीचिका
दौडाएगा तुम्हें
भागते रहोगे तुम
अतीत का छोर पकड़ कर
एक अनजाने अनचिन्हे
सुख की तलाश में,
अतीत के चील कव्वे
छोड़ तुम्हारे पीछे
मतिभ्रम कर तुम्हें
खड़ा देखेगा तमाशा
करेगा अट्टहास
मन को तुम्हारे बना
सम्मोहन का सचिवालय
तुम्हारे भीतर करेगा खड़ा
भ्रम का मंत्रालय
स्मृति के अंधे कुएं से
उठेंगी आवाजें
उमड कर आएगा
एक सैलाब
संग लाएगा यादों की
घनघोर बारिश
पूर होंगे
तन मन के पतनाले
झकझोरेगा
डराएगा
दरकाएगा
भीतर ही भीतर
मुट्ठी से फिसलती
रेत सा रिसता रहेगा
यूं खाली कर तुम्हें
भटकाएगा स्मृतियों के
जंगल में
खो जाओगे तुम
चाहकर भी खुद को
पा न सकोगे

काव्य

न ओढ़ना अतीत की
चादर
वर्तमान की दुशाला
भली
चाहे जैसी भी हो।

हमदम अपना

मैं अपना हमदम
कभी
हो न पाया
हर खुशी में चाहा
पीठ अपनी थपथपाना
लेकिन
थपथपा ना पाया
हर गम में
चाहा कंधे पर सिर रख
आंसू बहाना
लेकिन बहा न पाया
गले लगा खुद को
धीरज बंधाना
लेकिन बंधा न पाया
मैं हमदम अपना
कभी हो न पाया

काव्य

"बचपन"

अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से,
हम मिल के शोर मचाएँगे,
जैसे करते थे जब ,
गई हुई बिजली आती थी।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से,
हम मिल के दूर निकल जाएँगे,
जैसे चल पड़ते थे दोस्तों के साथ।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से,
हम मिल बाँट कर खाएँगे,
कम पड़ जाए तो भी खुशी-खुशी,
सो जाएँगे।
अरे ओ बचपन.....
हम ठण्डी हवा में ,
तुम आया करो चुपके से।
हम भी रिश्तेदारों से मिलने जाएँगे,
दस दिन ना सही,
दो घण्टों में आ जाएँगे।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से।
हम ठण्डी हवा में ,
छत पर बैठ के गाएँगे।
ए सी ना भी हो,
खुली हवा में ही सो जाएँगे।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से।
अब थक गई हूँ ,
भागते- भागते
पापा की डाँट खा कर,
एक कोने में सो जाएँगे।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से।
हम भले ही मॉल,
सिनेमाहाल ना जाएँ,
पर पूजा,शादी और त्योहार में,
मिलकर रौनक़ लगाएँगे।
अरे ओ बचपन.....
तुम आया करो चुपके से।

मधु राठौ र
लखनऊ

डॉ. रत्ना मानिक
टेल्को जमशेदपुर
झारखंड- 831004

गीत शौर्य का

बना कर स्वजनों से सुदूर आवास
पहन दुनिया का सर्वोत्तम लिबास
खड़े रहे तुम सीना ताने,
सर्दी गर्मी बरसातों में
तुम हो सरहद पर तैनात डटे
यह सोच,बेखौफ रहे हम रातों में।।

होली दीवाली ईद रमजान
आए और आकर चले गए
कोरी रह गई गोरी की चुनरी
अरमान भी आहें भरते रहे
देहरी पर बैठी रही सुहागिन
मनाए तुम संग हर त्योहार पल
बस यूं ही ख्वाबों ख्यालों में ।।

मचलता रहा जब अंश तुम्हारा
गोद तुम्हारी पाने को
थाम कर अंगुली तुम्हारी
मेले की सैर कराने को
भर अकवारी में उसे गर्विता
बहलाती रही लेकर उसको बाहों में ।।

तान कर अपना सीना फौलादी
तुम पड़े सदा दुश्मनों पर भारी
किया मुकाबला दुश्मनों का तुमने
घाटियों और बियाबानों में
न झुके राष्ट्र का मस्तक कभी
तुम लड़ते रहे माइनस डिग्री तापमानों में

विरहा की मारी वह मृगनयनी
जोहती रहती बाट तुम्हारी
करती सहन वह पीर प्रेम की
सर्दी की ठिठुरती रातों में
समेट लेती रजाई कलेजे से ऐसे
जैसे भर लिया हो तुम्हें बाहों में ।।
लगा कर सीने से तस्वीर तुम्हारी
कहती रहती पीर वो सारी
भिगोती रहती तकिया वो अक्सर
बिरहा की काली रातों में ।।

है नमन तुम्हारी कर्मठता को
जज्बे को तुम्हारे सलाम है
वार दी तुमने खुशियां सारी
हिंदुस्तान, तुमसे ही आबाद है ।।

अद्भुत तुम्हारे इस शौर्य को
देश भुला न कभी पाएगा
न मान तुम्हारा कभी होगा कम
फिज़ाओं में गीत तुम्हारा लहराएगा ।।

चेतना प्रकाश 'चितेरी'
प्रयागराज

शिक्षा से ही गरीबी दूर होगी

बाबूजी! कहां चलना है?
आ जाइए ! मेरे रिक्शे में बैठिए!
आप घबराइए नहीं मैं आराम से चलूंँगा ,
मुझे कहीं गड्ढा या ब्रेकर मिलेगा
मैं रिक्शा की गति धीरे कर लूँगा।

अम्मा आओ!
पहले बैग हमको थमा कर
आराम से रिक्शे पर बैठ जाओ,
फिर सुरक्षित अपना समान पकड़ो,
अम्मा!
हम भी दो पैसे कमा लें।

इतने में , बाबूजी ने कहा -
बेटा ! तुम पढ़े - लिखे लग रहे हो।

रिक्शावाले ने कहा -
बाबूजी!
मेरा भी है परिवार ,
पढ़ लिख कर मेहनत करता हू,
देश दुनिया की ख़बर
मैं भी रखता हूं,
जब मिलती नहीं सवारी,
इधर - उधर दौड़ कर , थक हार
एक घूंट पानी पीकर पसीना सुखाता हूंँ,
फिर थोड़ी देर सोचता हूं ,क्या करूं?
रिक्शे के बॉक्स में से पेपर निकाल इसी रिक्शे पर
बैठ समाचार पत्र पढ़ता हूं।

बाबूजी!
मैं भी आगे पढ़ना चाहता था,
माता - पिता की मज़बूरी
देख ,
बीच राह में पढ़ाई छोड़नी पड़ी ,

अम्मा! बीच में ही पूछ पड़ी कितने बच्चे हैं ?

रिक्शावाले ने अम्मा से कहा -
एकमात्र मेरी बिटिया है
इसी रिक्शे की कमाई से ,
मैं अपनी गुड़िया को बी. एड. करवा रहा हूंँ ,

पास में ही ,चेतना!
संवाद सुन प्रकाश से कही -
शिक्षा से ही गरीबी दूर होगी।

अर्चना श्रीवास्तव 'आहना',
मलेशिया

एहसासों का रिश्ता कविता

एक अजनबी ,अनजानी पहेली-सा है
---ये जीवन-डगर
टुकडों में बटे एहसास, कुछ वहां पनपे ,
कुछ घटे यही
चाहतों की बेजोड़ उधेडबुन
मजबूरियों की अपनी सियासत
हर वक्त एक नजर की तलाश जारी
जिन्दगी का अक्स उभर आये जिसमें...
मैं मुसाफिर यथार्थ के
उबड-खाबड/गढे-अनगढे
रास्तों पर ,सतरंगी जज्बातों से लैस
नयी मंजिलो की तलाश में

उम्र की आडी-तिरछी पगडंडियों पर हांफती
कभी मासूमियत से खुद को तैनात किया राहों में
तब इसके वहशी अधरों ने
निचोड लिया मेरी निश्छलता-मासूमियत
लडखडाती आवाक्.. मैं खडी रही
पथराई ..स्तब्ध—
गुजरती गई मेरे सामने
उलटी-पलटी दुनिया की अजीब तसवीरें
साहसा गुजरती हवा की कहानी
,बदलते फिजा की जुबानी
आविष्कार, खोजो का विस्मयकारी सिलसिला
अनायास ही मुझे आंदोलित कर गया
सहजता से मैने ठंडी सांसे भर ,सजग हो

नयनों में माधुर्य भर चाही इसकी दोस्ती...
तभी बेलगाम जोरदार हामलों से फिसल पडी
एक अनोखी-अलबेली घाटी में
यहां उगा है भावनाओं के आबोहवा मे
लहलहाते शब्दों का मायाजाल..
शुरू में नादान
अनजान मै
खेलती रही अनमनी
लेकिन ठहर जब थाह लगायी
थी यह अतल गहराई
बजने लगी जहां मेरी तन्हाई
खामोशियों को मिली नयी अंगडाई
चहकने लगे शब्द,लय-सुर-ताल मे बद्ध
महक उठी फिजा सारी,खुले चेतना द्वार
छिप जाते जिसमें मेरा संपूर्ण वजूद और दुनिया
जन्म हुआ एक नये पथिक का अनूठा सफर
वक्त के पगडंडियों पर मौसम-दर-मौसम चलने
हवाओं का साक्षी, नदियों का हमराज बनकर
अंधेरे-उजाले के बहुरंगी सवालातों मे
सत्यनिष्ठा से भावों को साधते,विचारों के सेतु पर
अपनी अनसुनी-अनकही धडकनें पिरोनें.....

मैं महकती गंध सी हूं

कुछ खुली कुछ बंद सी हूं
मैं महकती गंध सी हूं
न सोचना छोटा सा छंद
एक विस्तृत निबंध सी हूं

जन जगत का मूल हूं मैं
देव शक्ति शूल हूं मैं
सूक्ष्म सा चरित्र नहीं हूं
वज्र सी स्थूल हूं मैं
अश्रु का तटबंध सी हूं

अनुराग का अनुबंध सी हूं
उधड़ जाए कोई जो सीवन
तो रिश्तों में पैबंद सी हूं

कह लो चंडी या कि दुर्गा
पूज लो या कर लो निंदा
लगती कभी विष सी कसैली
मैं मधुर मकरंद सी हूं
थकती हूं,रुकती नहीं हूं

सहती हूं,कहती नहीं हूं
हो रसोई या कि आंगन
प्रेम का आबंध सी हूं

मैं महकती गंध सी हूं
कुछ खुली कुछ बंद सी हूं

सोनिया सूर्यप्रभा
दिलशाद गार्डन,दिल्ली

शर्मिला कुमारी
सरस्वती नगर,

काव्य

पूर्वनिर्धारण नहीं है यहाँ.

उन्होंने कहा इतिहास का अन्त हो गया
और जल्दी जल्दी लिखे को मिटाने लगे ,
पर ये जिद्दी न-नहीं , मिटते ही नहीं
जेल में रखो या हत्या कर दो |
और जब तक लोगों की याद बदले
टीके रहना शायद आसान नहीं |
संकट में अवधारणा और अस्तित्व दोनों
युद्ध हल नहीं बचा है अब |
थोड़ा रोकने में ही उल्टने लगता है सबकुछ
विकास की गति तेज इतनी |
वे अपने सच को समय के साथ
नहीं सकते बाँध |
इतना तो चिल्लाते रहे अस्तित्व संकट में है
पर इतिहासज्ञान से उलझा नहीं इतिहास बोध |
उन्होंने दुहराया हम महान संकट में हैं
दूसरों को चेताया
और परमाणु-युद्ध-अभ्यास में लग गये
कि यह तो पूर्व निर्धारित है
अब तो स्पष्ट हो रहा है कि
राज्य जन आँकाक्षा नहीं शक्ति से कब्जा है
और नायक संकट हैं मानवता के लिए
महत्वाकांक्षा या मूर्खता से |
जबकि विनाश या विकास इतिहास को ही याद रखना है
जहाँ अनन्त संभावनाएं रहती हैं
और पूर्वनिर्धारण नहीं है यहाँ |

आप बतायें हुजूर

घर में बच्चे भूखे हैं
और मालिक नशे में चूर
यह कैसी सोच हैं
आप बतायें हुजूर
यह कैसी सरकार है
कितनी है मजबूर
लड़ती है भष्ट्राचार से
आत्महत्या करते किसान मजूर
कारखाने बेचकर बनता है मन्दिर
धर्म ध्वजा के जोर से जायेगें बहुत दूर
हम तो अपना खो चूके चरित्र और व्यवहार
आपने जैसा चाहा हमने किया सरकार
आप सुरक्षित स्वछन्द रहे
हमारा हो सब कसूर
यह कैसी सोच है
आप बतायें हुजूर

जवान बूढ़े हो रहे हैं

कारखाने बिक रहे हैं, सेवाओं का नीजिकरण हो रहा है
कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा सब संकट में हैं
पर ये स्वतंत्र सुखी.समाज का स्वप्न पालते जा रहे हैं
नये नये तरकीबों से ढूढ़ रहे नौकरी बस
हर रिक्तियों पर डंडे खा रहे हैं
ये व्यवस्था के बदले बेरोजगारी से लड़ते जा रहे हैं
लाचार , गुस्सा और हताशा के शिकार
ये संगठनों के ,सरकार के जमूरे हो रहे हैं
बस अपने को देख रहे हैं सोच रहे हैं
ये जवान तन मन से बूढ़े रहे हैं

मैं ढूढ़ रही हूँ

जितनी गुलामी है धरम ने पैदा की है मुक्ति के नाम
जितनी. अव्यवस्थाएं है राज्य ने फैलाए हैं व्यवस्था के नाम
जैसे राजा बदलना है वैसे है व्यवस्था बदलना
व्यवस्थाएं बाँधती है स्वतंत्रता के विरूद्ध
तुम्हें गुलामी के विरूद्ध लड़ाया जाता है या स्वतंत्रता के लिए
इसमें स्वतंत्रता के लिए जगह कहाँ है
जो तुम्हें बताया नहीं जाता
जैसे कि विजेता न स्वतंत्र होता है न विजीत
एक शक्ति के अहं की तुष्टि ढ़ोता है
और दूसरा हीनता का प्रतिशोध
और शान्ति का अग्रदूत गर्व से अपनी शक्ति का प्रचार करता है
अभी कितना विकास बाकी है यह अस्त्र तय करते हैं
और यात्रा तय करते हैं श्रेष्ठता के स्वप्न
ओह सचमुच मानव होने की यात्रा स्वतंत्रता के साथ चलती है
अभी हम किस पड़ाव पर हैं ? यहाँ हर कोई अपने को छुपा
दूसरों को खोज रहा है दुर्गुणों के स्वर्ग में
बर्बरता की चमक में दिखती करूणा की काली पीठ
मैं देशद्रोही धर्मविरोधी इतिहासविरोधी शब्दसमय में खड़ी हूँ
अविश्वास, शंका और भय के मेले में
जहाँ मेरा शान्ति संकल्प खो गया है
जो मेरी आशा का केन्द्र था
स्वतंत्रता के लिए

दौलतराम प्रजापति

विदिशा मध्यप्रदेश

ग़ज़ल

01

है कितना ईमान तुम्हारी कथनी करनी में।
मोहरा बना किसान तुम्हारी कथनी करनी में।।
ज्वार बाजरा गेहूँ पानी मोल बिका सारा
सड़ा खेत में धान तुम्हारी कथनी करनी में।।
दिल्ली की सीमा पर बैठे हैं तम्बू ताने
सहते हैं अपमान तुम्हारी कथनी करनी में।।
सरे आम इज्ज़त सड़कों पर लुटती बेटी की
यूँ होता सम्मान तुम्हारी कथनी करनी में।।
साध रहे हो लक्ष्य बराबर बगुला भगत बने
रहती इक मुस्कान तुम्हारी कथनी करनी में।।
रात को दिन और दिन को रात कहो तो जायज है
सब कुछ है आसान तुम्हारी कथनी करनी में।।
आगे खाई कुआँ पीछे है कहाँ जाए दौलत
फसा हुआ इंसान तुम्हारी कथनी करनी में।।

02

रख दिया है बवाल कर उसने
एक जुमला उछाल कर उसने।।
एक दरिया उबाल कर उसने।।
ले लिया यार सब निशाने पर
सोचकर देखभाल कर उसने।।
साहबजादों के भर दिए लॉकर
अपनी जेबें खंगाल कर उसने।।
कर दिया है विनाश नस्लों का
बीज नफ़रत का पाल कर उसने।।

03

ये मंचों के कैरेक्टर हैं सभी किरदार झूठे हैं।
क़सीदे पढ़ रहे इनके वो सब अख़बार झूठे हैं।।
बरसते ही नहीं बादल कभी सूखी जमीनों पर
विफल हैं प्रार्थनाएं सब सभी मल्हार झूठे हैं।।
किये वादे बहारों के निभाये क्या कभी तुमने
भरोसा भी किया हमने मगर हर बार झूठे हैं।।
ये नकली फूल, ये गुलदान जो घर में सजाए हो
रंग औ खुशबू सभी झूठे तुम्हारे खार झूठे है ।।
हमारे दौर में खालें पहन कर शेर बनते हैं
असल में भेड़िये हैं सब सभी मक्कार झूठे हैं।।

04

इक शिफर में और तो कुछ है नहीं
बस जिगर में और तो कुछ है नहीं।।
दर्द का साया अकेला साथ में
मेरे घर में और तो कुछ है नहीं।
दश्त सहरा कहकशाँ हैं हमसफ़र
इस सफ़र में और तो कुछ है नहीं।।
भावनाएँ तंज हैं या शायरी
इस बहर में और तो कुछ है नहीं।।
दौलत नफ़रत,सनसनी, टीआरपी
अब ख़बर में और तो कुछ है नहीं।।

05

छोड़कर के गीत ग़ज़लें षट-पदी गाने लगें।
क्या करें, क्या हम तुम्हारी आरती गाने लगें।।
या करें इस दौर में मिन्नत,खुशामद,बन्दगी
या कोई गुणगान वाली रागनी गाने लगें।।
एकता सदभाव की साझा विरासत छोड़कर
हम तुम्हारे साज पर, धुन मज़हबी गाने लगें।।
दीन-दुखियों को तड़पता छोड़कर मझधार में
फूल, पत्ती, तितलियों पर शायरी गाने लगें।।
हाँ में हाँ तेरी मिलाये फक्र जुमलों पर करें
बेसुरी दौलत ऋचाएँ आपकी गाने लगें।।

डॉ उमेश चंद्र शुक्ल

अध्यक्ष,हिंदी-विभाग
महर्षि दयानंद कॉलेज
परेल मुंबई-12
9324554008

ग़ज़ल

(1)

तुमने पहचाना ठीक ठीक
ग़म से रिश्ता है ठीक ठीक।।
बस मन की बातें करनी हैं
सपनों का महल है ठीक ठीक ।।
हँसकर दर्द छुपा लेता है
उसका हँसना है ठीक ठीक ।।
आँखें सूनी दरिया सूखी
नहीं सावन फागुन ठीक ठीक ।।
जीवन रूठा, टूटे खिलौने
बचपन का हँसना ठीक ठीक।।
जीवन मरण का प्रश्न जटिल
साँसों का चलना ठीक ठीक।।
रिश्तों में खुशबू है उमेश
रूठना मनाना ठीक ठीक।।
डॉ.उमेश चन्द्र शुक्ल

(2)

वो शातिर चाल यूं चलतें रहेंगे
सियासी नारे बस लगते रहेंगे ।।
गहराती रात धधकती मशाले
शहर के झोंपड़े_जलते रहेंगे ।।
भागती दौड़ती है काली सड़कें
भीड़ में लोग यहाँ मरते रहेंगे ॥
नारों में बोलते, आदत पुरानी
गले मिलें, नारे वो गढ़ते रहेंगे ।।
मखमली शहर के बाशिंदे बता दें
कब तलक भूखें हम मरते रहेंगे ।।
चलेंगे हम हमारा रास्ता होगा
कदम से कदम मिला बढ़ते रहेंगे ।।
मिल जुलकर आगे चलना है उमेश,
रुकना नहीं आगे बढ़ते रहेंगे।।

(3)

बदलता है मौसम सहर देखते है
वो नज़रें छुपाकर असर देखते हैं।।
यहाँ कदम दर कदम बिखरे हैं काँटे
काँटों में जीवन का हल देखते हैं ।।
वक्त के इम्तिहां में गुजरें नहीं थे
वो परीक्षक, जीवन सफर देखते हैं।।
कल तलक रास्ते पर बसेरा रहा है
वो शातिर नज़रों से घर देखते हैं ।।
चील कौवे उड़ते खुले आसमां में
तरबतर खूं से वो बदन देखते हैं ।।
इबादत में उनकी नजर लग गई है
नारों से धड़कता शहर देखते हैं।।
श्रृद्धा विश्वास पूजित रहा विश्व में
मंदिरों में छूपा है, धन देखते हैं ।।
कर्म ईमान पूजा ईश्वर है 'उमेश'
धरती माँ हमारी नजर देखते हैं।।

(4)

इक दर्द का दरिया मेरे चारों तरफ़
सजी यादों कि बारादरी चारों तरफ।।
रिश्तों की जकड़न में बंधकर जी रहे
बढ़ने लगी है दूरियां चारों तरफ ।।
हमारे बीच रिश्ता भी कुछ अजीब है
भूलना चाहते, यादें हैं चारों तरफ।।
मिठाई चाँदी कि वर्क से सजने लगी
बस पैकिंग रैपर टैग है चारों तरफ।।
दिलों के बीच झिलमिल दरारें पड़ रही
यहाँ चाँदनी बिखरी हुई चारों तरफ ।।
हम काली स्याही से उजास लिखते है
मेरे शब्दों का असर है चारों तरफ ।।
वक्त की तासीर बदलने लगी उमेश
जिंदगी है भीड़ है दर्द चारों तरफ ।।

(5)

दिल पर पत्थर रख लूं क्या
रब़ से तन्हा कर लूं क्या।।
जीवन में है उठा पटक
तो समझौता कर लूं क्या।।
सभी लोग बिकने को राजी
दिल का सौदा कर लूं क्या।।
वोटों के व्यापारी हैं
खुद से झगड़ा कर लूं क्या।।
कुर्सी के मकड़जाल में
छल से रिश्ता कर लूं क्या।।
चाँदी की जूती चलती
मैं भी पीछा कर लूं क्या ।।
घर आँगन बाज़ार सजा
मैं भी सौदा कर लूं क्या।।
दर्द पिघलने लगता है
ग़ज़ल से तौबा कर लूं क्या।।
उसको पाने की चाहत
उमेश धोखा कर लूं क्या।।

आशा पांडेय ओझा

उदयपुर राजस्थान

ग़ज़ल- 1

हवा सहमी फ़ज़ां बोझिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर
यहाँ हर सम्त है क़ातिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

घिरी तूफां से नैया देश की हिचकोले खाती है
सरकता जा रहा साहिल,कहाँ हम साँस लें खुलकर

यहाँ देरो-हरम के नाम पर होती लड़ाई जब
निकलते पासबां शामिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

हुए हैं खोखले रिश्ते लगी दीमक अहंकारी
हुआ जीना बड़ा मुश्किल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

जलाती है जिगर मेरा तेरी दीद की चाहत
क़यामत ढा रहा है दिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

अँधेरों की ख़िलाफ़त में हमारे साथ आए जो
कहीं कोई नहीं आमिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

ज़ुबानों पर लगा ताले, नज़र को मूँद कर अपनी
बने अनजान जब आदिल, कहाँ हम साँस लें खुलकर

आमिल= प्रधान/ फ़क़ीर, आदिल= इंसाफ़ करने वाला
पासबां= निगरानी करने वाला

ग़ज़ल-2

यूँ नज़र का नज़र से इशारा हुआ
पुर सुकूं रात में चाँद प्यारा हुआ

तुम हमारे हुए दिल तुम्हारा हुआ
ना मुनाफ़ा, हुआ ना ख़सारा हुआ

छीनकर चैन ख़ुद का ख़ुदी से यहाँ
फिर रहा आदमी मारा-मारा हुआ

आँख से ये नमी गुम हुई जा रही
और दिल भी समझ लो शरारा हुआ

छोड़ के चल दिया वो ज़मीं पर हमें
दूर इतना गया के सितारा हुआ

साथ तुम जो हमारे हुए हो सनम
गो कि मझधार भी ये किनारा हुआ

आज फिर से उठी हूक वो याद की
डूबने फिर लगा दिल उबारा हुआ

चाँद-तारे कहाँ खो गये हैं सभी
आसमां क्यों लगे ये बुहारा हुआ

चाहतों की घटा जब बरसने लगी
ख़ुश्क मौसम भी दिल को गवारा हुआ

ये महकने लगा धूप से, दीप से
की ज़रा आरती, घर ये न्यारा हुआ

हाथ माँ ने रखा सर पे मेरे कभी
टल गयी हर बला ज्यों उतारा हुआ

याद वो आ गया याद ही याद में
अब तलक था कहीं जो बिसारा हुआ

छोड़कर के मुझे थे जो आशा हमें
राब्ता फिर न उनसे दुबारा हुआ

पुर सुकूं= सुकून से परिपूर्ण, ख़सारा= घाटा/नुक्सान
ख़ुश्क= सूखा

जीवन- दर्शन के दस दोहे

तन-तरुवर से झड़ रहे,नित साँसों के पात।
और जलेगा एक दिन,ठूँठ हुआ ये गात।।

जीवन एक किताब है,सुख-दुख हैं अध्याय।
पढ़ने सारे पृष्ठ हैं,दूजा नहीं उपाय।।

बोल कबीरा किस तरह पँहुचा रे उस पार।
काया हाँडी काठ की,चूल्हा ये संसार।।

जोड़ा-जोड़ी की बहुत,लेकिन गया फ़क़ीर।
खींची जैसे नीर पे, सारी उम्र,लकीर।।

भूल गया आवागमन,जमा लिया अधिकार ।
मद माया में डूब कर,भ्रमित हुआ संसार ।।

जीवन काजल कोठरी,काले इसमें हाथ।
उजले आते हम मगर,कालिख जाती साथ।।

डेरे-डेरे घूमती,टिके न कोई देश।
बंजारन सी आतमा, बदले निज परिवेश।।

दरिया अपनी ज़िंदगी,सुख-दुख लहर उत्ताल।
साँसे अपनी मीन सी,मौत डालती जाल ।।

चाँद नदी में देखकर, पुलकित हुआ चकोर।
छाया है रे बावळे ,मिट जाएगी भोर।।

जब तक मुझमें"मैं" रहा,रहा दूर भगवान।
ज्यों ही मैंने "मैं" तजा,तुरत मिला वो आन ।।

डॉ.जियाउर रहमान जाफरी
सहायक प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
मिर्जा गालिब कॉलेज गया बिहार,

कुछ और न कह पाने का मलाल है - महेश अग्रवाल कृत गजल संग्रह' अभी शेष है '

'अ'भी शेष है 'महेश अग्रवाल का ताजा गज़ल संग्रह है, जिसके पहले शेर समुद्र से शुरू होते हुए आख़री शेर पसीने पर खत्म होते हैं.एक सौ छह खूबसूरत गजलों से भरा पड़ा यह संकलन इस बात की उम्मीद दिलाता है कि जीवन में बहुत कुछ कहने के बाद भी बहुत कुछ शेष रह जाता है. इसलिए किसी कवि की कोई कृति उसकी आखिरी कृति नहीं होती, बल्कि एक कवि जहां अपनी रचना का समापन करता है, एक दूसरी रचना वहीं से जन्म ले लेती है.

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में जो कुछ बड़े नाम बराबर जेहन में आते हैं,उनमें एक कीमती नाम महेश अग्रवाल का भी है. सबसे बड़ी बात और ग़ज़लकारों से अलग उन्होंने सिर्फ ग़ज़ल को ही मूल विधा के तौर पर अपनाया है. उनकी ग़ज़लें पढ़ते हुए स्वाद भी देती है और जिंदगी के प्रति आश्वस्त भी करती है. वह एक ऐसे गजलकार हैं जो समस्याओं से अधिक समाधान निकालने की फिक्र करते हैं. उनके पास गज़ल का लबो-लहजा है और उसे तरन्नुम और त कल्लुम के साथ पेश करने की अदा है. उनकी ग़ज़लें मेहनत से लिखी हुई है वह छोटी बहर की ग़ज़लें कम लिखते हैं इसलिए उनकी उनकी ग़ज़लें सिर्फ काफिया पैमाइश नहीं होतीं, वो यकीनन तौर पर पाठकों के दिल और ज़ेहन पर असर भी करती है.

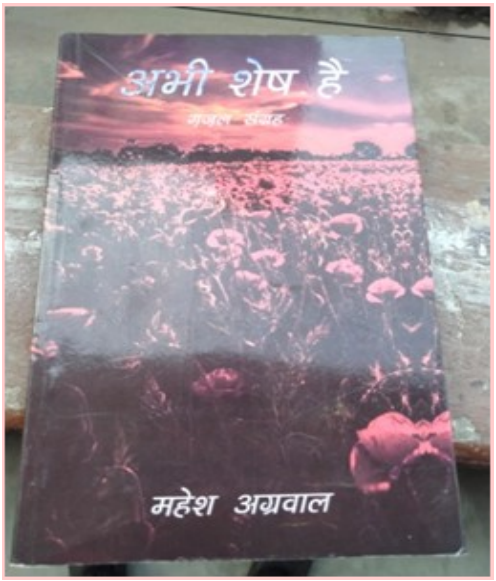

अभी शेष है गजल संग्रह से पहले भी कम से कम उनके चार संकलन प्रकाशित हो चुके हैं. भाषा के लिहाज से भी उनकी गजलें समकालीन हिंदी ग़ज़ल के नमूने पेश करती हैं . उर्दू हिंदी मिश्रित शब्दों की खूबसूरती तो उसमें है ही देशज और विदेशज तथा स्थानीय शब्दों ने भी इसके नाद सौंदर्य को बढ़ा दिया है. जब वह अपनी चौथी ग़ज़ल में कहते हैं

जहां में काम कोई भी कभी दुष्कर नहीं होता
कहीं कोशिश नहीं होती कहीं अवसर नहीं होता

तो न मात्र उनके कहन की सादगी झलकती है बल्कि अपनी बातों को रखने का उनका अंदाज भी मुतासिर करता है.

नदी, रवानी,दरिया, पानी समुद्र जैसे शब्द उनकी गजलों में बार-बार आते हैं. ठीक वैसे ही जैसे खुशबू परवीन शाकिर की शायरी में, मोहब्बत बशीर बद्र में और चांद इब्ने इंशा की ग़ज़लों में बार-बार रिपीट होता है, पर महेश अग्रवाल जिस समुद्र शब्द का इस्तेमाल करते हैं, वो ज़हीर कुरेशी के समुद्र की तरह तस्करों से मिला हुआ नहीं है. यह वो समुद्र है जो अपना खारापन लिए हुए यथास्थितिवाद का शिकार है-

अश्कों का सारा समुंदर जो यहां ढोता रहा
एक लम्हा दो उसे भी मुस्कुराने के लिए

उनका समुद्र उस पूँजीपति प वर्ग का भी द्योतक है जिसने सर्वहारा के रास्ते रोक रखे हैं -

हमारी प्यास को वो अपने पैरों से कुचलता है
समुंदर रोज अपने ही गुरुरों में उछलता है

हिंदी की प्रगतिवादी कविताओं के बरक्स हिंदी की ग़ज़लों में किसानों, दलितों, आदिवासियों और वंचित वर्ग की स्थिति का ज़िक्र कम है. महेश अग्रवाल की नज़र इस पर भी गई है.उनके कई शेर ऐसे हैं जहां किसान की विवशता का चित्रण है. यहां तक कि वह आत्महत्या भी कर लेता है -

हाथ आता कुछ नहीं कैसी किसानी है
कर्ज के दलदल में डूबी हर कहानी है

उनकी ग़ज़लें दो लोग, दो वक्त और दो दौर को मिलाने का काम करती हैं.उनकी शिकायत है कि हम अपनी पुरानी रवायत को भूलते जा रहे हैं -

नया स्वीकार करता है पुराना भूल जाता है
वह अपने दौर का अच्छा जमाना भूल जाता है

उनके बहुत सारे ऐसे शेर भी हैं जो आज के समय की हताशा, निराशा और बीहड़पन को उघारती है. उनके ऐसे शेर पढ़ते हुए टी एस एलियट की कविता' खोखले लोग' याद आती है जिसमें कवि कहता है कि हम ऐसे खोखले लोग हैं जिन की खाल भर दी गई है. महेश अग्रवाल इस स्थिति का ज़िक्र आपने बहुत सारे अशआर में करते हैं-

लादकर कब तक चलोगे तुम गुरुर अपना
आईनों से दिल्लगी अच्छी नहीं होती
.....
आंसू के कतरों को भी हैरानी होती है
गम में डूबे लोग भला कैसे मुस्काते हैं

असल में हिंदी ग़ज़ल का जन्म प्रतिरोध से होता है. प्रतिरोध महेश अग्रवाल की ग़ज़लों में भी है लेकिन उनकी भाषा मारपीट वाली नहीं है. वह नर्म लहजे से ही अपनी बात कहने के कायल हैं -

भूख के अहसास को कुछ रोटियों के दर्द को
कौन जानेगा हमारी सिसकियों के दर्द को

कहना न होगा कि श्री अग्रवाल की नई किताब' अभी शेष है' हिंदी ग़ज़ल की दिन-ब-दिन मजबूत होती हुई परंपरा को पूरी जिम्मेदारी के साथ बढ़ाने की महत्वपूर्ण कोशिश है.

पुस्तक का नाम-अभी शेष है
विधा -ग़ज़ल
प्रकाशन वर्ष -2022
मूल्य -200
पृष्ठ -120
प्रकाशक - शिवम पूर्णा प्रकाशन भोपाल 41

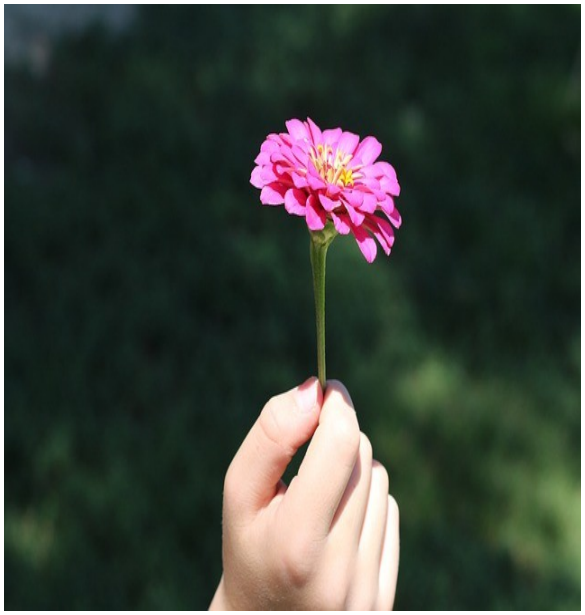

विजय कुमार पुरी
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

काव्य

"पल पल करता है मन मेरा"

शरद चांदनी की रातों में, ढूंढूं अजब ठिकाने को,
याद में उसकी खोया रहता, कौन सुने अफ़साने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

झर झर झरने सी झरती क्यों,
आँखों से अश्रु की धारा
कम्पित अधरों की खामोशी,
बूझ सका न क्यों हरकारा,
भाव भंगिमा के बलबूते, आतुर थी समझाने को,
चुप्पी को ही अच्छा समझा, देख किसी अनजाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

मधुमास में मधुकरी सी,
मधुवन में गुंजार करे,
फूलों कलियों की रंगत से,
नित नित नव श्रृंगार करे,
जब छलके यौवन मदमाता, फिर होश कहाँ दीवाने को,
गुन गुन करते आए भँवरे, प्रीत की रीत सिखाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

विपुल केश राशि रजनी सी,
मुख पर जब भी आती है,
रूप सलोने की कान्ति,
चपला सी चमकती जाती है,
फरफर उड़ता आँचल उसका, मन मेरा ललचाने को,
लाख कोशिशें करता रहता, मैं भी उसको पाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

उठती पलकें नज़र नशीली,
झुकती पलकों से शरमाये,
हिरणी सी जब चाल चले तो,
कमर लचीली बल बल खाए,
रूप निहारूँ बैठे बैठे, और सांसे हैं थम जाने को,
जादूगरी सी करती रहती, लगातार भरमाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

ललना की छलनी छाया को,
लिपटा लूँ अपनी बाहों में,
बस मदहोशी का आलम हो,
क्यों प्यासा भटकूँ राहों में,
प्रणय चेतना अगन लगाती, जो कहती जल जाने को,
मयखाने में मैं क्यों जाऊँ, अपनी प्यास बुझाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

विजय कुमार तिवारी
(कवि,लेखक,कहानीकार,उपन्यासकार,समीक्षक)
भुवनेश्वर,उडीसा,भारत
मो०-9102939190

शून्यकाल जो सुना नहीं गया' की जीवन्त कविताएं

एम के मधु यानी मधुसूदन कुमार सिन्हा कवि हैं,पत्रकार हैं,लेखक,संपादक हैं और अंग्रेजीदां हैं। उनकी सक्रियता पत्रकारिता,कला-संस्कृति और साहित्य में रही है। मेरे सामने उनका सद्यःप्रकाशित कविता संग्रह 'शून्यकाल जो सुना नहीं गया' है। संग्रह में उनकी या किसी दूसरे की ओर से परिचयात्मक या भूमिका के तौर पर कुछ भी नहीं है। बस कविताएं हैं,उनका आलोक है और आभा है। इस संग्रह में कुल 75 कविताएं हैं। कवि ने दो अनुभाग किए हैं। पहले अनुभाग में 51 और दूसरे अनुभाग में 24 कविताएं हैं। सामान्यतया शून्यकाल राजनीतिक शब्दावली है। पाठकों के लिए संकेत है और किसी नये अनुभव की उम्मीद भी।

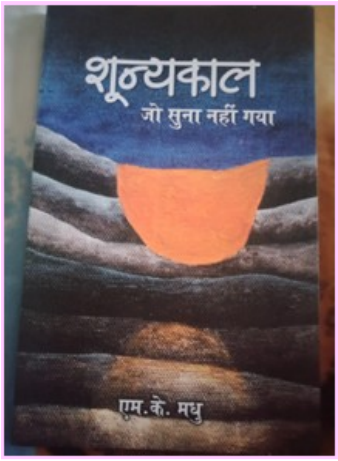

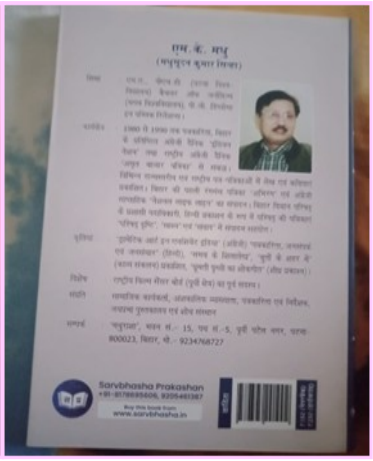

हर कवि की यही और ऐसी ही पूंजी होती है। इसी भीतरी प्राण-चेतना के बल पर वह दुनिया में बहुत कुछ ग्रहण करता है और अपने लेखन के माध्यम से परोस देता है। जैसी उसकी दृष्टि,वैसा उसका अनुभव और वैसा ही उसका सृजन। कवि बहुत बारीकी से अपने सामने के संसार को देखता है। यह देखना सामान्य नहीं होता क्योंकि वह संवेदना,सहानुभूति,करुणा,खुशी और आक्रोश से भरा होता है। सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बात यह है कि कवि अपनी सम्पूर्ण चेतना के साथ मानवता के लिए खड़ा होता है। उसकी सहमति मानवता के साथ होती है। इसके लिए कविताएं उसका हथियार होती हैं। हमने इतिहास में पढ़ा-देखा है,कवि से सत्ता को भय खाते हुए। वह डरने-डराने के लिए नहीं लिखता, बल्कि देश-समाज के सामने आईना रख देता है। लोग उस आईने में अपना चेहरा देखते हैं और जागते हैं।

संग्रह के शुरु में एम के मधु ने इसी संग्रह की 'जिंदगी' कविता की पंक्तियाँ लिखी हैं-चलो, चलें घूम आएं/जिन्दगी को देखें/थोड़ा समझ आएं/आकाश मे अंधेरा है घना/क्या हर्ज है/जुगनू की रोशनी में दौड़ आएं/सिर्फ किताब की तरह मत पढ़ो इसे/यह तो पथरीली जमीन है/आओ,फावड़ा उठाओ/कुछ फल, कुछ फूल के पेड़ उगाएं। ये सारे बिम्ब सांकेतिक हैं। यह कोई पहली बार किसी कवि ने नहीं लिखा है। ये भाव बार-बार दुहराए गये हैं और बार-बार कवियों की सोच में आएं हैं। इतनी बार दुहराए गये हैं, किसी एक की मौलिक सोच नहीं लगती। कविता के लिए यह सबसे बड़ा खतरा है। कवि तभी महत्वपूर्ण है,जब उसमें मौलिकता है। एम के मधु के भाव-चिन्तन में सहजता है, उद्देश्यपूर्ण अभिव्यक्ति है और दुनिया को सृजन की ओर ले जाने की कोशिश भी।

'कैलेंडर की पहली तारीख' उस मनोदशा की कविता है जिसमें ठहराव सा पसरा हुआ था,धूल जमी थी,खामोशी की चादर ओढ़ ली थी और कोरोना काल में बहुत कुछ खो गया था। कवि को अचानक पूरा खिला हुआ फूल दिख गया है,कैलेंडर में पहली तारीख मुस्करा रही है और उसके हिस्से का सूर्य चमक रहा है। यह सुखद बदलाव और उम्मीदों की कविता है। 'औजार' मजदूरों, श्रमिकों पर अच्छी,सशक्त कविता है। स्वयं को जोड़ने वाले के रुप में चित्रित करना किसी के लिए श्रेष्ठ और वरेण्य है। 'मैं एक पुल हूँ' में कवि पीढ़ियों को,सभ्यता को,श्मशान को,पिता और पुत्र के प्रश्नों को जोड़ता है। 'रंग,रंग और रंग' कविता का रंग देखिए-

प्रकृति ने रंग दिये
आदमी ने उड़ा दिये
समय बेरंग हो गया

कवि बेरंग समय में रंग भरना चाहता है,पूरी कविता में कोशिश जारी है और कविता में ही नहीं,पूरे जीवन में रंग भरना जारी है। कवि को लाल रंग पसंद है,लाल किताब पढ़ता है और उसी में उसके जन्मों की कहानी है। पत्नी के साथ सात वचन उसे सात रंग लगते हैं और बेरंग जिंदगी की अगली होली में रंग बचाने का संकल्प है। 'शून्यकाल' कविता में कवि समय के शून्यकाल की पहचान बताता है और जो हो रहा है,होने देने की सलाह देता है। 'सूख रहे समय में' कवि के बिम्ब चमत्कृत करते हैं,वह आग और पानी की जंग लड़ता है और उम्मीद बाँधे रखता है। 'बायी गली वाला मोड़' पुरानी स्मृतियों को कुरेदती संवेदना से भरी कविता है। 'हमारी ही हिन्दी है' कविता में कवि ने हिन्दी को भाव,सभ्यता,रस,संस्कृति,राग,संगीत से होते हुए मां के रुप में स्वीकार किया है। 'रोटी और देश' में कवि सब कुछ है,सब कुछ होना चाहता है-रोटी भी,देश भी,केसरिया और हरा भी,वाम व दक्षिण भी और उसके हाथ में देश की ध्वजा है। 'मातृ दिवस' कवि की संवेदना से भरी कविता है। पिता आकाश हैं,मां धरती और आज कवि के पास कुछ भी नहीं है,वह त्रिशंकु की तरह लटका हुआ है।

'बसुधैव कुटुम्बकम' में व्यंग्य है और पीड़ा भी कि कंप्यूटर की छाँव में कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है। 'संस्कृति' कविता में सुन्दर व्यंग्य है, नाम तो बचा हुआ है परन्तु शिलापट्ट की जगह टंगा है-'सावधान, यहाँ कुत्ते हैं।' 'मेरे गुरु' कविता में गुरु ने बहुत कुछ सिखाया है, कवि का प्रश्न है-क्या ये सब मैं कर पाया? 'कैरमबोर्ड' कविता में जीवन के काल-चक्र का, इच्छा और परिणति का अद्भुत चित्रण हुआ है। परिस्थियाँ जब साथ में ला पटकती हैं तो जो हुआ है, वही होता है। संवेदना देखिए- मेरा दर्द हाथ से हृदय में उतर रहा था। 'अपशकुन' कविता में व्यंग्य है, साजिश है, षड्यंत्र और विचारहीनता है। आज अपने पूर्वजों के प्रति ऐसा ही हो रहा है, उन्हें कोई रखने को तैयार नहीं है। हमारे समाज के खोखलेपन पर जबरदस्त व्यंग्य बन पड़ा है।

पितृ दिवस पर लिखी हुई 'बरगद विशाल' कविता पिता की,आज के समय में अपनी ही संतानों द्वारा उपेक्षा या धराशायी किए जाने की पीड़ा बयान करती है। 'मां! तुम मेरी पहली कविता' मातृ दिवस पर कवि ने भाव पूर्ण कविता में मां को याद किया है। 'बापू! तुम्हें नमन करते हुए' कविता में कवि ने महात्मा गाँधी को याद किया है। कवि का विचार समझने लायक है -तुम तो पहले ही मर चुके थे/ तुम्हारी हत्या इस हत्या से पहले ही हो चुकी थी/हजारों लाखों बार/तुम्हारे ही हजारों लाखों मानस पुत्रों द्वारा। कवि के सपनों में गाँधी बार-बार आते हैं परन्तु नींद खुलने पर कहीं नहीं दिखते। 'शुतुरमुर्ग' कविता में कवि ने वैसे लोगों को रेखांकित किया है जो मौसम देखकर व्यवहार करते हैं। 'राजा का बाजा और मेरा तराजू' किंचित राजनीतिक चेतना की कविता है जिसमें लोगों की पहचान बतायी गयी है। आत्म-मुग्ध कवि स्वयं को तटस्थ व सही मानता है और झंडा उठा लेने की बात कहता है। ऐसे ही भ्रम की दुनिया बनी रहती है। 'मीना बाजार' कवि के हिसाब से बुद्धिजीवियों द्वारा श्रमशील लोगों को लेकर बाजार सजाने की कविता है। 'स्त्रियाँ' कविता में कवि ने अन्तर्विरोध को पहचाना है। स्त्रियाँ जटिल से जटिल रहस्यों को जान लेती हैं, पर नहीं जान पाती हैं/अपने ही पुरुष के अंदर का धुआँ,आग और पानी। 'कैक्टस भी' कविता उड़ान भरती,बदलाव करती और माहौल से टकराव का हौसला रखती स्त्रियों की कविता है। कवि की पंक्तियाँ देखिए-

अब वह केवल कमलिनी,कुमुदिनी नहीं

पत्थरों में खिल रहे कैक्टस भी।

'मेरी सब्जपरी' सहज ही पिता की सम्पूर्ण चेतना को,रंगों को,बिम्बों को,आग को,धार को धारण कर अन्यत्र सार्थक उपयोग करने वाली शायद मानसपुत्री की कविता है। 'जुगनुओं का रोशनदान' कविता के सन्दर्भ को समझना किंचित सरल नहीं है। कविता भावुक करती है और संवेदना जगाती है।

'भारत वाले यायावर' कविता कवि द्वारा सच्ची श्रद्धांजलि है बहुचर्चित साहित्यकार भारत यायावर के प्रति। 'सर्जना के,अभ्यर्थना के' कविता का संदेश स्पष्ट है-कविता को जमीन दो/जमीन को कविता दो। फिर देखना,बहुत कुछ सकारात्मक और श्रेष्ठतर होगा। 'नये साल में' कवि को बहुत कुछ करना है-शब्द रचने हैं,भित्ति-चित्र बनाने हैं,पेड़ उगाने हैं,हवाओं को मुक्त करना है और नव-सृजन के आलेख लिखने हैं। 'सपने उकेरते पिता' सशक्त भाव-चिन्तन की कविता है। 'संझा दिया की तरह जलती मां' मां की स्मृति में सुन्दर भाव की कविता है। 'दरख्त' पेड़ व प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने की कविता है। एम के मधु अपनी छोटी-छोटी कविताओं में संदेश देते दिखते हैं। ये उनके सात्विक मन के उपदेश हैं जिन्हें पाठकों को समझना चाहिए। वे स्वयं स्पष्ट भी करते हैं-

यह सवाल आज नहीं तो कल

जरुर समझ में आएंगे।

'दैविक ऋचाओं की तरह' कविता के भाव बिल्कुल सही हैं। मनुष्य मर जाता है परन्तु उसके द्वारा किए हुए कार्य,उसका सृजन-कविता,पेंटिंग लोगों की स्मृतियों में जीवित रहते हैं। कर्म करने और सृजन का संदेश देती कविता बहुत भावपूर्ण है। कवि में एक खास तरह की बेचैनी है। उसे संसार भरा हुआ दिखाई देता है परन्तु अच्छी सोच का इंसान नहीं दिखता। इंसान भी दिखते हैं,पुस्तकें हैं परन्तु अच्छे विचार की कमी विचलित करती है। 'किताबें' कविता के यही भाव हैं। 'उस जुलाहे को नमन करो' जैसी कविताएं कवियों को कठघरे में खड़ा करती हैं। मानवपंथी से बड़ा सार्थक कोई शब्द-भाव नहीं हो सकता

वह पर्याप्त है। ऐसी पक्षधरता श्रेष्ठता को प्रभावित करती है। संदेश उत्तम है-पत्थरबाजी मत करो,मत फोड़ो शब्दों के पटाखे और ताने-बाने को मत तोड़ो। कवि ने सारे मासूम कारण गिनाए हैं। कविता बहुत अच्छी बन पड़ी है।

'तराजू में पिता' पीढ़ियों के बदलते सम्बन्धों,सन्दर्भों की चिन्तनपरक कविता है। मधु जी आपसी सम्बन्धों की गहरी अनुभूति रखते हैं। 'तलहथी की रेखाओं में' कविता के बिम्ब कवि की सोच,उनकी गतिविधियाँ,उनकी चिन्ता,संघर्ष सब कुछ दिखा देते हैं। प्रकृति की उपस्थिति एम के मधु की कविताओं में ताजगी भर देती है। नदी,ढलती शाम,सुबह की लाली,दोपहर की धूप,हरी-हरी दूब,ओस कण,तितलियाँ जैसे बिम्ब कविता को पाठक के हृदय तक पहुँचाते हैं। इनमें से किसी का न होना कवि को बेचैन करता है। अगली कविता 'शून्यकाल जो सुना नहीं गया' के ही नाम पर यह संग्रह है। संसद में शून्यकाल की बड़ी महत्ता है। इसमें सार्वजनिक महत्व के मुद्दे उठाए जाते हैं। अक्सर पक्ष और विपक्ष इतना शोर करते हैं,महत्वपूर्ण मुद्दे शोर में दब जाते हैं। कवि का संकेत,व्यंग्य के साथ उसी व्यवस्था की ओर है और देश की राजनीति पर जबरदस्त कटाक्ष है। 'बसंत आता नहीं' कविता में विसंगतियों के हालात में कवि तनिक निराश होता है और पूछता है,ऐसे-ऐसे हालात में क्या बसंत आएगा।

'डॉन' को लेकर एम के मधु ने अपनी कविता में यथार्थतः परिभाषित किया है और उनका व्यंग्य देखिए-उनके लोग बोलते हैं/उन्हें डाॅन मत कहिए साहब/उनके सारे अंग,लोक के तंत्र हैं/और लोक को भी उनपर नाज है। 'कत्ल जारी है' भयावह दृश्य दिखाती, देश और हालात पर डरावनी कविता है। हर पंक्ति अपने-आप में विध्वंस की कहानी है। 'बारूद,सिसकियाँ और खामोशी' कविता में बच्चे का प्रश्न किसी को भी विचलित कर सकता है। 'समय चुप है' कविता में कवि आने वाले समय में चिंताजनक स्थितियों की बात करता है और अंत में प्रश्न करता है-परन्तु पत्थरों पर तुम जो/अपने पांवों के निशान छोड़े थे/ उनका क्या होगा?/उन्हें कौन पढ़ेगा?/उन्हें क्यों पढ़ेगा?इन सवालों पर समय चुप है। 'काटता है आदमी' कविता में कवि आदमी के बारे में पूछता है-आदमी की खाल है,पर है कहाँ आदमी? आज आदमी ही आदमी को नष्ट करने में लगा है। कवि के बिम्ब सटीक चित्रण कर रहे हैं-सत्य की लड़ाई हो तो/झूठ से ही मारता है आदमी। कवि ने आगे लिखा है-आईने को तोड़ता, फोड़ता वह/पहचान के भय से भागता है आदमी। 'हत्यारे की नई प्रजाति' कविता दहशत भरने वाली है। पहले वे अंगुली, हाथ,पांव काटेंगे और उसके बाद धीरे-धीरे/वे तुम्हारे विचार काटेंगे/और तुम्हारी नई अंकुरित होने वाली भावनाओं को भी/काट लेंगे/ तुम तुरंत मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे। 'प्रश्न गौड़ है', और 'मेरा सवाल' कविताओं में कवि के प्रश्न अपनी जगह हैं,देखने में अच्छे हैं परन्तु प्रतिबद्धता शायद यथार्थ तक पहुँच नहीं पा रही है। उत्तर कवि को ही तलाशना है अपने स्वतन्त्र विचारों के साथ। तभी तो कवि लिखता है-'मैं धारदार होना चाहता हूँ।' ऐसी कविताएं जोश जगाती हैं,मंच पर तालियाँ बटोरती हैं और कोई संदेश देती है। कवि को सावधान होना चाहिए,हमारे कृत्यों,हमारी जीवन शैली और हमारे विचारों के आधार पर भी जनमत बनता है। कविता पर यह भी संकट है,बहुत सी कविताएं नारों में बदलती गयी हैं।

'वायरस' कविता की सच्चाई व्यंग्य की तरह है और बुद्धिजीवियों पर जबरदस्त कटाक्ष भी। 'आम जन' कविता में कवि ने कविता लिखने वाले से लेकर कविताएं बेचकर मुनाफा कमाने वालों के बारे मे अच्छी पहचान लिखी है परन्तु अंत का व्यंग्य देखिए-एक छठा आदमी भी है/जिसे कुछ पता ही नहीं /कि यह कविता उस पर लिखी गई है/ क्योंकि वह सचमुच आमजन है। 'नीचे की ऊँची कविता' साहित्यिक दुनिया की,कवियों की पड़ताल करती है। कवि कहीं न कहीं दुखी है। वह ऊँचे और बड़े कवि द्वारा नीचे की ऊँची कविता को बिना देखे,बिना सुने गुजर जाने को देखता रह जाता है। आज के साहित्यिक संसार में ऐसी स्थितियाँ हैं जिससे साहित्य का अधिक नुकसान हो रहा है। कवि की बेचैनी अपनी जगह सही है।

काव्य संग्रह "शून्यकाल जो सुना नहीं गया" के दूसरे अनुभाग में एम के मधु द्वारा रचित हिन्दी गीत संग्रहित हैं। 'बीत रहा साल' गीत में कवि ने अपने तरीके से जन-जीवन के अनेक प्रसंगों को मार्मिक भाव से याद किया है। समय सन्दर्भ में बहुत कुछ अनकहा रह जाता है,बहुत कुछ छूट जाता है और सवाल रह ही जाते हैं। 'धुँआ-धुँआ' गीत में कवि का संकेत स्पष्ट है,जो भी किया सब धुँआ-धुँआ हो गया। मधु जी के गीतों में रहस्य मुखरित हुआ है और कुछ आध्यात्मिकता के भाव हैं। 'महाविराम के पहले' गीत में कवि प्रवाह में है फिर उतार-चढ़ाव है,कहीं शून्य में बादलों का रथ दिख रहा है,कहीं सुरंग का किवाड़ खुल रहा है,अंत का पृष्ठ फड़फड़ा रहा है और एक पूर्ण विराम अडिग खड़ा है। कवि ने अपने गीत 'पीछे की पहचान पढ़ लेते हैं' में हमारे बीच के खास शख्सियत वालों की सामर्थ्य के बारे में बताया है। 'एक नदी टूट रही' मार्मिक गीत है। नदी से जुड़े सारे बिम्ब उस टूटन को, संवेदना को दिखा रहे हैं। चाँद या नदी की तेज धार सब में वही टूट है-लहरों के टूटने में चाँदनी टूट रही या बीत गयी बात सी खत्म हो रही। नदी का अंत देखिए-

रेत के पहाड़ में स्वयं दब रही

एक नदी टूट रही बीच से ही---

'हवा को हवा लगने लगी' के मुहावरे कवि की भावनाओं, अनुभूतियों को दिखा रहे हैं। सारे सन्दर्भ चकित करने वाले हैं और कवि की आँखें धीरे-धीरे जगने लगी हैं। 'अंधेरे की आँखों में सपन' गीत में जीवन में व्याप्त अन्तर्विरोध उभर रहे हैं।

कवि का सारा चिन्तन और कर्म सकारात्मक है,चाहे दूसरा कोई कुछ भी करे। 'तन्हा तन्हा दिन' गीत में कवि के सामने सब कुछ उजड़ा-सा है,कोई साथ नहीं है और अपने भी दूर हो गये हैं। हर किसी के जीवन में कभी-कभी तन्हाई के दिन होते हैं।

'मैं अनाम हो गया' कवि के मन की पीड़ा का गीत है। सारी पहचान मिट रही है और वह अनाम हो गया है। 'गंगा सी वह नदी' गीत में भी कवि की पीड़ा है,पीड़ा की स्मृतियाँ हैं। जो कभी गंगा सी नदी थी,अब नालों के बीच बह रही है। 'लम्हे' गीत में कवि के निराशा की व्यापक अनुभूतियाँ चित्रित हुई हैं-

वादे पर वादे थे उनके,वक्त पड़ा तो मुकर गये,

दरवाजे पर इंतजार में,चारों पहर निकल गये।

जीवन में अक्सर लोग धोखा देते हुए मिलते हैं,बदनाम करते हैं,आरोप-प्रत्यारोप करते हैं,ऐसे ही भाव-विचार का गीत है 'इल्जाम।' एम के मधु 'सूने कैनवस में रंग भरे' गीत के माध्यम से नये सिरे से सुखद जीवन की कल्पना करते हैं,नये रंग भर कर कुछ सुखद पल हँस-हँसकर जी लेना चाहते हैं। चिड़ियों के साथ प्रेम-गीत गाना चाहते हैं। सुखद है,अकेले नहीं,अपनी सहधर्मिणी को भी शामिल करते हैं। 'जीवन तो अनुष्ठान है' गीत की पंक्तियाँ हमारी सनातन सोच का परिचय देती हैं और उनका चिन्तन व्यापक रुप से उद्घोषित हुआ है-

जीवन की मेरी अपनी भाषा है,जय-विजय की अपनी परिभाषा है,

मैं स्वयं ब्रह्म,मैं स्वयं कर्म,गिर कर उठ जाने की आशा है।

'कुछ उजाले तुम भी बाँटो' गीत में कवि सहयोग, सह-अस्तित्व और मिल जुलकर जीवन बेहतर बनाने की कोशिश में है, बेहतर सृजन चाहता है। 'तुम शब्द-शब्द फैल गई' कवि के आपसी रिश्ते पर बेहतरीन बिम्बों के साथ प्रेम -स्नेह से भरा गीत है। सारे उदाहरण हृदय से निकले भाव सम्प्रेषित कर रहे हैं। ऐसा तालमेल, ऐसा चिन्तन हर किसी के जीवन को सुख-शान्ति और आनंद से भर देता है।

'बावरी,कलाई से जो झांझरी बजाई' गीत में कवि की कल्पना की उड़ान देखते बनती है। बावरी का झांझरी बजाना,चूड़ियाँ खनकाना,पायल छमकाना,आँचल लहराना और आँख मटकाना कवि नाना तरंगों में डूबता है। प्रकृति में बसंत आगमन पर तितलियों का संवाद 'तेरे हिस्से भी बसंत खिले हैं" गीत में कवि का प्रेम-चित्रण चमत्कृत करता है। इसमें तितलियाँ हैं,प्रेमी भौंरे हैं,सरसों के फूल, अमराइयों में बौर,बौराई हुई हवा और अँगड़ाई लेता मौसम है। आप भी देखिए-

आकाश का तन है भीगा-भीगा/धरती का मन भीगा-भीगा/ प्रणय डोर से/बादल के हिंडोले हैं/रतिगन्ध से कामदेव/क्यों पिघले हैं?/प्रेमी भौंरे क्यों मचले हैं? कवि अपनी प्रियतमा को अपने गीत 'जरा पास आओ' में स्नेहिल निमंत्रण देता है और जिंदगी को जिंदगी का नाम लिख देना चाहता है। 'रसगुल्ला प्यार है मेरा' गीत में कवि अपनी प्रियतमा के प्रति अपने प्रेम का नाना रुपों में इजहार करता है। उनके मन का रूमानी संसार नाना बिम्बों द्वारा प्रतिध्वनित हुआ है। 'हे सखे! क्या बताऊँ' गीत में कवि अपने सखा से सुख-दुख,आग-पानी,जीवन के रंग-बदरंग की बात करते हुए कहता है,क्या-क्या बताऊँ। कविता के बिम्ब कवि की संवेदना दिखाते हैं और उनकी असमर्थता भी। 'लिखता नया बिहार है' गीत कवि ने बिहार दिवस पर बिहार की शौर्य गाथा के रुप में लिखा है। 'अन्न का पैगाम लिखता हूँ' कवि के सामंजस्यपूर्ण भाव-चिन्तन का गीत है। कवि के मन में सम-भाव है,सबके लिए आदर है,सम्मान है और वह भाईचारे की बात लिखना चाहता है। संग्रह का अंतिम गीत 'मेरा सच' में कवि स्वयं को तटस्थ बताता है-

न वाम देखता हूँ

न दक्षिण चलता हूँ

कवि बहुत सी घोषणायें करता है और सच को सच कहने का हौसला रखता है। एम के मधु का लेखन व्यापक भाव-चिन्तन और अनुभवों से भरा हुआ है। उनके पास समर्थ भाषा है,उनकी शैली आकर्षित करती है। उन्होंने मुहावरों का उपयोग किया है। उनकी कविताओं में हिन्दी,उर्दू,भोजपुरी के शब्द भरे पड़े हैं। उनके विचार-चिन्तन में विविधता है। कहीं-कहीं जटिलता है और आयातीत विचारों के प्रति लगाव भी। हालांकि उन्होंने लिखा है,वे वाम और दक्षिण दोनों से अलग हैं। उन्होंने प्रेम-गीत खूब डूब कर लिखा है। सतत सृजन,लेखन के लिए शुभकामनाएं देते हुए मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

समीक्षित कृति :शून्यकाल जो सुना नहीं गया

(कविता संग्रह)

कवि/लेखक : एम के मधु

मूल्य :रु 150/-

प्रकाशक : सर्व भाषा प्रकाशन,नई दिल्ली

डॉ. प्रदीप उपाध्याय
16, अम्बिका भवन, उपाध्याय नगर,
मेंढ़की रोड, देवास, म.प्र. 455001

सामाजिक जीवन एवं व्यवस्थागत विसंगतियों पर प्रहार करता कहानी संग्रह 'पंचनामा'

श्यामल बिहारी महतो कथा संसार में एक जाना पहचाना नाम है।उनकी स्वयं की अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि है और वे एक किसान परिवार से हैं।साथ ही मजदूर यूनियन में सक्रिय हैं।तब स्वाभाविक ही है कि उनकी कलम शोषितों के पक्ष में और शोषण के खिलाफ धारदार हथियार के रूप में दिखाई देगी।उनकी लेखनी में समाज में फैली विसंगति,अन्तर्विरोध,स्वार्थ,शोषण की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।

श्यामल बिहारी महतो जी के अभी तक पांच कहानी संग्रह और एक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। बहेलियों के बीच, उबटन, लतखोर, बिजनेस के बाद पंचनामा कहानी संग्रह न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन से प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल पन्द्रह कहानियां सम्मिलित की गई हैं।इस कहानी संग्रह की एक विशेषता यह भी है कि कथाकार ने बिना अपनी बात कहे और फिर बिना किसी अग्रज साहित्यकार से पुस्तक के बारे में भूमिका की औपचारिकता निभाए अपनी कहानियों को सीधे-सीधे पाठकों के सम्मुख रख दिया है।आज के दौर में इस तरह के रस्मी-रिवाज कुछ अधिक ही निभाए जाने लगे हैं,तब लेखक इनसे दूरी बनाते हुए अपना उजला पक्ष पाठको के सम्मुख रखता है। सामान्यतः पुस्तक की भूमिका में सम्बन्धों के निर्वाह में सही तथ्य सामने नहीं आ पाते हैं। किसी भी रचना का समीक्षक,आलोचक,प्रशंसक सर्वप्रथम पाठक ही होता है।इस लिहाज़ से महतो जी ने लीक से हटकर संग्रह प्रस्तुत किया है।

महतो जी के कथा लेखन में ग्राम्य जीवन, शोषित समाज व्यवस्था, स्त्री -पुरूष सम्बन्धों का मनोविज्ञान,पशु-पक्षी प्रेमी यत्र तत्र दृष्टिगोचर होता है।लेखन में आंचलिकता का भी प्रभाव है तो स्वाभाविक है कि आंचलिक भाषा का भी प्रयोग होगा ही।भिन्न क्षेत्र के लोगों को आंचलिक शब्दों को समझने में कठिनाई आ सकती है लेकिन कहानी की लय में ये वाक्यांश बाधा न बनते हुए कथा को विस्तार देते चले जाते हैं और भावार्थ को सहज ही सामने रख देते हैं।

अब महतो जी की कुछ कहानियों पर भी बात कर लें।'प्रेम की जीत'कहानी में मूक पशु के प्रति करूणा और प्रेम का भाव जगाने में कथाकार सफल हुए हैं। उन्होंने लिखा है - "जानवर मुंह से कुछ बोल नहीं सकता है,पर प्रेम की परिभाषा वह समझता है, अपनी भाव भंगिमाओं से वह अपनी खुशी और दुःख प्रकट कर देता है।"

'विरासत का पंचनामा 'कहानी में ग्राम्य जीवन और खेती किसानी पर बखूबी उन्होंने अपनी कलम चलाई है।इस कहानी में आंचलिक भाषा का भी प्रयोग किया है। कृषि की महत्ता पर जोर देते हुए वे लिखते हैं कि -"किसानी में वो शान है जो बार्डर के जवानों में होती है। किसान तो माटी पुत्र होते हैं जो कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते हैं, किसान अन्नदाता है तो पालनहार भी किसान ही है। कोई सरकार-फरकार नहीं है, हमें अपनी किसानी काम को एक कर्म समझकर करना चाहिए। आदमी का कर्म ही उसका धर्म है।जैसे बाप-दादाओं ने किए, हमें उनकी विरासत को बर्बाद होने से बचाना चाहिए।"

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खाद्यान्न पात्र व्यक्ति को प्राप्त करने में कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। खाद्यान्न वितरण प्रणाली में समाई धांधलियां और गोलमाल जगजाहिर हैं।इसे लेखक ने 'राशनकार्ड का पंचनामा ' कहानी में बखूबी उधेड़कर रख दिया है।इसे इस संवाद में देखा जा सकता है-"लालजी साहू का जीवन में इतना आगे बढ़ना,आज बड़े आदमी के रूप में जाने जाना, बड़ी बात है।और जब बड़े लोगों में गिनती होने लगे तो आदमी को छोटा काम खुद छोड़ देना चाहिए,इसी में बड़प्पन है।अब मैं लालजी साहू जी से कहूंगा कि यह अपना राशनकार्ड सरकार को वापस कर दें।" समाज में व्याप्त पाखण्ड पर श्यामल जी ने 'पूजा का पंचामृत ' कहानी में सटीक कटाक्ष किया है। ग्रामीण जीवन में पंचायत का अपना महत्व है। गांव में आपसी झगड़े, वहां की समस्याओं को निपटाने में पंचों की भूमिका और फैसलों पर कहानी 'पंचायत का मुक्का' में उन्होंने गजब का तंज

इसी तरह प्रेम का पंचनामा, बेटों वाली मां का दर्द,संडेय बिरयानी,बदलता भारत, रिश्ते का पंचनामा,लेखक का पंचनामा जैसी कहानियां अपने शीर्षक के अनुरूप पठनीय होकर प्रभावी हैं तथा मन को छूने का सामर्थ्य रखतीं हैं।इन कहानियां को पढ़कर ऐसा अनुभूत होता है कि कहीं अपने आसपास ही यह सब घटित हो रहा है और इनके पात्र भी हमारे बीच हैं। सामान्य जीवन चक्र, आपसी रिश्ते, सामाजिक तानाबाना और उनके सरोकार भी परिलक्षित होते हैं। निश्चित ही पाठक वर्ग को ये कहानियां प्रभावित करेंगी। उम्मीद करता हूं कि इस संग्रह को पाठकों का बेहतर प्रतिसाद मिलेगा। शुभकामनाएं।

लेखक का पता –
श्यामल बिहारी महतो
ग्राम -मूंगो,थाना-नावाडीह, पोस्ट -गुंजरडीह,
जिला बोकारो, झारखंड
मो.6204131994

पुस्तक : पंचनामा (कहानी संग्रह)
लेखक : श्यामल बिहारी महतो
प्रकाशक-न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन
सी-515,बुद्ध नगर, इन्द्रपुरी,नई दिल्ली -110012

बाल कविता

डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
देहरादून

" नव वर्ष की शुभ बेला आई "

विगतवर्ष का हुआ अवसान ,
कर रहे नव वर्ष का गुणगान ।

जनवरी सन् दो हजार तेईस ,
करें मंगल सबका जगदीश ।

मंगलमय शुभ बेला है आई ,
सबको बहुत - बहुत बधाई ।

पौष माह और ऋतु शिशिर ,
नया साल शुभ आया फिर ।

शुक्ल पक्ष औ दिन रविवार ,
पौष की उन्नीस गते इस बार

बाढ़ - भूकम्प और कोरोना ,
दुःख-दरिद्रता कहीं दिखे ना ।

सुख-सम्पन्नता आये घर-घर ,
उन्नति शिखर चढ़ें नारी - नर ।

रहे न कोई भी भूखा - नंगा ,
धरती मे कहीं न होपायें दंगा ।

खुलें सबकी प्रगति के द्वार ,
ईष्टदेव करें सबका उद्धार ।

धर्म - जाति के मध्य दीवार ,
नजर न आये कहीं इस बार ।

त्यौहार मनायें सब मिलकर ,
जाकर के एक दूसरे के घर ।

नव वर्ष स्वागत मे सर्दी रानी ,
धुंध-कुहरा शुभ्र चादर तानी ।

जल पुष्प बरस रहे धरा पर ,
थर-थर काँप रहा प्राणी हर ।

टोपी-पंखी- जाकिट-मफलर ,
पहने हैं स्वागत करने को हर ।

है प्रकृति में भी उल्लास भरा ,
सजकर स्वागत में खड़ी धरा ।

यही कामना है सबके मन मे ,
नववर्ष शक्ति दे सबके तन मे ।

" खेलो सब रंगों के संग "

बासन्ती रंग में आकर होली ,
खुश होकर के हमसे बोली ।

बच्चों देखो तो धरा - गगन ,
सबके सब बने हुये मगन !

सुमन खिले हैं चारों ओर ,
देख नृत्य करता मन मोर !

जब खुशबू संग पासआती ,
तब पवन है जी को भाती ।

खग पेड़ों पर रहे चहक ,
हर जगह फूलों की महक ।

खेलो सभी रंगों के संग ,
पर करें न किसी को तंग ।

गायें-नाचें मिलकर साथ ,
अन्तर रहे न धर्म न जात ।

समझें हम बहिन - भाई ,
रहे न बीच में कोई खाई ।

बर्फी गुजिया लड्डू खायें ,
तरह-तरह के रंग लगायें ।

दिल खोल होली मनाओ ,
पढ़ाई में भी मन लगाओ ।

बाल कहानी

डॉ.सरला सिंह
नई दिल्ली

"संकल्प"

दीपू ज्यादातर विद्यालय में देरी से ही पहुँचता था। देर से आने वाले बच्चों की अलग लाइन बनवाई जाती है तथा उनका नाम भी उनकी कक्षा के अनुसार लिखा जाता है ताकि उनके कक्षाध्यापक उन्हें जान सकें और समझा सकें ।उस रजिस्टर में नवीं कक्षा में पढ़ने वाले दीपू का नाम एकाध दिन छोड़कर रोज ही लिखा होता।उसके कक्षाध्यापक केशव प्रसादउसे रोज समझाते की देरी से विद्यालय मत आया करो,छुट्टी मत लिया करो पर वही ढाक के तीन पात ।दीपू ज्यादातर छुट्टी लेता या देर से विद्यालय आता ।आखिर एक दिन तीन दिन की छुट्टी के बाद देरी से आये दीपू पर केशव जी बरस पड़े। डाँट खाने के बाद दीपू की आँखें बरस पड़ी और केशव जी उसमें पूरी तरह से भीग गये।

दीपू एक होनहार छात्र था। अभी आठवीं कक्षा तक समय पर आना सौ प्रतिशतउपस्थित होना उसकी खासियत थी । चाहे खेल हो या पढाई हर क्षेत्र में ही अव्वल ।ऐसा लड़का पढ़ाई में तो पीछे हो ही रहा था वह खेल से भी विमुख हो रहा था ।वह छुट्टी होते ही सीधे घर भागता था। उसके अध्यापक को उसके इस बदलाव पर आश्चर्य हो रहा था ।उन्होंने उससे कई बार पूछने की कोशिश की पर वह टाल गया।

"कोई बात नहीं है सर,अब मैं छुट्टी नहीं लूँगा
और समय पर विद्यालय आऊँगा।"

पर फिर वही सारी चीजें ,उसकी उदासी, विद्यालय देर से आना छुट्टी लेना आदि ।केशव जी जब जब उसके माता-पिता को विद्यालय बुलाते कोई न कोई बहाना सुनने को मिल ही जाता ।आखिर परेशान होकर केशव जी ने समय निकालकर दीपू के घर जाने की योजना बनायी रजिस्टर से दीपू के घर का पता नोट करके छुट्टी के बाद दीपू को बिना बताये उसके पीछे पीछे चल दिये। बाइक उन्होंने स्कूल में ही छोड़ दी थी ताकी दीपू अगर रास्ते में कहीं रुकता है तो भी उसे रंगे हाथों पकड़ सकें।

" अरे केशव जी ये पैदल ही कहाँ चले ?"

कोई न कोई परिचित मिल ही जाता और वे ."कुछ नहीं बस कुछ जरूरी काम है ।" कहकर उससे पीछा छुड़ाकर दीपू के पीछे हो लेते ।काफी दूर और संकरे रास्ते से गुजरते हुए उन्हें दीपू पर तरस भी आ रहा था एक छोटा लड़का इतनी दूर चलकर आता है । आखिर एक मकान में दीपू अन्दर जाने लगा । उसमें कई छोटे छोटे कमरे बने थे।

दीपू ने एक कमरे का ताला खोला बैग रखकर फिर बाहर आया और बगल के कमरे में चला गया। केशव जी को लगा की यह बगल के कमरे में क्यों गया ? वे कुछ और सोचते की उन्होने देखा दीपू एक छोटी लड़की को लेकर उस कमरे से निकलकर
अपने कमरे में जा रहा है।उसका छोटा भाई भी बैग टांगे आ गया शायद वह पास के किसी प्राइमरी स्कूल में पढ़ता होगा। फिर इसके माता पिता कहाँ है ? गाँव भी जाते तो छोटी लड़की को तो साथ ही ले जाते ही । शायद दोनों किसी काम से गये हों ?केशव जी कुछ भी समझ नहीं पा रहे थे ।आखिरकार केशव जी ने बगल वाले परिवार से दीपू के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए उनसे बातचीत करने का मन बनाया।

बगल के घर में खटखटाने के बाद एक बुजुर्ग महिला बाहर आयी । केशव जी ने उसे अपना परिचय दिया फिर दीपू के बारे में पूछा, "दीपू मेरे ही विद्यालय में पढ़ता है ,इसके माता-पिता से मिलना था ।" "नमस्ते सर आइए घर में बैठिए,मैं चाय बनाती हूँ।"

"नहीं चाय रहने दीजिए ,बस दीपू के बारे में जो जानती हैं बताइए। "

" सर जी इसके पिता तो छह महीने से एक सरकारी अस्पताल में भर्ती हैं और माँ उनको भी देखती है और किसी कम्पनी में भी काम करती है।"

"क्या हुआ इसके पिता को। "

"क्या बतायें सर जी , वह रोज शराब पीकर घर आता था और उसी को लेकर घर में रोज लड़ाई झगड़ा होता ही रहता था। एक दिन गुस्से में आकर इसके बाप ने तेजाब ही पी लिया।"

"फिर?" केशव जी सहम से गये।

"फिर क्या ,लोग उसे लेकर अस्पताल भागे , किसी तरह जान तो बची पर छह महीने से अस्पताल में ही है ,छुट्टी अभी भी नहीं मिली है। माँ बेचारी दिन में कम्पनी में काम करती है और रात में खाना लेकर फिर अस्पताल जाती है और उसे भी सम्भालती है।"

फिर बच्चे ?

" अरे सर जी कुछ दिन रिश्तेदार रहे फिर वे भी भाग गये । अब घर का काम तथा बच्चे दीपू ही सम्भालता है।" केशव जी आवाक् से खड़े थे। एक छोटे से नवीं कक्षा के बच्चे पर इतना सारा बोझ ? ये परिस्थितियाँ इंसान को कितना मजबूर कर देती हैं ? उस महिला को धन्यवाद कहकर

केशव जी दीपू के कमरे की ओर बढ़ चले। दरवाजा खटखटाने पर दीपू के छोटे भाई ने दरवाजा खोला। दीपू गैस के चूल्हे पर कुछ बना रहा था। सामने केशव सर को देखकर दीपू चकित रह गया।
सर जी आप ?
मुझे नहीं खिलाओगे ?
अरे सर क्यों नहीं ,आप बैठिए कहकर चारपाई पर फटे चद्दर को बिछाने लगा।
"इसे रहने दो ,ऐसे ही बैठ जाऊँगा।" चारपाई पर बैठते हुए केशव सर ने कहा। दीपू से उसके घर का सारा हालचाल पूछकर उन्होंने दीपू तथा उसके भाई को ट्यूशन पढ़ाने छोटी बहन का एडमिशन नर्सरी में कराने तथा उसके पिता के अच्छे इलाज की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

दीपू जैसे प्रथम स्थान पाने वाले एक कुशाग्र बच्चे का भविष्य बचाने का केशव जी ने संकल्प ले लिया था।

बाल कहानी

सीमा रंगा इंद्रा
हरियाणा

"सुरक्षा कवच"

अरे !अरे! मैं तुझे कुछ नहीं कहूंगी।बाहर आओ! बाहर आओ! देखो मेरे बच्चे भी खेल रहे हैं। हम सब मिलकर खेलेंगे। बहुत मज़ा आ रहा है।आ जाओ तुम भी।

नहीं-नहीं चिंटू मत जाना मम्मा ने मना किया है कि बिल से बाहर जाते ही खतरा ही खतरा है, और यह बिल्ली तुझे खा जाएगी चिंटू। बहन ने उसे समझाते हुए कहा पर यह तो खेलने के लिए बुला रही है। तभी तो मैं कह रही हूं बाहर नहीं जाना नहीं तो मैं मां को बताऊगीं।

लेकिन चिंटू बार-बार बाहर जाने की जिद कर रहा था।इतनी देर में ही चूहिया बाहर से आ जाती है। जिनको आते ही बच्चे सारी बातें बता देते हैं। कैसे बिल्ली हमें बाहर बुला रही थी। चूहिया ने तीनों को समझाते हुए कहा , यह बिल ही तुम्हारा सुरक्षा कवच है।जैसे ही बिल से बाहर निकले जिंदा नहीं बचोगे। इसलिए जब भी मैं खाना लेने बाहर जाऊं तुम अंदर ही रहना।पर मां वह मुझे अपने बच्चों के साथ खेलने को बुला रही है और बहुत प्यार करती है मुझसे। मैंने कहा ना नहीं।बस नहीं जाना। अगली सुबह जैसे ही चूहिया खाना लेने गई।बिल्ली आई।अरे! तुम आ जाओ खेलते हैं हम बहुत मजा आएगा आज। चिंटू तुरंत बाहर चला जाता है। दोनों ने बहुत मना किया, पर माना नहीं। थोड़ी देर बिल्ली उसके साथ खेली ताकि दोनों बच्चे भी बाहर आ जाए।जब चीनू मीनू बुलाने पर भी नहीं आए तो वह चिंटू को मुंह में दबाकर दूर ले गई।बच्चे चिल्लाने लगे मम्मी मम्मी ओ मम्मी बचाओ।

जैसे चूहिया ने सुना दौड़ी-दौड़ी भाग कर आई। चिंटू नहीं है घबराकर बिल्ली की तरह भागी पर तब तक देर हो चुकी थी। चूहिया दोनों बच्चों को समझा रही थी देखो जो मां की बात नहीं मानता उसके साथ यही होता है।मैंने अपना एक बेटा खो दिया है।मैं तुम्हें नहीं खोना चाहती हूं।जब तक मैं ना कहूं तब तक तुम बिल के अंदर रहना।यह तुम्हारा सुरक्षा कवच है। दोनों बेटे मां को लिपटकर जोर-जोर से रोने लगे। और बोले मां जब तक हम बड़े नहीं हो जाते तब तक हम बाहर नहीं जाएंगे।

जब आप हमें आज्ञा देंगे और हम इस लायक हो जाएंगे तो ही हम आपको बता कर जाएंगे।कभी भी आपको बिना बताए यहां से नहीं जाएंगे।

डॉ० कुसुम रानी नैथानी

सही सलाह

टिंकी गौरैया ने पहली बार सोनू के घर पर अपना घोंसला बनाया था। उसके आसपास वह अक्सर लीना छिपकली को घूमते देखती। एक दिन टिंकी बोली-

" तुम यहां कब से रह रही हो लीना?"

" मैं पैदा ही इसी घर में हुई हूं । मम्मी कहती थी हमारे पुरखे शुरू से यहीं रह रहे हैं। तुम यहां अभी आई हो ।"

"तुम्हें पता है चिड़िया जब उड़ना सीख जाती है तो उसे अपने साथी के साथ नया ठिकाना बनाना होता है । मैंने भी जोजो के साथ इस घर मे नया घोंसला बनाया है। कुछ दिन बाद मैं घोंसले में अंडे दूंगी। उनसे नन्हे बच्चे निकलेंगे । वे भी बड़े होने पर अपने लिए नया घोंसला बनाएंगे । हम एक जगह पर नहीं रहते। सब दूर-दूर तक फैल जाते हैं ।"

"तुम उड़ सकती हो इसीलिए दूर चली जाती हो। हम छोटे जीव उड़ नहीं सकते । हमें एक ही जगह पर रहना होता है।"

" बहुत सारे ऐसे जीव हैं जो उड़ नहीं सकते फिर भी वे इधर उधर आराम से घूमते फिरते रहते हैं ।"

"मुझे घूमने में बहुत डर लगता है ।मुझे सोनू का घर सबसे सुरक्षित लगता है। यहां रहने और खाने की कोई कमी नहीं है । हमारी कई पीढ़ियां यहां पर आराम से रह सकती हैं ।"

"सोनू को तुम्हें देखकर कोई परेशानी नहीं होती ?"

"नहीं हम ज्यादातर रात के अंधेरे में ही बाहर निकलती हैं और घर मे घुसने वाले कीड़े मकोड़ों खाकर अपना पेट भर लेती हैं । कभी कोई सदस्य रात में उठ जाता है तो हमें देखकर डर के मारे चिल्लाने लगता है।"

" तब तुम्हारी जान पर आफत आ जाती होगी ।"

"ऐसा कभी हुआ ही नहीं । वे जानते हैं हम उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाते और बदले में घर के अंदर से मच्छर, कॉकरोच, मक्खी और कीड़े हटाकर उनकी मदद करते हैं।"

"तुमसे बात करके आज मुझे बहुत अच्छा लगा लीना ।"

"मुझे भी।" कहकर वे दोनों अपने अपने काम पर लग गए।

अक्सर लीना और टिंकी की मुलाकात हो जाती और वह देर तक बातें करते रहते। टिंकी उसे बाहर के समाचार सुनाती। लीना बोली-" तुम्हारे आ जाने से मुझे भी पता लगने लगा है कि आसपास क्या हो रहा है ? वरना मैं किसी से बात भी नहीं करती थी।"

" तुम चाहो तो घर से बाहर की दुनिया अपनी आंखों से देख सकती हो।"

" बाहर जाने के बारे में हम सोच भी नहीं सकते।"

" ऐसा नहीं कहते । दुनिया बहुत बड़ी है ।जब तुम यहां से बाहर निकलोगी तभी कुछ देख सकोगी । एक दिन तुम नजदीक ही कहीं घूमने चली जाना । वहां जाकर तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा ।"

"मम्मी ने कभी बताया ही नहीं छिपकली भी घूमने जा सकती है ।"

"तुम्हारी मम्मी ने नहीं बताया तो क्या हुआ?तुम तो अपने बच्चों को बता सकती हो कि घर से बाहर घूमने का तुम्हारा अनुभव कैसा रहा?"

उसकी बात लीना को अच्छी लगी। उसमें सोच लिया कल वह भी कुछ देर के लिए सामने खड़े आम के पेड़ पर चढ़कर आसपास की दुनिया देखेगी ।दूसरे दिन धूप निकलते ही वह सबसे बचकर आंगन से होते हुए आम के पेड़ पर पहुंच गई । वहां पर कई पक्षी बैठे हुए थे । उसने तोता, मैना ,कौआ और कबूतर सबको इतनी नजदीक से पहली बार देखा था । डर के मारे वह पत्तों के नीचे छुप गई । वह सब आपस में बातें कर रहे थे । वह उनकी बातें सुनने लगी।

"तुम यहां क्या कर रही हो?" कैमी ने अचानक उसके सामने आकर पूछा तो वह उसे देखकर बुरी तरह डर गई। वह पेड़ से गिरते गिरते बची। उसे समझ नहीं आया उससे मिलता जुलता यह जीव कौन है ? उसका रंग हरा था । यहां तक कि उसकी आंखें भी उसे हरी ही दिखाई दे रही थी।

" मैं लीना छिपकली हूं । सामने वाले घर में रहती हूं ।"

"छिपकली कब से पेड़ पर चढ़ने लगी? आज पहली बार किसी छिपकली को यहां देख रही हूं।"

" तुम कौन हो? तुम तो मेरे जैसी दिखाई दे रही हो।"

" मैं कैमी गिरगिट हूं। "
"मैं पहली बार पत्तियों जैसे रंग वाला जीव देख रही हूं।"
"गिरगिट रंग बदलने की कला में माहिर होती हैं। मैं अभी तुम्हें अपना रंग बदल कर दिखाती हूं ।"
कुछ ही देर में कैमी हरी से लाल हो गई थी। यह देखकर वह बुरी तरह चौंक गई ।
"तुम अपना रंग कैसे बदल लेती हो?"
"प्रकृति ने हमें रंग बदलने की कला दी है । इससे हम पेड़ों पर छुपकर दुश्मन से अपना बचाव करते हैं और आराम से अपना भोजन भी पकड़ते हैं ।"
"मुझे भी यह कला सिखा दो।" लीना बोली तो कैमी हंसने लगी।
" हर कोई यह काम नहीं कर सकता। यह कला केवल गिरगिट को आती है।" कहकर उसने फिर से अपना रंग बदल कर भूरा कर लिया। वह उसे रंग बदल बदलकर दिखाने लगी। ऐसा करने मे उसे बहुत मज़ा आ रहा था। तभी उसने सामने से आ रहे कीड़े को झट से लपक लिया।
" तुमने देखा इस कला की वजह से वह कीड़ा मुझे नहीं देख सका लेकिन मैंने उसे आराम से देख लिया था। अब बताओ तुम यहां क्या करने आई हो?"
" मैं घर से निकलकर बाहर की दुनिया देखना चाहती थी इसीलिए पहली बार यहां आई हूं।"
" आज के बाद कभी ऐसा दुस्साहस मत करना । यहां पर तुम्हारे लिए बहुत खतरा है। पेड़ पर तुम दूर से ही दिखाई दे रही हो ।"
"अब मैं घर वापस कैसे जाऊंगी ?"
"कुछ देर में सब पक्षी यहां से उड़ जाएंगे। तुम जिस तरह बचते बचाते यहां तक पहुंची हो। ऐसे ही यहां से वापस भी चली जाना।"
" ठीक है। तुमसे मिलकर मुझे आज बहुत अच्छा लगा।"
" तुम बहुत भोली हो लीना । मुझे भी तुम बहुत अच्छी लगी।"
" मैं सामने वाले घर में रहती हूं। कभी कभी मुझसे मिलने वहां आना कैमी।"
" मैं तुमसे मिलने वहां जरूर आऊंगी।" कहकर कैमी ने उससे विदा ली।
आज का अनुभव लीना के लिए बहुत ही रोमांचक था। उसने यह बात वापस आकर टिंकी को बताई। वह बोली- " मेरी भी कभी कभी कैमी से मुलाकात हो जाती है । वह एक भली गिरगिट है । उसने तुम्हें सही सलाह दी और वापस घर भेज दिया।"
" तुमने भी तो मुझे अच्छी सलाह दी थी लेकिन आम का पेड़ मेरे लिए सुरक्षित जगह नहीं थी। आज का अनुभव मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगी।" लीना बोली और उससे विदा लेकर खाने की तलाश में आगे बढ़ गई।

बाल कविता

भाऊराव 'महंत'
बालाघाट, मध्यप्रदेश

मोर तुम्हारे पंख

जब-जब भी मैं देखा करता,
मोर तुम्हारे पंख।
लगता मुझको बहुत बड़े हैं,
चोर तुम्हारे पंख।।

दुनिया के सारे पंछी से,
नित्य चुराकर रंग।
खूब रँगाया, जिन्हें देखकर,
हो जाते सब दंग।।

उस्ताद

रोज सुनाती नई कहानी
अथवा गीत।
जिनमें होता है मनोरंजन
या संगीत।।
रोज सुनाकर करवा देती
हमको याद।
नानी तब हम क्यों न कहें
तुमको उस्ताद।।

जनजातीय उत्थान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

आस-पास

माधव विश्वविद्यालय में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा जनजातीय उत्थान पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ। संगोष्ठी के दूसरे दिन के मुख्य अतिथि डॉ. बेलाराम घोघरा ने अपने उद्बोधन में सरकारी योजनाओ एवं कानूनों के आयोजनों की आवश्यकता के कारण एवं सुझाव बताएं। विषय5 अतिथि बीके कृष्णा बहन ने सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं पारंपरिक जरूरतों पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि डॉ विजय कुमार ने स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों की सहभागिता पर चर्चा की। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो एसएन शर्मा ने संगोष्ठी के विषय को विश्वविद्यालय के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में डॉ अमरजीत कुमार ने बताया कि आदिवासियों ने आज भी हमारी संस्कृति को जीवित कर रखा है। डॉ प्रदीप तिवारी ने आदिवासियों के सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की। डॉ पी के सिंह ने कहा कि आदिवासी आज भी जल, जंगल, जमीन से जुड़े हैं और असल में प्राकृतिक संसाधन के हकदार वही है।

प्रथम एवं द्वितीय दिवस के कार्यक्रम का मंच संचालन राष्ट्रीय संगोष्ठी समन्वयक डॉ. अमृत लाल जीनगर ने करते हुए बताया कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र के अवसर पर संगोष्ठी सचिव डॉ. कांतिलाल यादव द्वारा दो दिन की संगोष्ठी का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी निदेशक डॉ. गीता सक्सेना ने अंत में सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया और संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ रेणुका, डॉ विजय, डॉ प्रभा, डॉ ऋषिकेश, डॉ संजय, डॉ रविंद्र कुरूप, चेतना जोशी आदि के साथ अन्य संस्थाओं के अधिष्ठाता व संकाय सदस्य और छात्र-छात्राएं भी उपस्थित थे। 14 और 15 दिसंबर को जनजाति उत्थान में सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, शैक्षणिक, आर्थिक, भाषिक, संचारिक एवं विविध गतिविधियों के योगदान विषय पर विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। दो दिनो के इस संगोष्ठी में जनजातीय समाज के उत्थान और समाज के मुख्यधारा से उन्हें जोड़ने को लेकर गहन विचार-विमर्श हुए।

आस-पास

ग़ज़ल कुंभ 2023 संपन्न

हरिद्वार : बसंत चौधरी फाउंडेशन, नेपाल के सौजन्य से हरिद्वार में मकर संक्रांति के पर्व पर दो दिवसीय ग़ज़ल कुंभ का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन विश्व हिंदू परिषद के कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने किया। चार सत्रों में हुए इस दो दिवसीय ग़ज़ल कुंभ में देशभर से पधारे लगभग 150 गजलकारों ने शानदार ग़ज़ल पाठ किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में नेपाल से डा श्वेता दीप्ति एवम मुख्य अतिथि के रूप में डा मधुप मोहता (IFS) और शैलेंद्र जैन अप्रिय (अमर भारती) पधारे। इस अवसर पर प्रख्यात शायर दीक्षित दनकौरी के सद्य प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह ' सब मिट्टी ' का लोकार्पण हुआ एवम देहरादून के वरिष्ठ शायर अंबर खरबंदा को 'ग़ज़ल कुंभ 2023 सम्मान ' प्रदान किया गया। आयोजक संस्था अंजुमन फरोगे उर्दू के अध्यक्ष मोईन अख्तर अंसारी ने सभी गणमान्य अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

ग़ज़ल कुंभ के संयोजक दीक्षित दनकौरी ने बताया कि पिछले 18 वर्षों से प्रतिवर्ष निरंतर ग़ज़ल कुंभ का आयोजन होता आ रहा है जिसमें देशभर के सैकड़ों वरिष्ठ और नवागंतुक ग़ज़लकार ग़ज़ल पाठ कर चुके हैं।

मशहूर शायर नज़ीर 'बनारसी' की 113वीं जयंती पर 'नज़ीर बनारसी यादों के आईने में' पुस्तक का विमोचन
बेनज़ीर थे नज़ीर 'बनारसी' - संकट मोचन मंदिर महंत प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र
नज़ीर 'बनारसी' की शायरी व कविताएँ आगामी पीढ़ियों के लिए धरोहर - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

गंगा-जमुनी तहजीब और बनारसी मिजाज के मशहूर शायर नज़ीर 'बनारसी' की 113वीं जयंती के उपलक्ष्य में नज़ीर बनारसी एकेडमी और डॉ. अमृत लाल इशरत मेमोरियल सोसाइटी के संयुक्त तत्त्वाधान में नागरी नाटक मंडली, वाराणसी में आयोजित समारोह में 'नज़ीर बनारसी यादों के आईने में' पुस्तक का विमोचन संकट मोचन मंदिर के महंत प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र, मुख्य अतिथि पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव और मंचासीन गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया।

अध्यक्षता करते हुए संकट मोचन मंदिर, वाराणसी के महंत प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र ने कहा कि नज़ीर 'बनारसी' बेनजीर थे। वे काशी के फकीर थे। उन्होंने बनारस की रूह को समझा इसलिए इस शहर ने उन्हें स्वीकार किया। नज़ीर 'बनारसी' ने बनारसीपन को निभाया। अपनी शायरी में भी गंगा को जिया। अपनी रचनाओं के माध्यम से वे सदैव जिंदा रहेंगे।

मुख्य अतिथि वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि नज़ीर 'बनारसी' की ख़ूबी उनकी भाषा की सबसे बड़ी सम्प्रेषणीयता है। जन-मुहब्बत, भाईचारा, देशप्रेम उनकी शायरी और कविताओं की धड़कन है। नज़ीर 'बनारसी' की शायरी और उनकी कविताएँ आगामी पीढ़ियों के लिए धरोहर हैं। इससे युवाओं को जोड़ने की जरुरत है। अगर हम इस मुल्क और उसके मिज़ाज को समझना चाहते हैं, तो नज़ीर 'बनारसी' को जानना और समझना होगा।

मुफ़्ती-ए-बनारस मौलाना अब्दुल बातिन नोमानी ने कहा कि मोहब्बत के नाजुक एहसासों और जरूरतों को नज़ीर 'बनारसी' ने बड़े सलीके से शायरी और गजलों की शक्ल दी। वे मजहबी एकता कायम करने के फनकार थे। बीएचयू उर्दू विभाग के अध्यक्ष प्रो. आफताब अहमद आफाकी ने बीएचयू में अमृत लाल इशरत और नज़ीर 'बनारसी' के नाम पर गोल्ड मेडल की शुरुआत करने की जरूरत बताई। प्रख्यात शायर डॉ. माजिद देवबंदी ने कहा कि हम बच्चों को आधुनिक तालीम तो दें लेकिन हिंदी और उर्दू जुबान भी पढ़ाएं।

डॉ. अमृत लाल इशरत मेमोरियल के अध्यक्ष दीपक मधोक ने नज़ीर 'बनारसी' और अपने पिता अमृतलाल इशरत का संस्मरण सुनाया। प्रसिद्ध गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने नज़ीर 'बनारसी' की रचनाधर्मिता पर प्रकाश डालते हुए उनसे जुड़े प्रसंगों को साझा किया। नज़ीर बनारसी एकेडमी के अध्यक्ष मो. सगीर ने बताया कि नज़ीर 'बनारसी' की प्रमुख किताबों में गंगो जमन, जवाहिर से लाल तक, ग़ुलामी से आज़ादी तक, चेतना के स्वर, किताबे ग़ज़ल, राष्ट्र की अमानत राष्ट्र के हवाले, कौसरो ज़मज़म शामिल हैं। लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट निदेशक आर्यमा सान्याल ने जीवन में उत्सव नामक अपनी रचना सुनाई। स्वागत अकादमी के अध्यक्ष मो. सगीर, संचालन इशरत उस्मानी और धन्यवाद रेयाज अहमद ने किया।

आपकी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका में स्थान पाना निश्चित रूप से ही मेरे लिए बहुत ही सुखद हर्षानुभूति है । बहुत-बहुत हृदय तल से आभार एवं अभिनंदन आदरणीय संपादक एवं समस्त संपादन समूह

विजय कनौजिया
अम्बेडकर नगर 9818884701

मानवी पत्रिका के अक्टुबर-दिसम्बर 2022के अंक में 'जगपति' को संबोधित कविताएं प्रकाशित करने के लिए सादर आभार! अंक मैं पढ़ रहा हूं।

बी.एल.माली 'अशांत'

अंक में स्थान देने के लिए आपका कृतज्ञ मन से आभार।स्तरीय और सधा हुआ अंक है।आपको और टीम के अन्य साथियों का बहुत आभार।

मनोज जैनभोपाल
9301337806

माननीय संपादक महोदय, सप्रेम नमस्कार
मानवी का अंक भेजने के लिए आपका धन्यवाद. यह अंक सर्जना की दृष्टि से ओतप्रोत है. हिंदी के पाठकों के लिए यह ऊर्जा का काम करेगा. इससे हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गति और बल मिलेगा.

बुद्धदास मिरगे

मैंने अपने जीवन में बहुत सी साहित्यिक पत्रिकाएं देखी , एक पाठक , एक लेखक के तौर पर , वर्तमान पेशे में आने से पूर्व मैं राजस्थान के प्रतिष्ठित समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका में भी काम कर चुका हूँ। आज आपकी पत्रिका देख कर मैं दावे से कह सकता हूँ यह सर्वश्रेष्ठ है हरेक मायने में आपको बहुत बधाइयाँ , साधुवाद ।
आप सरीखे गुणीजन के साथ जुड़कर सच मे आज गौरव का अनुभव हो रहा है। आपकी पत्रिका का एक हिस्सा बनाने के लिए आपका बहुत आभार आदरणीय। आपका प्रकाशन रात दिन उन्नति करे इन्हीं शुभकामनाओं सहित सादर नमन

लक्षी कान्त शर्मा

रचनाकारों से.....

1 -मानवी त्रैमासिक ई पत्रिका सभी लेखकों/ कवियों/ कथाकारों/ व्यंग्यकारों.....से हिंदी साहित्य की सभी विधाओं यथा लेख/ आलेख/ निबंध/ संस्मरण/ कथा/ कहानी/गीत/नवगीत/ग़ज़ल/कविता/समीक्षा इत्यादि पर स्वलिखित, मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित रचनाएं आमंत्रित करती हैं।

2 -कृपया कविता /गीत /ग़ज़ल आदि रचनाएं दो से अधिक न भेजें। भेजने से पहले वर्तनी त्रुटि सुधार कर उत्कृष्ट रचनाएं manvipatrika@gmail.com पर ही भेजें।

3-रचनाऐं वर्ड फाइल /यूनीकोड में भेंजे। पीडीएफ फाइल स्वीकार्य नहीं है।

4-कृपया माह में पड़ने वाले दिवसों /त्योहारों को ध्यान में रखते हुए अपनी रचनाएं भेजें।

5-कृपया रचना के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, पता, कान्टैक्ट नंबर , एवं छाया चित्र भी भेजें।

6-कृपया रचना के साथ साथ , स्वप्रमाणित भी करें कि प्रेषित रचना , मौलिक, स्वलिखित , अप्रकाशित एवं अप्रसारित हैं, अन्यथा रचनाओं पर विचार संभव नहीं है।

7- एक बार में अपनी एक या दो ही उत्कृष्ट रचनाएं भेजे,और पत्रिका के प्रकाशन का इंतजार करें लगातार रचना भेजने का कोई तात्पर्य नहीं है।

8 -यह एक अव्यवसायिक नि: शुल्क ई पत्रिका है, रचनाकारों को पारिश्रमिक देने का कोई प्रावधान नहीं है।

9-समीक्षा के लिए, पुस्तकों की दो प्रतियां सम्पादकीय पते (बी-701,स्वाति फ्लोरेंस, निकट सोबो सेंटर, साउथ बोपल, अहमदाबाद-380058,गुजरात ,मोबाइल-9833775798) पर भेजें। स्वयं समीक्षा भेजने पर पुस्तक की एक ही प्रति भेजें।

10-रचना प्रकाशन और रचना संशोधन का अधिकार संपादक मंडल का होगा ।संपादक मंडल का निर्णय मान्य अन्तिम एवं बाध्यकर होगा।

कवि घाघ

जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर। मटर के बीघा तीसै सेर॥

बोवै चना पसेरी तीन। तीन सेर बीघा जोन्हरी कीन॥

दो सेर मोथी अरहर मास। डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास॥

पाँच पसेरी बिगहा धान। तीन पसेरी जड़हन मान॥

सवा सेर बीघा साँवाँ मान। तिल्ली सरसों अँजुरी जान॥

बरैं कोदो सेर बोआओ। डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ॥

डेढ़ सेर बजरा बजरी साँवाँ। कोदौ काकुन सवैया बोवा॥

यहि विधि से जब बोवै किसान। दूना लाभ की खेती जान॥

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

http://www.manvipatrika.co.in

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)